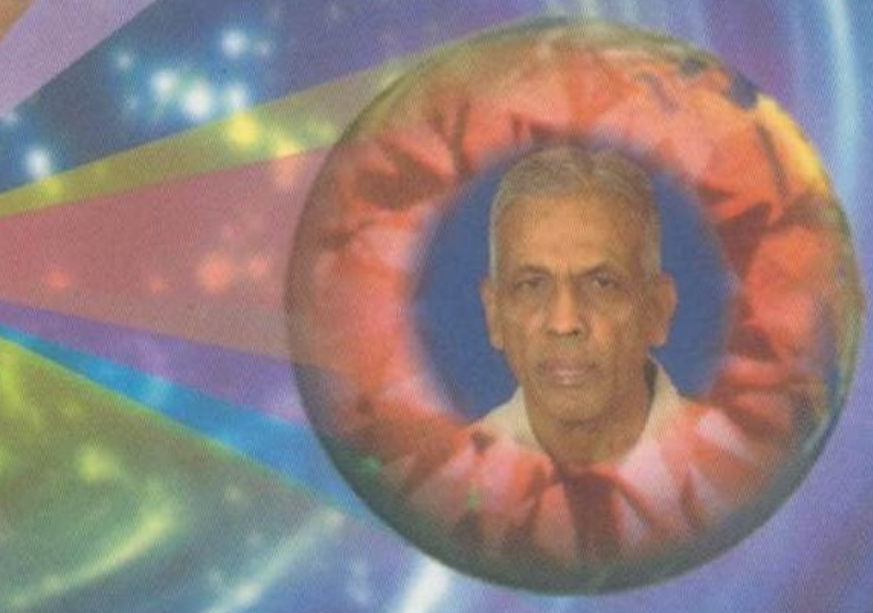
लेखक : कनुभाई टेलर



अनमोल माणिक



श्रीमान कनुभाई टेलर राष्ट्रपतिभवन में राष्ट्रपति श्री ऐ. पी. जे. अब्दुलकलामजी को साथ विकलांगो की समस्या के बारे में वार्तालाप करते हुए द्रश्यमान है।

प्रस्तावना

.... संसार महं पुरुष त्रिविध रसाल पनस समा॥
एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलह केवल लामही ।
एक कहहिं, कहहिं करहि अपर एक करहि कहत न बागही ॥
रामचरित मानस लंकाकांड छंद – दोहा – 9

अर्थात

[संसार में तीन प्रकार के पुरुष होते हैं – पाटल (गुलाब) आम और कटहल के समान। एक (पाटल) फूल देते हैं, एक (आम) फूल और फल दोनों देते हैं और एक (कटहल) में केवल फल ही लगते हैं। इसी प्रकार (पुरुषों में) एक कहते हैं (करते नहीं), दूसरे कहते और करते भी हैं और एक (तीसरे) केवल करते हैं पर वाणी से कहते नहीं।]

एक पाश्चात्य विद्वान ने कहा है कि किसी देश का इतिहास उसका दर्पण होता हैं। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की आत्मकथा या उसकी जीवनी उसके व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करती है। यही व्यक्तित्व उसके जीवन को परिभाषित करता है। एक वस्तुनिष्ठ जीवनी व्यक्ति की विकास यात्रा का चित्रण करते हुए उसके अदृश्य पहलूओं को उजागर करती है। विश्व में एक नहीं ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो ऐसे ग्रन्थों के माध्यम से इस बात को दर्शाते हैं कि अत्यन्त विपन्न अवस्था और विपरित परिस्थितियों के बावजूद अपने लक्ष्य के प्रति बुलन्द हौंसला रखने वाले और सतत् संघर्ष करने वाले व्यक्तियों ने नए इतिहास रचे हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि "लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो हर समय उसी का चिन्तन करो, उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहो"।

प्रस्तुत पुस्तक के मुख्य पात्र डॉ. एम. सी. नाहटा को वैसे तो मैं अनेक वर्षो से जानता रहा हूँ परन्तु पिछले 4–5 वर्षों से, जबसे मैंने केन्द्र शासन में पहले श्रम मंत्रालय और बाद में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय का दायित्व ग्रहण किया तब से मुझे उन्हें निकट से जानने के अनेक अवसर आते रहे हैं। वे इन मंत्रालयों की विभिन्न समितियों / संस्थाओं से प्रमुख रूप से जुड़े हुए हैं। मैं उनकी समर्पण की भावना और लगनशीलता से बहुत प्रभावित हूँ इसलिये मैंने इस पुस्तक को बड़े चाव से पढ़ा हैं।

बाल्यावस्था में अपनी माताजी की असमय मृत्यु और परिवार की आर्थिक कठिनाइयों से जूझते – जूझते कदम बढ़ाते हुए उच्च मेडिकल शिक्षा प्राप्त कर वे शासन के उच्च पदों पर पहुंचे और वहाँ गौरवशाली स्थान प्राप्त किए। जिस मोड़ पर खड़े हुए, उन्होंने अपना लक्ष्य पूरा करने में आशातीत सफलता प्राप्त की। इससे अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि शासकीय सेवा से निवृत्ति के बाद भी उन्होंने समाजसेवा का बीड़ा जारी रखा है, विशेषकर अन्धत्व निवारण, विकलांगों आदि की समस्याओं

के क्षेत्र में। एक ओर अन्य विषयों पर उन्होंने गहन चिन्तन किया है जो उनकी पुस्तक ''परिवर्तन की राहें'' के आलेखों में स्पष्ट झलकता हैं। परन्तु उन्होंने अपने लेखन कार्य से ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझी हैं। उन्होंने नेत्र चिकित्सा हेतु कई हजार नेत्र शिविर आयोजित किये हैं और इस दिशा में आधुनिक उपचार संबंधी विभिन्न इकाइयाँ स्थापित की हैं। अन्य प्रकार के विकलांगों की पीड़ा हल करने में भी वे रूचि लेते हैं जो उनके द्वारा मेरे मंत्रालय को प्रस्तुत विभिन्न प्रस्तावों / कार्यक्रमों में परिलक्षित हैं।

पुस्तक के लेखक के इस कथन से मैं पूर्णतया सहमत हूँ कि ''73 वर्षीय नौजवान पर न तो आयु का प्रभाव हावी हुआ है, न ही कोई अन्य बात का। आज भी उतने ही स्फूर्तिवान है जितने कि 43 वर्ष पूर्व थे''। शासकीय सेवा निवृत्ति के बाद बहुधा लोग सुविधा भोगी जीवन बिताने में गतिहीन हो जाते हैं परन्तु डॉ. नाहटा उन बिरले व्यक्तियों में से है जिनकी नियति में सतत् कर्मयोगी बने रहना ही लिखा है। [इस प्रसंग पर पंडित जवाहरलाल नहेरू की प्रिय सुप्रसिद्ध कविता ''प्रॉमिसेज टु कीप'' (राबर्ट फ्रास्ट रचित) का स्मरण आता है। इसका श्री हरिवंशराय बच्चन द्वारा अनुवाद यहाँ उद्धरित करना सुसंगत दिखता है।]

सघन गहन मन मोहन बन तरू मुझको आज बुलाते है
किन्तु किये जो वादे मैंने मुझे याद आ जाते हैं।
मुझे कहां आराम बदा यह मूक निमंत्रण छलना हैं,
अभी मुझे तो मीलों मुझको मीलों मुझको चलना है।

ऐसा प्रतीत होता है कि जाने – अनजाने डॉ. नाहटा ने इस कविता के सार तत्व को अपने जीवन में आत्मसात कर लिया है।

लेखक ने उनकी अनेक सेवाओं और उपलब्धियों का आंकलन बड़े विशद् ढंग से किया है जिनका इस संक्षिप्त प्रस्तावना में उल्लेख करना न आवश्यक है और न ही संभव। केवल इतना कहना पर्याप्त होगा कि डॉ. नाहटा समाज में अलग पहचान लेकर उभरे हैं जो मनसा और कर्मणा से तो क्रियाशील है परन्तु उनकी वाणी मूक रहती है। इस परिपेक्ष्य में पाठकगण स्वंय: समझ जाएगें कि आरंभ में मैनें तुलसीदासजी द्वारा पुरुषों के वर्गीकरण का क्यों वर्णन किया और उसमें डॉ. नाहटा का कौनसा स्थान हैं।

पुस्तक के लेखक को मैं धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने परिश्रम से इसकी सामग्री एकत्रित कर इसे प्रकाशन योग्य बनाया। आशा है यह प्रकाशन युवा पीढ़ी को मानव सेवा के कर्तव्य बोध को जागृत करने में सहायक होगा।

तन्मे मन: शिव संकल्प अस्तु

डॉ. सत्यनारायण जटिया

यह प्रयास क्यों?

प्रस्तुत पुस्तक को देखकर किसी के भी मस्तिष्क में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठ सकता है कि आखिर इस पुस्तक के विशेषकर मध्यप्रदेश के बाहर के निवासी द्वारा लिखने का औचित्य क्या है जबकि पुस्तक का मुख्य पात्र डॉ. एम. सी. नाहटा का मुख्य कार्यक्षेत्र मध्यप्रदेश रहा है।

इस प्रश्न के उत्तर में मेरा विनम्र निवेदन है कि सामाजिक जीवन में जितना महत्व उदात्त विचारों एवं सृजनात्मक कृत्यों का है उतना ही सबल प्रेरणा का। यदि प्रभावशाली विचार तथा निर्माणकारी कृत्य समाज के वर्तमान जीवन का निर्माण करते हैं तो स्फूर्तिदायक प्रेरणा समाज के भावी जीवन का आधार है। इस दृष्टि से किसी भी सुप्रसिद्ध समाजसेवी के विचारों तथा कार्यों का प्रचार उसके जीवनकाल में तो प्रभावशील रहता ही है परन्तु उससे भी अधिक उसका महत्व भावी पीढ़ी के लिए होता है। प्राय: देखा जाता है कि ऐसे व्यक्तियों का सम्मान उनके जीवनकाल में उतना नहीं हो पाता जितना होना चाहिए। यही कारण है कि उनके जीवन के कार्यकलापों को संकलित करने तथा उनका प्रसार करने की आवश्यकता रहती है। डॉ. नाहटा ऐसे ही व्यक्तियों की श्रेणी में आते हैं। इससे उनका कार्यक्षेत्र कुछ वर्षों में सीमित नहीं रह गया है वरन उन्होंने राज्य के बाहर भी समाजसेवा, विशेषकर विकलांगों के क्षेत्र में स्थान प्राप्त कर लिया है।

इस पुस्तक की पृष्ठभूमि दिलचस्प है। डॉ. नाहटा से मेरी प्रथम भेंट लगभग पांच वर्ष पूर्व हुई। प्रसंग था भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की एक समिति की बैठक का जिसमें डॉ. नाहटा ने कार्यसूचि पर जिस प्रभावशाली ढंग से अपने विचार और सुझाव प्रस्तुत किये वे मेरे लिए आकर्षण के केन्द्र बन गये। जैसे–जैसे मैंने उन्हें बाद की बैठकों में देखा, मेरा आकर्षण उनके प्रति श्रद्धा में परिवर्तित हो गया। उनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा हुई और मालुम हुआ कि उन्होंने एक चुनौतीपूर्ण और संघर्षमय जीवन बिताया है। ऐसी और अन्य जानकारी से इस पुस्तक का बीजारोपण हुआ। इस बीज को पल्लवित करने के लिए मैंने उनके परिवार और मित्रों से सहायता ली। उनसे यथेष्ट सामग्री मिली जिसे वर्तमान पुस्तक का रूप देने में डा. आर. सी. ओझा, सेवानिवृत्त प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष इंग्लिश विभाग इन्दौर क्रिश्चियन कॉलेज इन्दौर ने मुझे अकथनीय सहयोग दिया। मैं उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। उनके परिवार के सदस्यों तथा मित्रों की सहायता हेतु उन्हें भी धन्यवाद देता हूँ। मैं बिसीलीन टेक्सटाईल मील्स प्रा.ली. डायरेक्टर श्री राधाकिशन भगवानदास रूचंदानी तथा प्रोग्रेसिव प्रिन्टिंग प्रेस के श्री असगरभाई संचावाला का भी आभारी हूं जिन्होंने यह उत्कृष्ट कार्य किया है।

अन्त में माननीय डॉ. सत्यनारायणजी जटिया, मंत्री, भारत सरकार का भी ऋणी हूं जिन्होंने आमुख लिखकर मेरा उत्साह बढ़ाया है।

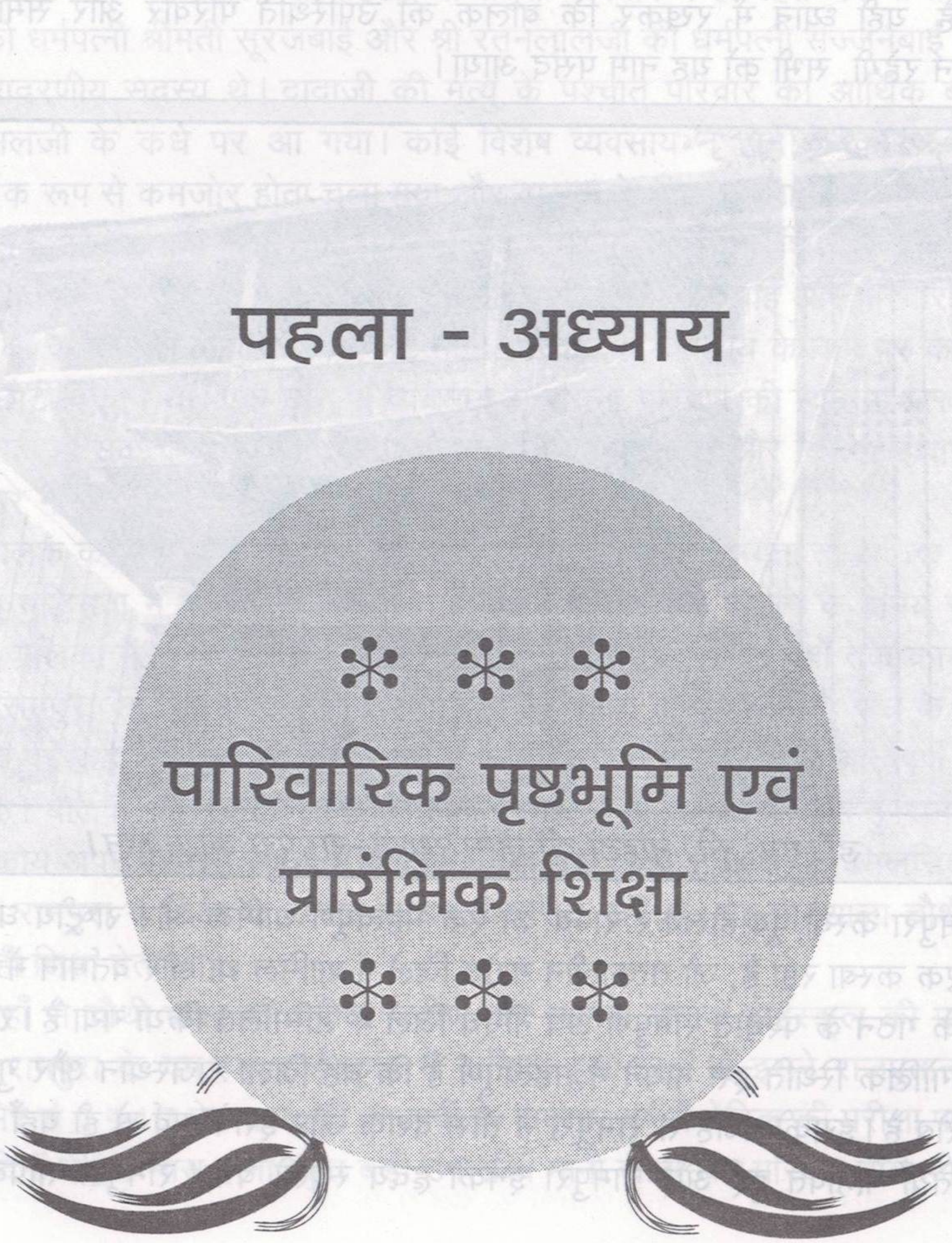
यदि इस विनम्र प्रयास में कोई त्रुटि हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूं। तथापि मैं आशा करता हूं कि युवा पीढ़ी डॉ. नाहटा के जीवन वृतांत से समाजसेवा के लिए प्रेरणा लेगी।

कनुभाई टेलर

अनुक्रमणिका

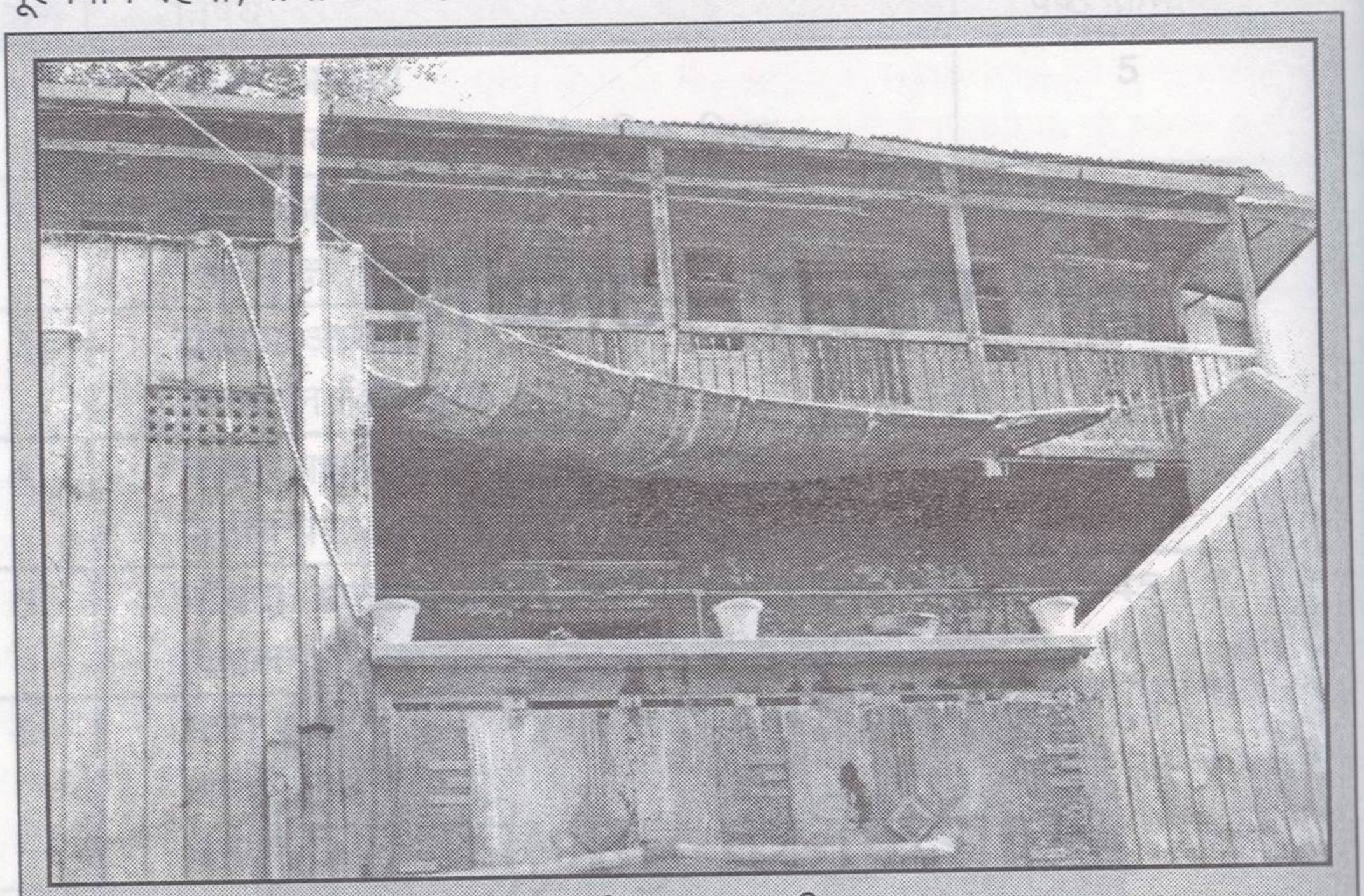
क्रम	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1	**पहला अध्याय** पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं प्रारंभिक शिक्षा	5
2	**दूसरा अध्याय** उच्च शिक्षा हेतु इन्दौर आगमन	13
3	**तीसरा अध्याय** निष्ठावान चिकित्सक व कर्मयोगी	23
4	**चौथा अध्याय** कर्तव्य परायणता के विविध आयाम	37
5	**पाँचवा अध्याय** विकलांगों के कल्याणार्थ समर्पित शख्सियत	45
6	**छटा अध्याय** अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति, अनेक पुरस्कार/सम्मान विजेता	61
7	**सातवां अध्याय** उपसंहार : एक अनमोल माणिक डो. नाहटा	66

पहला - अध्याय



पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं प्रारंभिक शिक्षा

रामपुरा के एक भद्र, परंपरावादी श्वेताम्बर जैन परिवार में श्री राजमल जी नाहटा के यहाँ 24 जुलाई 1931 तद्नुसार असाढ़ सुदी दशमी संवत 1988 को एक बालक का जन्म हुआ। बालक की दादी श्रीमती जड़ाव बाई ने सभी परिवारजनों व इष्ट मित्रों को आमंत्रित किया। उन दिनों स्वाभाविक रूप से ज्योतिष शास्त्र में स्थापित सामाजिक आस्था का दौर था, इसलिए बच्चे के नामकरण संस्कार हेतु पारिवारिक ज्योतिषी की सलाह ली गई। ज्योतिषी ने बताया कि बालक का जन्म सिंह लग्न में हुआ है। सिंह लग्न का स्वामी सूर्य होने से यह भी बताया कि बालक मेधावी व प्रतिभाशाली होगा और अनेक क्षेत्रों में यशस्वी रहेगा। यह जानकर माता श्रीमती बादाम बाई ने ईश्वर को कृतज्ञता ज्ञापित की। बालक का नाम ''माणकचंद'' रखा गया। माणक यानी 'रुबि' एक कीमती रत्न माना जाता है, यही ध्यान में रखकर कि बालक की उपस्थिति परिवार और समाज में मूल्यवान रहेगी, सभी को यह नाम पसंद आया।



डॉ. एम. सी. नाहटा की जन्म स्थली–रामपुरा का मकान।

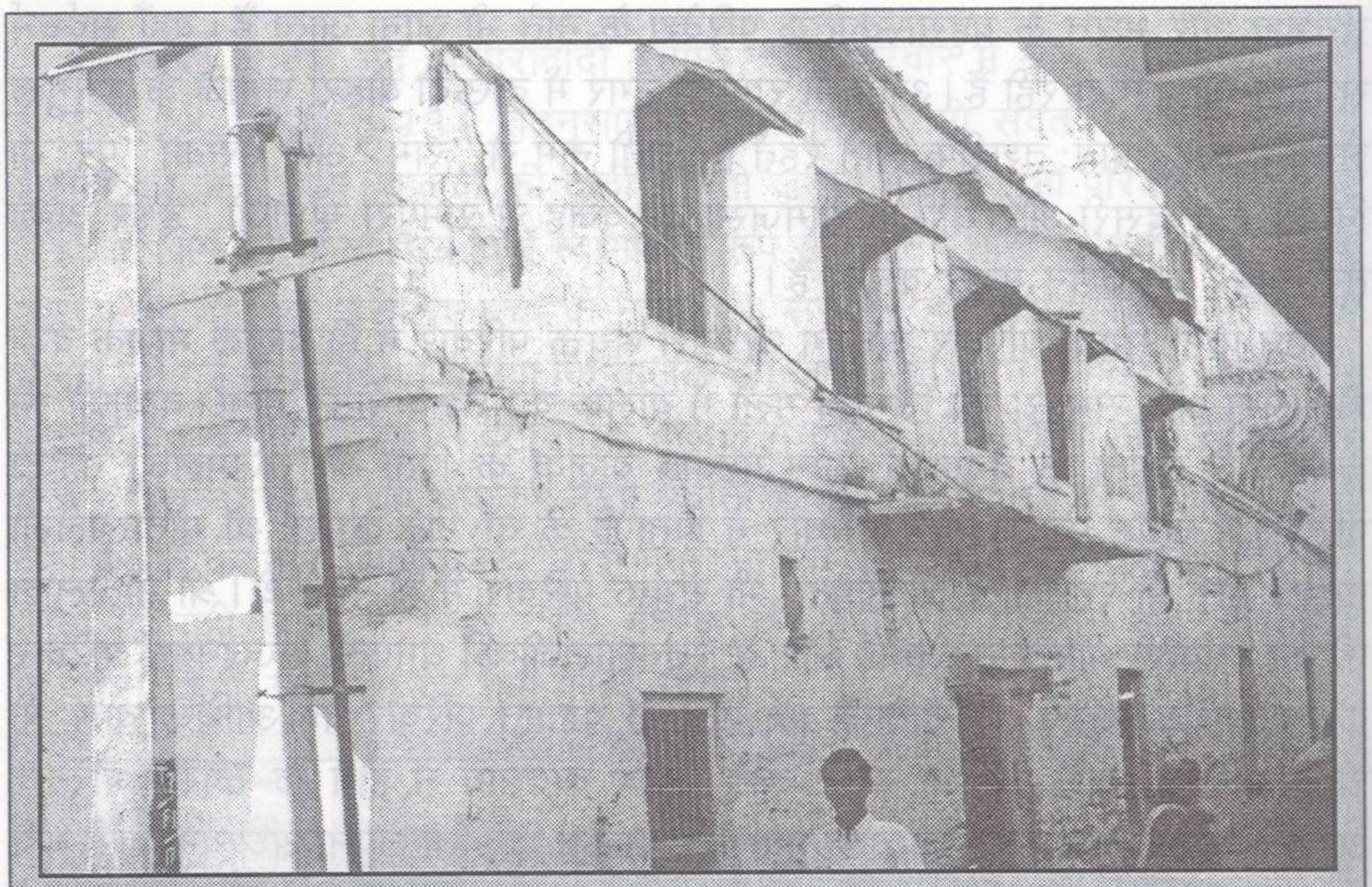
रामपुरा कस्बा पूर्व होलकर राज्य का एक महत्वपूर्ण धार्मिक और राष्ट्रीय धारा से जुड़ा एक कस्बा रहा है, जो तत्कालीन गरोठ जिले में शामिल था और वर्तमान में नीमच जिले के गठन के पश्चात् रामपुरा अब नीमच जिले में सम्मिलित किया गया है। रामपुरा की भौगोलिक स्थिति इस मायने में महत्वपूर्ण है कि यह जिला राजस्थान और गुजरात के करीब है। इसकी वजह से रामपुरा में तीस दशक और इसके पूर्व से ही यहाँ अनेक संस्कृतियाँ पल्लवित हुई और रामपुरा इनकी हृदय स्थली बना। रामपुरा सांप्रदायिक

सद्भाव और भारत के बहृसांस्कृतिक परिवेश के नाते भी जाना जाता हैं। यहाँ सर्वधर्म समभाव की परंपरा रही हैं। आज भी रामपुरा नगर में दाऊदी बोहरा समाज के धर्मगुरू सैयदना साहब प्राय: तशरीफ लाते रहते हैं। यानी नाम से ''राम'' और उसका ''पुर''या निवास और दूसरी ओर धार्मिक सामंजस्य की वजह से रामपुरा गाँधीजी ''ईश्वर अल्ला तेरो नाम'' का दर्शन मुखर करता हैं।

उन दिनों संयुक्त परिवार का युग था। इस संयुक्त परिवार में ही बालक माणक बड़ा होने लगा और रामपुरा की सिंगाड़ा गली में बालक का शैशव बीतने लगा। दादाजी श्री तेजमलजी नाहटा के देवलोक गमन पश्चात् बालक के पिता श्री राजमलजी नाहटा परिवार में जयेष्ठ पुत्र थे। वैसे परिवार में पिताजी के दो भाई क्रमश: श्री मोतीलालजी नाहटा और श्री रतनलाल जी नाहटा भी संयुक्त परिवार में ही रहते थे। श्री मोतीलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती सूरजबाई और श्री रतनलालजी की धर्मपत्नी सज्जनबाई परिवार के आदरणीय सदस्य थे। दादाजी की मृत्यु के पश्चात् परिवार का आर्थिक बोझ श्री राजमलजी के कंधे पर आ गया। कोई विशेष व्यवसाय न होने के कारण परिवार आर्थिक रूप से कमजोर होता चला गया और बालक के पिता अपना अध्ययन जारी नहीं रख सके और सातवीं कक्षा तक ही पढ़ाई कर पाए। महिलाओं की शिक्षा के बारे में गाँवों में स्थिति अच्छी नहीं थी, माता प्राथमिक शिक्षा भी पूर्ण नहीं कर पाई और परिवार के हित में शिक्षा के लिए संकल्प के साथ जुट गई। पारिवारिक व्यवसाय के नाम पर कपड़े की एक छोटी दुकान थी। एक छोटे से व्यवसाय से संयुक्त परिवार की न्यूनतम् जरूरतें भी पूरी नहीं हो सकती थी इसलिए आगे चलकर पेट्रोल पंप, बस और सिनेमा उद्योग में भी परिवार ने शिरकत की किन्तु अधिक सफलता नहीं मिली।

बालक के पिता श्री राजमलजी की औपचारिक शैक्षणिक योग्यता तो अधिक नहीं थी किन्तु बुद्धिमता में वो किसी से कम नहीं थे। अत: होलकर शासन के समय स्थानीय नगर पालिका में उपाध्यक्ष के पद पर मनोनीत किए गए और कई वर्षों तक कार्य किया तथा रामपुरा के विकास में सक्रिय रहे। होलकर राज्य कपड़ा व्यापारी संघ के अध्यक्ष के पद पर कई वर्षों तक रहे और राज्य में कपड़ा व्यापार को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बालक की स्कूल जाने योग्य आयु हुई तो प्रारंभिक शिक्षा हेतु रामपुरा के शासकीय अपर प्राइमरी स्कूल में दाखिल किया गया। यही से शिक्षा का सिलसिला शुरू हुआ। रामपुरा में शिक्षा के उन्नत साधन विकसित नहीं थे। यह पाठशाला चौथी कक्षा तक ही शिक्षा देती थी।

यहाँ से चौथी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण कर माणक बालक हाईस्कूल की पढ़ाई के लिये रामपुरा के एम.एस. हाईस्कूल में दाखिल हुआ जहॉ से इसने राजपुताना बोर्ड, अजमेर से 1947 के भारत की आजादी के यादगार वर्ष में मेट्रिक की परीक्षा पास की। उन दिनों मेट्रिक पास होना बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। परिवार वाले भी प्रसन्न



शिक्षा का प्रथम प्रयास यहाँ हुआ – प्राइमरी स्कूल रामपुरा।

थे कि माणकचंद ने एक बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है और परिवार का नाम रोशन किया।

हाईस्कूल की पढ़ाई के दौरान माणकचंद के जीवन में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुई। 1947 में हाईस्कूल परीक्षा पास करने के एक वर्ष पूर्व माताजी श्रीमती बादामबाई का 5 जून, 1946 को निधन हो गया। इससे बालक के जीवन में भावात्मक रिक्तता आई जिसका असर हमेशा रहा और आज तक इस रिक्तता का अनुभव हो रहा है। एक अन्य महत्वपूर्ण घटना हाईस्कूल के युग में 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेना हैं। जब महात्मा गाँधी ने देश में ''भारत छोड़ो'' का नारा दिया, तब रामपुरा भी इस आह्वान से अछूता नहीं रहा। किशोरावस्था में माणकचंद ने भी अनेक आन्दोलनों के जरिए राष्ट्रयज्ञों में प्रमुखता से भाग लिया। इसी समय तेरह वर्ष की आयु में रामपुरा में आयोजित होलकर राज्य प्रजामंडल के सम्मेलन में स्वयंसेवक के बतौर माणक ने प्रमुखता से भागीदारी की। उन दिनों राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन प्रजामंडल के ध्वज के अधीन गतिशील था। परिवार वालों विशेष रूप से उनके अग्रज श्री भँवरलाल जी ने भी माणकचंद की राष्ट्रीय भावनाओं को प्रोत्साहित किया। तद्नुसार प्रजा मंडल की गतिविधियों में उस समय का बालक तथा वर्तमान का चिकित्सक सक्रिय रहा, और प्रांतीय अध्यक्ष के साथ पार्टी ध्वज तले शोभायात्रा में भाग लिया। नाहटा परिवार में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने की परंपरा रही और माणकचंद के अग्रज स्वर्गीय श्री भँवरलाल जी नाहटा ने वकालत के साथ–साथ स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी ख्याति अर्जित की और विधायक

तथा सांसद के रूप में भी अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर अनेक जनसेवा के कार्य किए। अन्य क्षेत्रों में भी नाहटा परिवार लोकप्रिय रहा है। माणकचंद के दो छोटे भाई सर्वश्री प्रतापसिंह नाहटा और प्रकाश नाहटा वर्तमान में अमेरिका में इंजीनियर हैं और दो बहनें (स्व.) श्रीमती कमलादेवी वेद और श्रीमती विमला लोढ़ा सामाजिक कार्यों के लिए जानी जाती रही हैं।

माणकचंद ने हाईस्कूल की पढ़ाई के दौरान अनेक गतिविधियों में भाग लिया था। इससे किशोरावस्था में ही उनके कुशाग्र और बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने का प्रमाण मिलता हैं। साहित्यिक, सांस्कृतिक व खेलकूद सभी गतिविधियों में उन्होंने रूचि दर्शायी। उन दिनों क्रिकेट का चलन नहीं था। गाँवों में कबड्डी, खो–खो, फुटबॉल, वालीबॉल जैसे खेल ही लोकप्रिय थे। इन खेलों में अपने साथियों को नेतृत्व भी प्रदान किया।

स्कूलों में उन दिनों नाटकों का मंचन होता था। रामपुरा का हाईस्कूल इस क्षेत्र में प्रतिष्ठित माना जाता था। ऐसे अवसरों पर पुस्तकों से कंठस्थ काव्य पाठ की भी परंपरा थी। यह बालक भी ऐसे अवसरों पर भला पीछे कैसे रहता। इस कारण यह बालक छात्रों के बीच मेधावी छात्र के रूप में स्थापित हो गया। रामपुरा में साप्ताहिक पत्रिका के प्रकाशन की अनूठी परंपरा भी इन्होंने स्थापित की। इस पत्रिका की यह खूबी थी कि यह हस्तलिखित थी। इस पत्रिका के हस्तलेखन का कार्य भी इन्हीं के सुपुर्द था। जिले के खेलकूद में प्रतिनिधित्व के साथ–साथ, शालाओं की अन्य प्रतियोगीताओं और वाद–विवाद प्रतिस्पर्धाओं में भी माणकचंद ने खुलकर भाग लिया। रामपुरा में धार्मिक गतिविधियां भी अकसर हुआ करती थी जिसमें सभी धर्मों के आचार्यों के सारगर्भित प्रवचन हुआ करते थे। धार्मिक गतिविधियों को गतिशील बनाए रखने हेतु रामपुरा में जैन युवक संघ का गठन किया गया था। इस संघ के सर्वानुमति से अध्यक्ष चुने जाने का श्रेय भी माणकचंद को ही प्राप्त हुआ।

इस पारिवारिक परिवेश में माणक का बचपन बीता और प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण हुई। हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ ही परिवार के सामने दुविधा पूर्ण समय उपस्थित हुआ। यह निर्णय लेना कठिन हो गया कि माणकचंद को पारिवारिक व्यवसाय में मुखर किया जाए या उच्च शिक्षा के लिए अन्यत्र भेजा जाए। रामपुरा में तो उन दिनों उच्च शिक्षा के कोई साधन उपलब्ध नहीं थे, और परिवार की आर्थिक स्थिति भी संतोषजनक नहीं थी। अन्ततः परिजनों ने यह तय किया कि माणकचन्द को उच्च शिक्षा के लिए इन्दौर भेजा जाए। इसमें उनके अग्रज जो कि एक सफल वकील बनने की राह पर थे, ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

माणकचंद वैसे तो पिता के निर्देशानुसार काम करते थे, परन्तु उनके पिता ने उन्हें उनके अग्रज श्री भँवरलाल जी नाहटा के अंतरंग स्नेह के तहत पल्लवित होने की आकांक्षा जाहिर की थी। तद्नुसार माणकचंद अपने अग्रज में पितृ–तुल्य आशीष तथा

माता की कमी को काफी हद तक उनकी भाभी चन्द्रकान्ताजी, जिन्हें सभी छोटे–बड़े भोजाईजी कहते हैं, जिनके मातृत्व स्नेह व देखरेख में जीवन में रस की धारा प्रवाहित की और मार्गदर्शन को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ते गए। इसी संदर्भ में श्री भँवरलाल जी नाहटा के बारे में थोड़ी विस्तृत जानकारी इसलिए आवश्यक है कि वे माणकचंद के प्रेरणा स्त्रोत, हित–चिन्तक, मार्गदर्शक, सभी कुछ रहे। श्री भँवरलाल जी नाहटा के बारे में जानने का एक और लाभ यह होगा कि हम उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को अधिक संजीदगी के साथ समझ पाएंगे जिसमें माणकचंद ने अपने प्रारंभिक जीवन से उच्च शिक्षा और आगे का जीवनयापन भी किया।

माणकचंद के अग्रज श्री भँवरलाल नाहटा का जन्म 20 नवम्बर 1922 को हुआ। उन्होंने भी माणकचंद की तरह प्रारंभिक शिक्षा रामपुरा में ही पूर्ण की। यह भी एक संयोग ही कहा जाएगा कि श्री भँवरलाल जी नाहटा रामपुरा से इन्दौर होलकर कॉलेज में पढ़ाई करने आए और बी. कॉम. तथा एम.ए. की परीक्षा पास की। यही आगे चलकर माणकचंद ने भी अपनी पढ़ाई की थी। यह तो दैविक संयोग ही कहा जाएगा कि परिवार के चारों पुत्रों की उच्च शिक्षा होलकर कॉलेज में हुई। श्री भँवरलाल जी ने इन्दौर से ही एल.एल.बी. की परीक्षा पास की और बाद में कुछ दिनों वे इन्दौर होलकर कॉलेज में अर्थशास्त्र विषय में शिक्षक भी रहे थे। होलकर राज्य के तत्कालीन शिक्षा मंत्री से भी उनके स्नेहिल संबंध रहे तथा उन्होंने अपने गृहनगर रामपुरा में कन्या विद्यालय तथा महाविद्यालय की स्थापना की पुरजोर माँग की जो मानी भी गई और वहाँ महाविद्यालय स्थापित हुआ। गाँधीजी ने 1942 में जब भारत छोड़ो का आह्वान किया तब ब्रिटिश शासन के विरुद्ध वे इस आन्दोलन में कूद पड़े और देश जागरण के कार्य में जुटे। 1942 के आन्दोलन में श्री भँवरलाल जी नाहटा की सक्रिय भागीदारी का प्रमाण इस तथ्य से मिल जाता है कि अंग्रेजी शासन के विरुद्ध पर्चे बॉटने के अपराध में वे गिरफ्तार किए गए और सेन्ट्रल जेल में दो माह 18 दिन का कारावास भोगा। 1945 में श्री नाहटा ने नौकरी छोड़कर स्थायी तौर पर वकालत पेशे को अपना लिया। वकालत उन्होंने तत्कालीन होलकर राज्य के जिला मुख्यालय गरोठ से प्रारंभ की तथा मध्यभारत प्रांत के गठन के बाद नवगठित मन्दसौर जिले के मुख्यालय मंदसौर चले गए।

श्री भँवरलाल जी अब पूरी तरह सामाजिक सेवा में जुट गए। म. प्र. के गठन के पश्चात् जब नवगठित मध्यप्रदेश राज्य के पहले विधानसभा चुनाव हुए तब वे राजनीति में सक्रिय हो उठे। वे सीतामऊ से विधानसभा चुनाव जीते और 1957 से 1962 तक उन्होंने अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। वे सहकारिता के माध्यम से कृषकों के लिए एक नई क्रान्ति लाना चाहते थे और इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण पदों पर रहे और जिले में चम्बल के पानी का उपयोग कर खेती में सिंचाई के नए आयाम स्थापित किए। वकील के नाते भी वे अपनी सेवाएं देते रहे और जिले के एक अन्य नगर भानपुरा में महाविद्यालय

की स्थापना की। कोई चार दशकों तक मंदसौर अंचल की राजनीति में सक्रिय भूमिका अदा कि, कुशल कानूनविद और पीपुल्स रिप्रेजन्टेशन एक्ट तथा चुनाव याचिका – विशेषज्ञ के नाते भी ख्याति प्राप्त की और देश में सर्वाधिक चुनाव याचिकाओं में पैरवी करने का गौरव भी उन्हें प्राप्त हुआ। उन्होंने इंदिराजी की चुनाव याचिका के सलाहकार के रूप में भी काम किया था।

विधानसभा में रहने के पश्चात् श्री भँवरलालजी नाहटा राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय हुए तथा सन 1980 में मन्दसौर से लोकसभा के लिये चुने गये। सांसद बनने के बाद स्टेडियम, सीमेंटनिगम कारखानें का विस्तार, कोटा से नीमच तक बड़ी रेल लाईन, को–एक्सल एक्सचेन्ज आदि बड़ी तथा ढेरों लघु योजनाओं को साकार रूप देने में जुटे रहे। रासायनिक उर्वरक कारखाने के लिए उन्होंने निजी स्तर पर उच्चस्तरीय कार्य किए। इंका सांसद, म.प्र. सांसद मंच के संयोजक के नाते उन्होंने अनेक संगठनात्मक काम किए। तत्कालीन लोकसभा के प्रथम दस सदस्यों में उनका नाम प्रमुखता से लिया जाता रहा। वे हृदय की शल्य चिकित्सा के लिए अमेरिका के ह्युस्टन शल्य केन्द्र गए जहॉ 6 अक्टूम्बर, 1983 को उनका निधन हुआ। उनकी पार्थिव देह विमान द्वारा दिल्ली लाई गई जहाँ केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाशचन्द सेठी ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उन्हें परिवारवालों के सुपुर्द किया। उदयपुर से मंदसौर तक जब सड़क मार्ग से उन्हें लाया जा रहा था तब हजारों लोगों ने सड़क के दोनों ओर खड़े होकर श्रद्धांजलि स्वरूप पुष्प अर्पण किए व ऐसा मेला तो आजकाल के जीवंत शिखर नेताओं के आगमन पर भी नहीं नजर आता है ऐसा जन समुदाय एकत्र हुआ। आज भी सैकड़ों घरों में उनके चित्र के आगे अगरबत्ती जलाई जाती हैं। नईदुनिया, इन्दौर ने 11 अक्टूम्बर, 1983 को श्रद्धांजलि में कहॉ, ''लोकसभा में जाते ही अपनी सक्रियता, जिन्दादिली और अध्यनशिलता की बदौलत उन्होंने अपना स्थान बना लिया था। खासकर ऊर्जा के विषय में उनकी टिप्पणियों और राय को सभी लोग गंभीरता से लेते थे''।

परिवार :– परिवार के ऐसे अग्रज के अनुज डॉ. एम. सी. नाहटा के नाम से लोकप्रिय चिकित्सक का विवाह 22 जनवरी, 1957 को रतलाम के सामान्य किन्तु शिक्षित तथा संस्कारित छोटे परिवार में हुआ। पत्नी प्रेमकुमारी के पिताजी एक शिक्षक थे, माताजी अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति की थी, एक बड़ी बहन तथा इंजीनियर भाई थे। इस दम्पत्ति को पहली संतान एक पुत्री के रूप में 15 दिसम्बर, 1958 को प्राप्त हुई जो वर्तमान में एक कुशल स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉ. मुक्ता जैन के नाम से जनसेवा के जरिए प्रसिद्धि पा रही हैं। डॉ. नाहटा के दामाद हेमन्त जैन अत्यधिक कुशल तथा लोकप्रिय नवशिशुरोग व शिशुरोग विशेषज्ञ हैं जो कि स्थानीय नेहरू बाल चिकित्सा महाविद्यालय में एसोसिएट् प्रोफेसर के पद पर आसीन हैं।

डॉ. नाहटा की दूसरी संतान 7 मई, 1962 को जन्में श्री अतुल नाहटा, जो वर्तमान

में एक कुशल इंजीनियर तथा उद्योगपति हैं एवं ग्रेनाइट स्टोन के उद्योग में प्रदेश में एक प्रतिष्ठित नाम हैं। श्री अतुल नाहटा अपने समय के प्रदेश के श्रेष्ठ टेबल टेनिस खिलाड़ी के रूप में जाने जाते थे और उन्होंने प्रदेश का कई बार प्रतिनिधित्व भी किया। पुत्रवधु श्रीमती जयश्री नाहटा एक कुशल गृहणी तथा पारिवारिक व्यवसाय में परिवार का हाथ बटाती हैं। पुत्र तथा पुत्री दोनों की तीन–तीन संतान है – इस प्रकार दादा–दादी तथा नाना–नानी एक भरे – पूरे परिवार के बीच भाव विभोर हैं।

डॉ. नाहटा की पत्नी डॉ. प्रेमकुमारी नाहटा की लगभग सारी शिक्षा विवाह के बाद ही हुई। उन्होंने एम. ए. अंग्रेजी विषय में मेरिट में स्थान बनाकर पास की, उसके पश्चात अंग्रेजी में पी.एच.डी. की। श्रीमती नाहटा अंग्रेजी में शिक्षक थी और लगभग 35 वर्षों तक शिक्षण – प्रशिक्षण का कार्य किया और अन्त में शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इन्दौर से प्रोफेसर के पद से 3 वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त हुई। पढ़ने – लिखने में अत्यधिक रूचि के कारण वर्तमान में एक अंग्रेजी समाचार पत्र फ्री प्रेस में नियमित रूप से एक कालम लिख रही हैं।

श्रीमती नाहटा भी सामाजिक कार्यों में अत्यधिक सक्रिय हैं। आप इनरव्हील क्लब की दो बार अध्यक्ष रही तथा डिस्ट्रीक्ट की चेयरमेन भी रही हैं। आपने कई बार विदेश भ्रमण किया है, वहाँ महिलाओं के बीच (डॉ.) श्रीमती नाहटा ने भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण पैदा किया हैं। ■

दूसरा - अध्याय

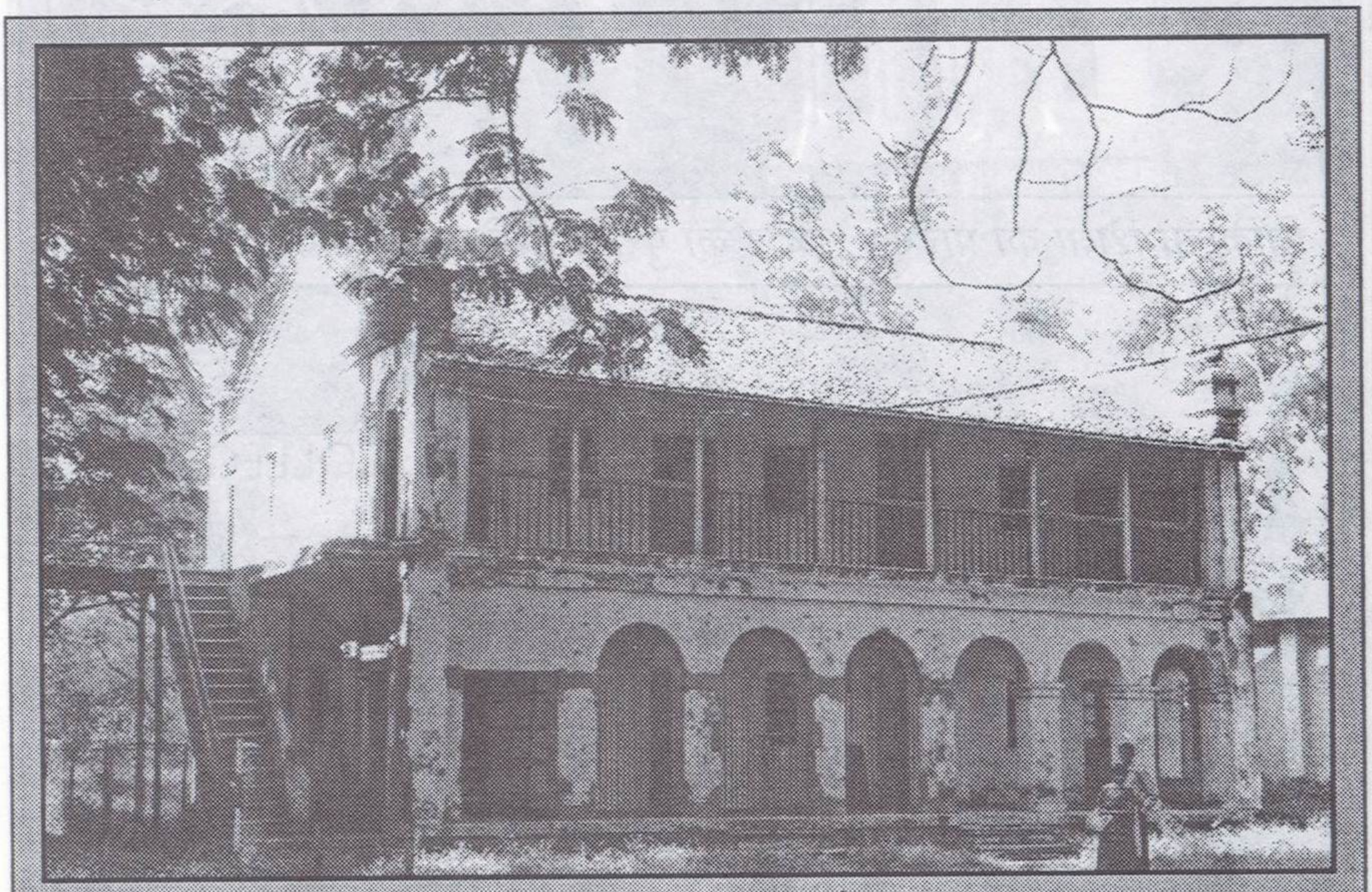


माणकचंद के परिजनों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद परिवार ने यह निर्णय लिया कि उसकी शिक्षा अबाध रखी जानी चाहिए। इसी के साथ एक और समस्या सामने थीं। यदि आगे की शिक्षा जारी रखनी है, तो रामपुरा छोड़ना पड़ेगा क्योकिं वहाँ दसवीं कक्षा के आगे पढ़ने की कोई सुविधा नहीं थी और उस जमाने में तुरंत ही शिक्षा के साधन विकसित होने की भी कोई उम्मीद नहीं थी। रामपुरा के इर्द–गिर्द भी उच्च शिक्षा के लिए कोई विकसित केन्द्र नहीं था इसलिए यहीं निर्णय लिया गया कि माणकचंद को उच्च शिक्षा हेतु इन्दौर भेजा जाए। रामपुरा होलकर राज्य के अधीन शासित था और होलकर राज्य का शिखर नगर होने की वजह से इन्दौर चिरपरिचित शहर था। परिजन किशोर बालक को अकेले भेजने के बारे में संवेदनशील थे कि किस तरह वह स्वयं को संभालकर अपनी शिक्षा जारी रखेगा। संयोग से उन दिनों माणकचंद के सगे मामा श्री सूरजमलजी चौधरी इन्दौर में ही रहते थे। उनकी उपस्थिति मात्र ने परिवार वालों के मन में एक अजीब सा विश्वास संचारित कर दिया। फिर दृढ़ संकल्प के साथ माणकचंद इन्दौर आ गए। तथा 1947 के खुशनुमा साल में इन्दौर के तत्कालीन होलकर महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त कर लिया। यही होलकर महाविद्यालय कालान्तर में और आज होलकर विज्ञान महाविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है और स्वशासित महाविद्यालय का दर्जा भी हासिल कर चुका है। होलकर महाविद्यालय उन दिनों भी सम्पूर्ण मध्यभारत में प्रतिष्ठित अकादमिक संस्था के रूप में स्थापित था।



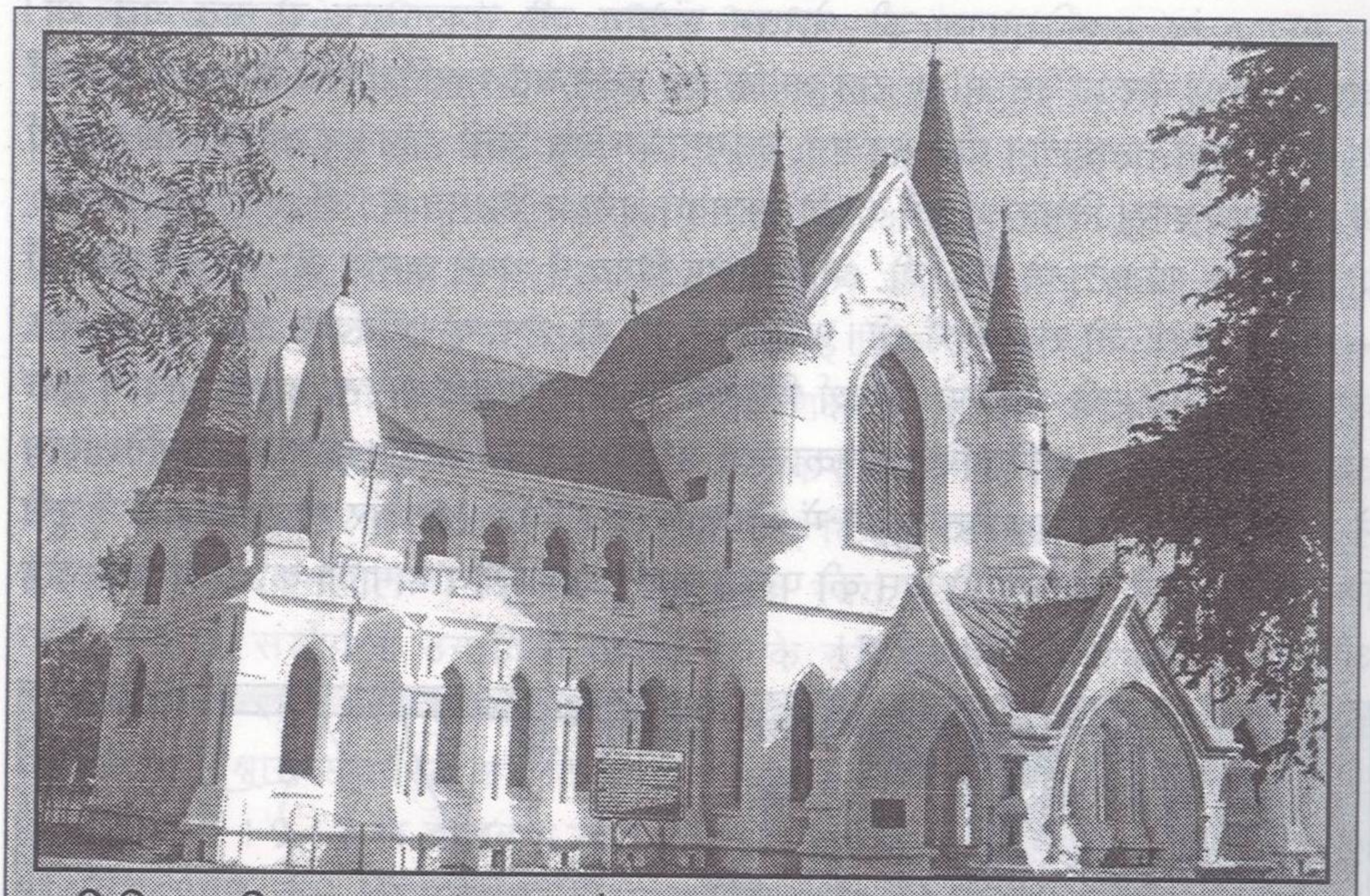
उच्च शिक्षा के आयाम – होलकर महाविद्यालय इंदौर।

माणकचंद महाविद्यालय की श्रेष्ठतम संकाय की उपलब्धता से गद्–गद् था। वह स्वयं को गौरवान्वित समझ रहा था कि वह इतने बढ़े महाविद्यालय का छात्र हैं। वहाँ के जाने–माने तत्कालीन प्रोफेसर एन. पद्मनाथन उन दिनों होलकर कॉलेज के प्राचार्य थे। रसायन शास्त्र विभाग में डॉ. वा. वि. भागवत धुरंधर शिक्षक थे। डॉ. एस. व्ही. चितले, प्रो. बी. एस. गोकटे, प्रो. एम. बी. आंटिया हर विषय में अपने जमाने की श्रेष्ठतम् हस्तियाँ – महाविद्यालय की संकाय में थी। अंग्रेजी में प्रो. डी. एम. बोरगॉवकर और प्रो. पी. सी. जोशी जैसे महारथी थे। ऐसे आदर्श शिक्षकों से शिक्षा ग्रहण करना अपने आप में एक अहम् अनुभव था। पारिवारिक संस्कार तो उसकी धरोहर थे ही। होलकर महाविद्यालय ने उन संस्कारों को पल्लवित करने में योगदान दिया। वैसे होलकर महाविद्यालय में पूरी शिक्षा होस्टल में रह कर ही प्राप्त की परन्तु अपने आदरणीय मामाजी का अत्यधिक स्नेह और वरद् हस्त उसके साथ रहा।

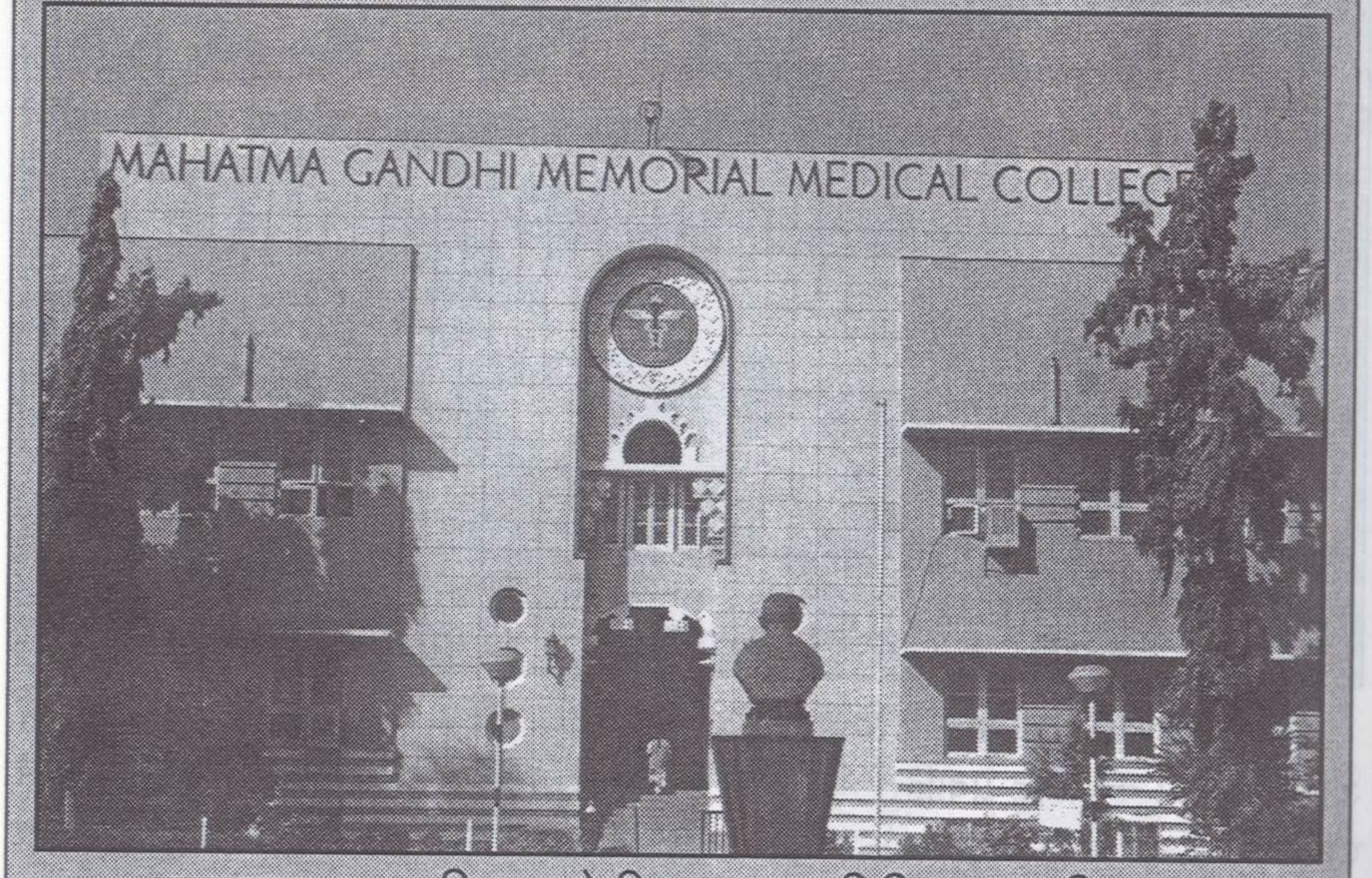


होलकर कॉलेज का छात्रावास – जो अपना घर बना।

सीमित साधन, आर्थिक कठिनाई और उच्च शिक्षा तीनों का संगम इनके जीवन में अविरल धारा की तरह प्रवाहित होता रहा। होलकर कॉलेज से 1949 में बारहवीं की परीक्षा पास की। उन दिनों बारहवीं के बाद चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश मिल जाता था। तब माणकचंद डॉ. माणकचंद नाहटा बनने की प्रथम डगर पर चल पड़े और एम. बी. बी. एस. के प्रथम वर्ष में प्रवेश पा गए।



चिकित्सा शिक्षा का प्रारंभ – इंदौर का पुराना चिकित्सा महाविद्यालय भवन।



भव्यता का स्थान विस्तार ने किया – नया चिकित्सा महाविद्यालय।

माणकचंद के जीवन में ये बदलाव के महत्वपूर्ण क्षण थे। एक तो होलकर कॉलेज से शिक्षा पूरी हो चुकी थी और वहाँ की स्मृतियाँ उसके मानस पटल पर अंकित थी और दूसरी वह अब चिकित्सीय जगत् की देहलीज पर खड़ा था। निश्चित ही कठिनाइयों का

दौर था। होलकर कॉलेज के होस्टल से बिदा लेकर अब मेडिकल कॉलेज के होस्टल में दाखिल हो गया। प्रारंभ से ही चिकित्सा के विशाल संसार के प्रति माणक जिज्ञासाशील था, परन्तु नेत्र रोगों के बारे में उसके अंतरमन में विशिष्ट जिज्ञासा थी। नेत्र रोगियों के बारे में ज्यादा संवेदनशील था और नेत्रविहीनों को देखकर उसके मन में करूणा जागृत हो जाती थी।

1955 में चिकित्सा महाविद्यालय से एम. बी. बी. एस. की उपाधि प्राप्त कर डॉक्टर माणकचंद नाहटा तो बन गए, परन्तु विशेषज्ञ बनने की आकांक्षा अभी पूरी नहीं हुई। इस शिक्षा के दौरान डॉ. नाहटा टेबल टेनिस, बेडमिन्टन, वॉलीबाल, ब्रिज आदि अनेक खेलों में विशेष रूचि लेते थे। उनके चरित्र में बहुमुखी प्रतिभा दिखाई देती थी। शिक्षक भी उनके कार्य, अनुशासन व लगनशीलता से प्रभावित थे।



चिकित्सा महाविद्यालय के प्राचार्य के साथ सभी टीम के कसानों के साथ डॉ. नाहटा।

शनैः शनै डॉ. माणकचंद नाहटा को नियति उनके लक्ष्य की ओर ले गई जब इन्दौर के महाराजा यशवंतराव हॉस्पिटल के नेत्र विभाग में उन्होंने हाउस सर्जन तथा डिमांस्ट्रेटर का पदभार संभाला। उन्हें इसी क्षण का इंतजार था।

वे प्रत्येक मरीज का बारीकी से जॉच कर उपचार करते और मरीज से उनका एक निजी रिश्ता बनाने में सफल हो जाते थे। चार वर्षों तक डॉ. नाहटा ने इन पदों पर काम किया और उच्च दक्षता स्थापित की। चार वर्षों के कार्यकाल के पश्चात् डॉ. नाहटा का 1959 में भोपाल के गॉधी चिकित्सा महाविद्यालय में तबादला हो गया। भोपाल में उन्होंने नेत्र विभाग में रजिस्ट्रार का पद्भार ग्रहण किया। इस पद पर रहकर डॉ. नाहटा

ने न सिर्फ नेत्र रोगियों के समुचित उपचार व देखरेख की व्यवस्था की बल्कि अपने कार्य में उच्च प्रशासकीय दक्षता और अनुशासन की स्थापना की जो किसी भी संस्था की सफलता के लिए अनिवार्य हैं।

डॉ. माणकचंद नाहटा का भोपाल गॉधी मेडिकल कॉलेज में लगभग एक दशक की उपस्थिति ने उन्हें वहॉ सर्वाधिक लोकप्रिय नेत्र चिकित्सक के रूप में स्थापित कर दिया। इसी महाविद्यालय में रहते उन्हें पदोन्नतियां भी मिली। रजिस्ट्रार के पद पर सफलतापूर्वक काम करने के पश्चात् डॉ. नाहटा नेत्र विभाग में व्याख्याता के पद पर पदोन्नत हुए। काम करने की असीम क्षमता और मरीजों के प्रति अन्तर्निहित सद्भावना ने उनके लिए काम के नए क्षितीज उपस्थित कर दिए। डॉ. नाहटा कुछ ही समय पश्चात् यहीं पर नेत्र विभाग में रीडर बने और उसके पश्चात् नेत्र विभाग के स्थानापन्न

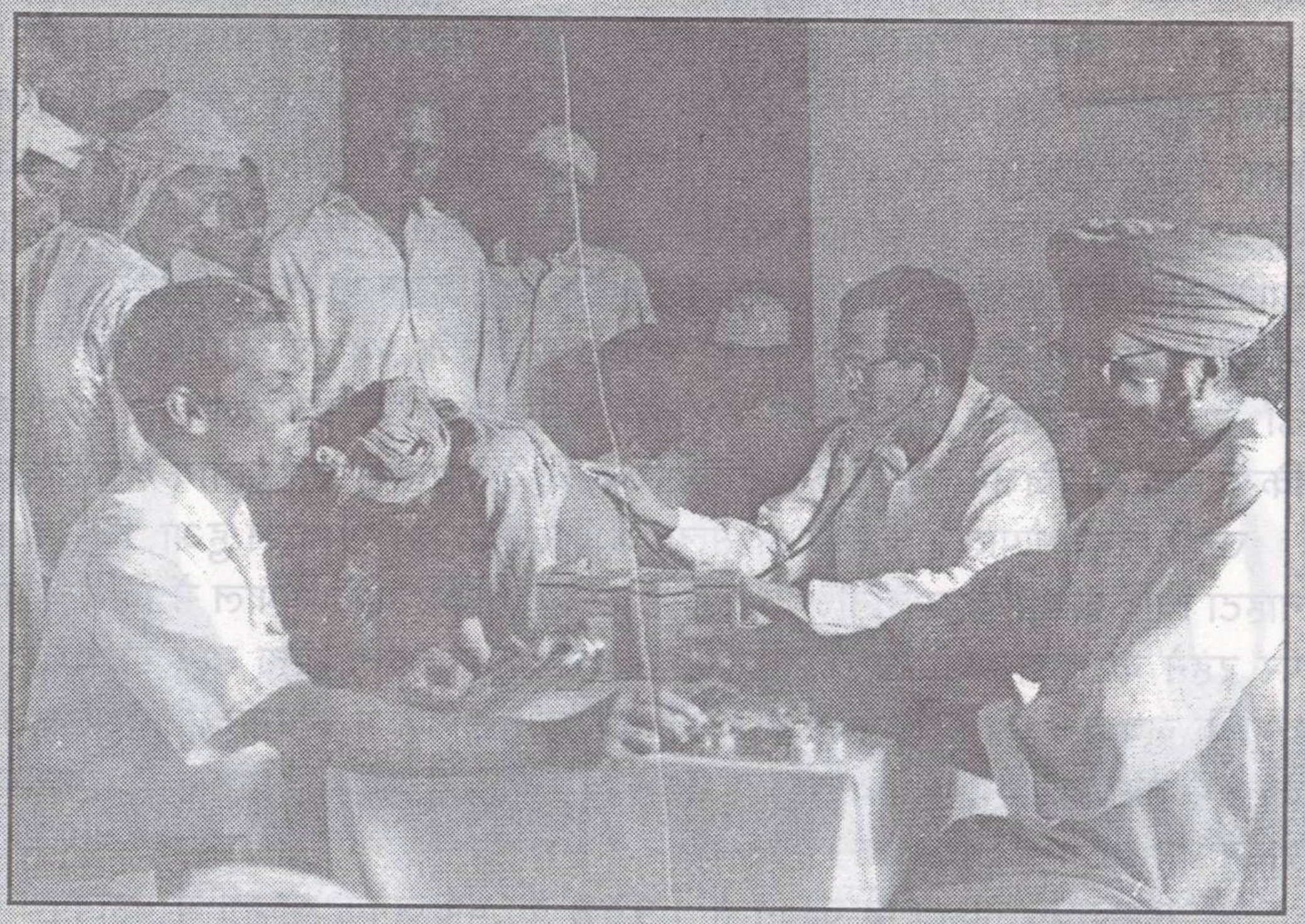


सात मंजिला नाम से प्रसिद्ध म. य. चिकित्सालय जहाँ सर्वोच्च शिखर पर है डॉ. नाहटा का नेत्र विभाग।

विभागाध्यक्ष के बतौर काम करने का अवसर भी मिला। गॉधी चिकित्सा महाविद्यालय में पदस्थापना के वर्षों में नेत्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संतोखसिंग के सम्पर्क में आए जो शनैः शनै आत्मीयता में बदल गई। डॉ. नाहटा संतोखसिंग की कार्यकुशलता, लगनशीलता, ईमानदारी तथा शल्य चिकित्सा से अत्यधिक प्रभावित थे और प्रत्येक अवसर पर उनसे मार्गदर्शन तथा सहयोग प्राप्त करते थे। संबंधों में इतनी प्रगाढ़ता थी कि आज भी डॉ. नाहटा उन्हें मिलते रहते है और भावुक होकर अपने चिकित्सीय जीवन का श्रेय उन्हें ही देते हैं। अपनी ओर से डॉ. नाहटा ने उन्हें हमेशा आदर दिया और आदर्श भी माना।



डॉ. नाहटा अपने आदर्श व्यक्तित्व डॉ. संतोखसिंग के साथ।



निदान शिविरों की शृंखला का प्रारंभ – मिसरोद गाँव में डॉ. नाहटा एवं डॉ. संतोखसिंग।

अथक्, अविचलित रहकर निरन्तर परिश्रम करने की शुरूआत तो पता नहीं कहॉ से, कितने वर्षों पूर्व हो गई थी किन्तु भोपाल आकर सफलताओं का दौर प्रारंभ हुआ। प्रदेश की राजधानी में जितने राजनेताओं में वे लोकप्रिय थे अपनी सुलभ – उपलब्धता के कारण उतने ही चाहे जाते थे, वरिष्ठ अधिकारी वर्ग में उनकी लोकप्रियता, दक्ष परीक्षण, वैज्ञानिक सोच व सधे हाथों द्वारा शल्य चिकित्सा का परिणाम था। इस दौरान कई मंत्रियों व उच्च पदस्थ व्यक्तियों से व्यक्तिगत संबंध बने जैसे श्री सुन्दर लालजी पटवा, श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा, श्री परमानन्दभाई पटेल, स्व. श्री तखतमलजी जैन, श्री जगमोहन दास, श्री वसंतराव उईके, श्री अजीज कुरैशी, श्री नरसिंहराव दीक्षित, श्री यमुनाप्रसादजी शास्त्री जिनके परिवारजनों के ये प्रिय नेत्र चिकित्सक थे। स्व. श्री कुशाभाऊ ठाकरे से उनके अत्यधिक स्नेहिल संबंध लगभग 50 वर्षों से अधिक समय के लिये रहे। यही इन दस वर्षों ने दिए कुछ ऐसे मित्र जिनसे या जिनके परिवार से आज भी जीवंत सम्पर्क है – स्वर्गीय मिश्रीलालजी गंगवाल के सुपुत्र स्व. श्री विमलजी, श्री देवीलालजी बापना, श्री भगवतसिंह लालानी जो सामाजिक प्रतिष्ठा, अपनापन, आदर–सत्कार भोपालवासियों ने उन्हें दिया वह अविस्मरणीय हैं। हालांकि आर्थिक रूप से अभी भी सम्पन्न नहीं थे और नगर सेवा बसों से प्रारम्भिक दिनों में यात्रा की किन्तु अन्य स्तरों पर भोपाल से वह सब मिला जो विरले ही लोगों को मिलता हैं।

अब डॉ. नाहटा का कार्यक्षेत्र वृहद हो गया और इसी के साथ जिम्मेदारियों का भी विस्तार हुआ। शल्य क्रिया, नेत्र परीक्षण और अपने कार्य से जुड़े कर्तव्य के साथ–साथ वे अब शोध के प्रति अधिक सजग हो उठे। अपने कनिष्ठ साथियों में भी उन्होंने शोध प्रवृत्ति व संवाद को जागृत किया। वे अखिल भारतीय स्तर के संगठनों से जुड़े ताकि शोध का आदान–प्रदान हो सकें। उन्हीं दिनों इंडियन मेडिकल एसोसीएशन की भोपाल शाखा के चुनाव हुए जिसमें डॉ. नाहटा सचिव के पद पर निर्वाचित किए गए। डॉ. नाहटा के प्रयासों से 1963–64 में एक राज्यस्तरीय अधिवेशन का आयोजन किया गया था जिसमें उन्होंने संगठन सचिव की हैसियत से उल्लेखनीय कार्य किया।

उन्हीं दिनों भोपाल में टेलिफोन सलाहकार समिति का भी गठन हुआ, जिसमें डॉ. नाहटा चिकित्सकों के प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत किए गए। भोपाल में विभिन्न पदों पर रहने के दौरान डॉ. नाहटा का पूरे मध्यप्रदेश में जाना माना नाम हो चुका था क्योंकि जब वे 1959 में गॉधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल में स्थानान्तरित हुए उसके लगभग तीन वर्ष पूर्व 1 नवम्बर, 1956 को चार राज्यों के विलय से मध्यप्रदेश राज्य का गठन हो चुका था।

डॉ. माणकचंद नाहटा के जीवन में 1968 का वर्ष अनेक मायनों में महत्वपूर्ण है। इसी वर्ष न सिर्फ डॉ. नाहटा इन्दौर मेडिकल कॉलेज वापस लौटे, परन्तु अपनी मूल

कर्मभूमि व मातृ संस्था में प्रोफेसर के पद पर पदोन्नत होकर यहाँ आना उनके जीवन का गौरवमय क्षण रहा है। वैसे भोपाल में पद स्थापना के दौरान इन्दौर चिकित्सा महाविद्यालय से ही उन्होंने नेत्र विभाग में एम. एस. की उपाधि अर्जित की थी और यहीं से डी.ओ.एम.एस. (डिप्लोमा इन ऑप्थेल्मीक मेडिसिन एंड सर्जरी) की उपाधि भी प्राप्त की थी। असल में डॉ. नाहटा का इंदौर चिकित्सा महाविद्यालय से आजीवन, अविरल रिश्ता रहा।

पुनः इंदौर आगमन और पदस्थापना के पश्चात् डॉ. नाहटा का कार्यक्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय जगत तक विस्तृत होने लगा। इसमें सबसे उल्लेखनीय क्षण डॉ. नाहटा के जीवन में तब आया जब उनका कोलंबो योजना के अन्तर्गत चयन किया गया। इसके तहत् विशेष अध्ययन हेतु रेटिनल शल्य क्रिया में उच्च शोध के लिए वे लंदन स्थित इंग्लैड के विश्व विख्यात मूरफील्ड नेत्र चिकित्सालय में एक वर्ष रहे और अपने विषय का गूढ़ अध्ययन कर वहाँ शोध पत्र लिखे।

इंग्लैंड से स्वदेश लौटने के पश्चात् डॉ. नाहटा ने एम. वाय. अस्पताल के नेत्र चिकित्सा विभाग में मध्यप्रदेश के प्रथम रेटिनल क्लिनिक की स्थापना की। उनकी नेत्र विभाग को यह बहुत बड़ी सौगात थी।

इसी के साथ एम. वाय. अस्पताल का नेत्र विभाग विकास के मार्ग पर अग्रसर हुआ। अब



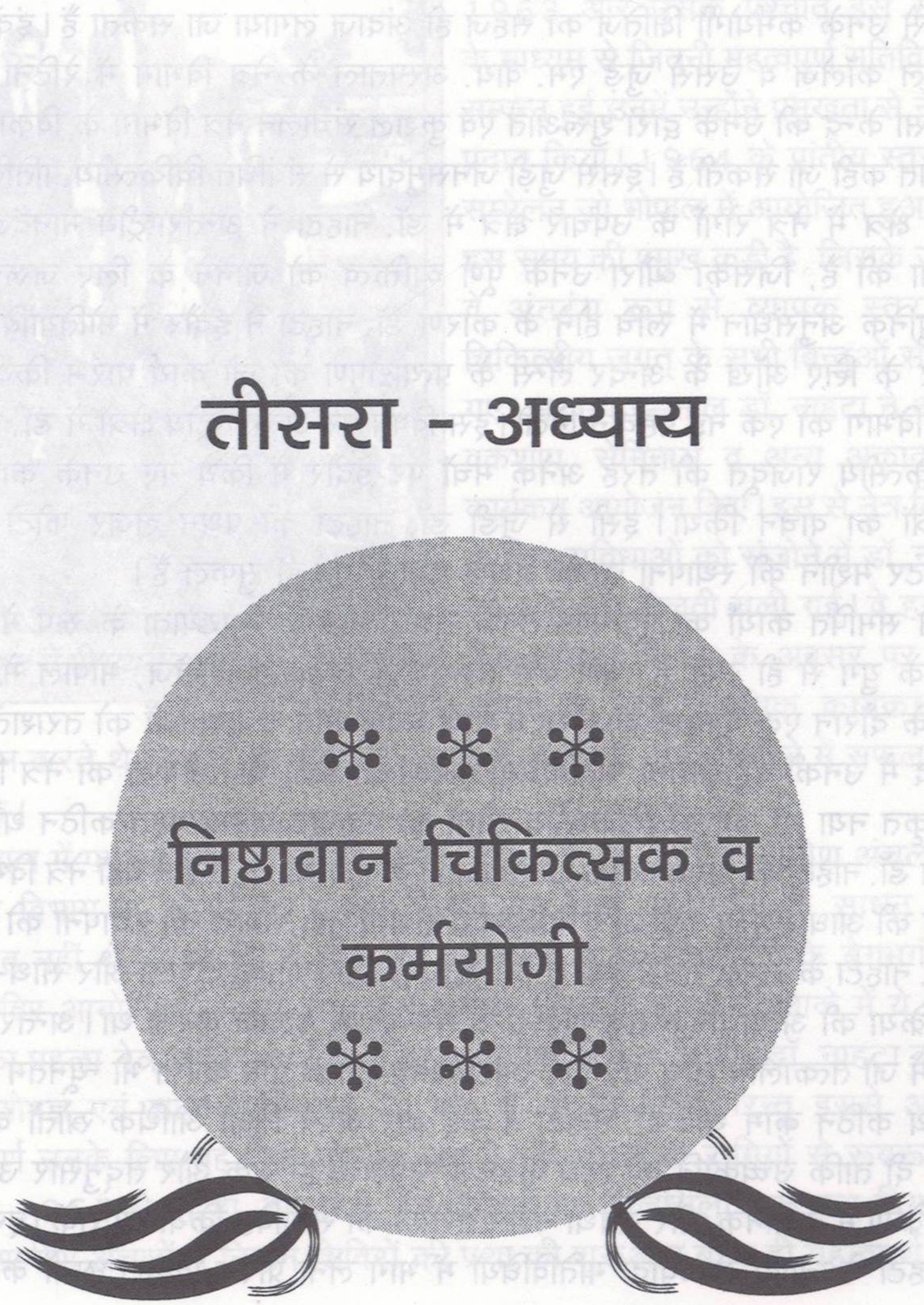
म. य. चिकित्सालय में रेटिनल क्लिनीक की स्थापना तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाशचंद सेठी द्वारा।

सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में एम. वाय. के नेत्र विभाग की पहचान बन गई थी। दूर–दूर के इलाकों से नेत्रों के मरीज अपने उपचार हेतु यहाँ आने लगे। इस समय एक और महत्वपूर्ण क्षण डॉ. नाहटा के जीवन में आया और 1974–75 में वे एम. वाय. अस्पताल के नेत्र विभाग में विभागाध्यक्ष बनें। अब उनका कार्यक्षेत्र और भी विस्तृत हो गया साथ ही जवाबदारियाँ भी बढ़ी।

मेडिकल कौन्सिल ऑफ इंडिया ने भी डॉ. नाहटा की निष्पक्षता तथा क्षमता के कारण समय–समय पर देश के चिकित्सा महाविद्यालयों के निरीक्षण हेतु अलग–अलग स्थानों पर भेजा। प्रदेश तथा प्रदेश के बाहर चिकित्सा महाविद्यालयों में आपने परीक्षक का कार्य भी निष्पक्षतापूर्वक सम्पादित किया। ■



तीसरा - अध्याय

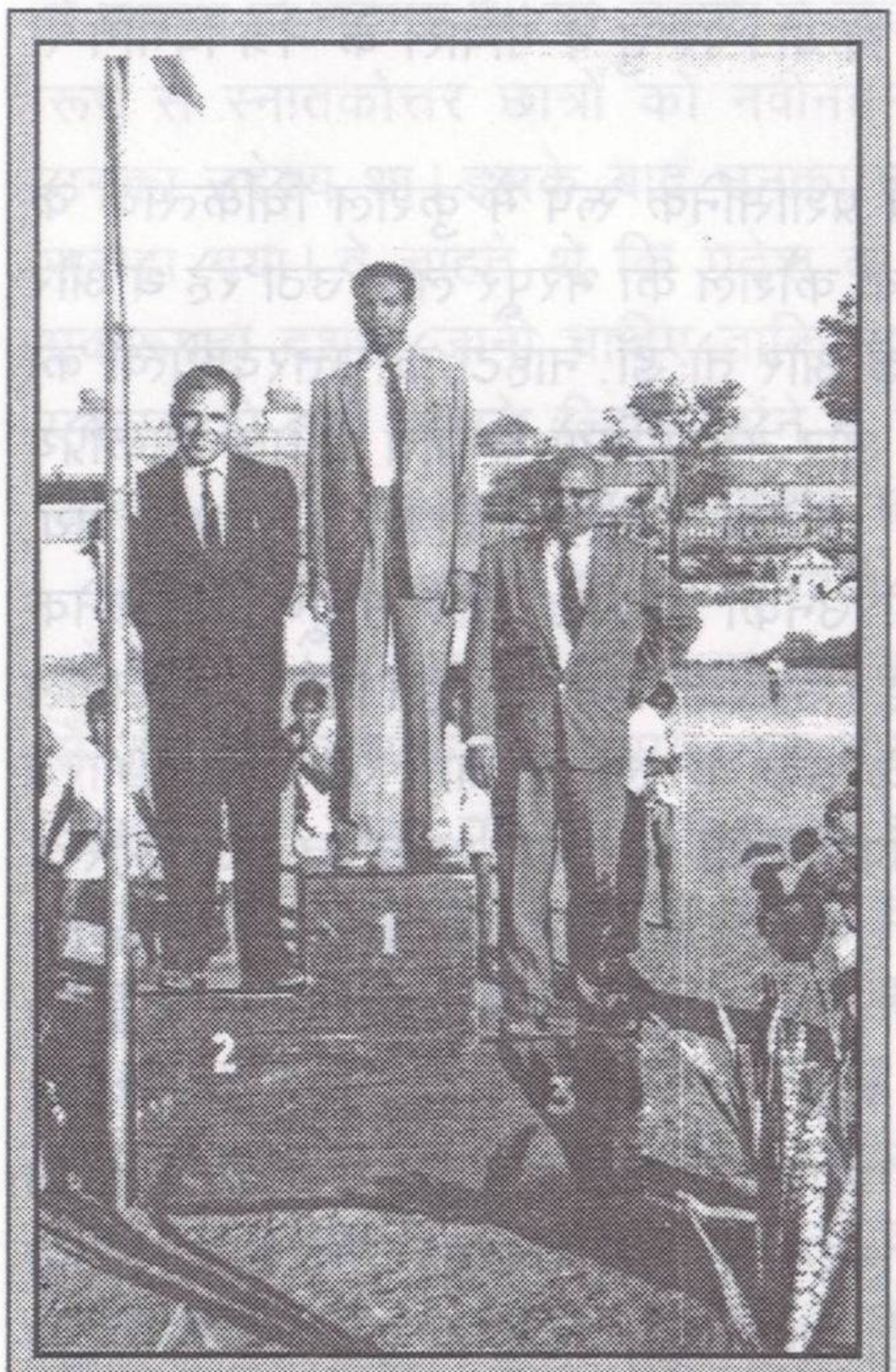


डॉ. माणकचंद नाहटा निष्ठावान, शोधपरक चिकित्सक होने के साथ–साथ सामाजिक स्तर पर चिकित्सा ज्ञान को क्रियान्वित करने हेतु कर्मयोगी की तरह सदैव सजग रहे हैं। स्थानीय, मध्यप्रदेश, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में उनके चिकित्सीय अवदान की भूरि–भूरि प्रशंसा हुई हैं। लगभग चार दशकों से अधिक समय तक इन्दौर, भोपाल, ग्वालियर एवं पुनः इंदौर के एम. वाय. अस्पताल के नेत्र विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपनी अविस्मरणीय सेवाएं दी हैं। क्रियाशीलता का उदाहरण डॉ. नाहटा चिकित्सा व चिकित्सीय जीवन से जुड़े जन हितार्थ के अनगिनत कार्यों से उनके कर्मयोगी क्षितिज का सहज ही अंदाज लगाया जा सकता हैं। इंदौर के मेडीकल कॉलेज व उससे जुड़े एम. वाय. अस्पताल के नेत्र विभाग में रेटिना शल्य चिकित्सा केन्द्र की उनके द्वारा शुरूआत एवं कुशल संचालन नेत्र विभाग के विकास की शुरूआत कही जा सकती हैं। इससे जुड़ी जनसमुदाय से संबंधित चिकित्सीय गतिविधियों ने इस क्षेत्र में नेत्र रोगों के उपचार क्षेत्र में डॉ. नाहटा ने अर्न्तराष्ट्रीय मानदंडों की स्थापना की है, जिसका ब्यौरा उनके पूर्ण व्यक्तित्व को जानने के लिए जरूरी हैं। अत्याधुनिक अनुसंधान में रूचि होने के कारण डॉ. नाहटा ने इंदौर में मोतियाबिन्द के उपचार के लिए ऑख के अन्दर लैन्स के प्रत्यारोपण का जो कार्य प्रारंभ किया था, उससे विभाग को एक नई पहचान मिली। इस विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में डॉ. नाहटा ने चिकित्सीय राजदूत की तरह अनेक मंचों पर इंदौर में किये गए उनके कार्य पर शोधपत्रों का वाचन किया। इसी से जुड़ी डॉ. नाहटा की प्रथम लैजर फोटो को–आगुलेटर मशीन की स्थापना उनके अथक प्रयासों का ही सुफल हैं।

ऐसे समर्पित कार्यों का पूर्वाभास उनके नेत्र विभाग के व्याख्याता के रूप में काम करने के युग से ही स्पष्ट है। चार वर्षों तक गॉधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल में कार्य करने के दौरान एक दूरदृष्टा की तरह वे भावी चिकित्सीय संभावनाओं को तराशते रहे। इस पद में उनकी बहुआयामी गतिविधियॉ परिलक्षित होती थी। भोपाल का नेत्र विभाग अपेक्षाकृत नया था, जिसमें चिकित्सीय स्त्रोतों को एकजुट करना बहुत कठिन था। यह सचमुच डॉ. नाहटा की संगठनात्मक क्षमता का ही कमाल था कि उन्होंने वहॉ नेत्र विभाग में विकास की आधारशिला रखी और चिकित्सीय सेवा में नए आयामों की स्थापना की।

डॉ. नाहटा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती साधनों को उपलब्ध कराना और साथ–साथ शल्य क्रिया की अत्याधुनिक तकनीकियों से मरीजों का इलाज करना था। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जो तत्कालीन शोध पत्रिकाएँ उपलब्ध थी उनको प्राप्त करना भी न्यूनतम स्त्रोतों के साथ कठिन काम था। डॉ. नाहटा ने कई बार अपने निजी आर्थिक स्त्रोतों की भी आहुति दी ताकि उच्चकोटि की शोध पत्रिकाएँ उपलब्ध हो सके और तद्नुसार उपचार की प्रक्रिया में वैज्ञानिक और सर्वथा नवीन तरीकों को समाविष्ट किया जा सकें। इसलिए डॉ. नाहटा ने ज्यादा से ज्यादा गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ किया। छात्रों के मध्य

खेलकूद, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं अनेक गतिविधियों के माध्यम से उपस्थित रहकर डॉ. नाहटा छात्रों को चिकित्सीय संसार से जोड़ते रहे क्योंकि उनका अंतिम लक्ष्य मरीजों की सेवा था।



खेलकूद में भी प्रथम स्थान पर डॉ. नाहटा।

डॉ. नाहटा चिकित्सा जगत से जुड़े भिन्न–भिन्न संगठनों व व्यक्तियों के सम्पर्क में रहते थे। फलस्वरूप वे इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के मानद् सचिव चुने गए और 1963 और उसके पश्चात् इस संस्था के माध्यम से जितनी महत्वपूर्ण गतिविधियॉ सम्पन्न हुई उनमें उन्होंने प्रमुखता से नेतृत्व प्रदान किया। 1964 के प्रांतीय स्तर का सम्मेलन जो भोपाल में आयोजित हुआ था, इस समय की प्रमुख कड़ी है, जिसके जरिए वे अंतरंग रूप से व्यापक स्तर पर चिकित्सीय जगत् के सभी बिन्दुओं से जुड़ गए। साल–दर–साल डॉ. नाहटा ने अनेक वर्कशाप, सेमिनार्स व अन्य अकादमिक कार्यक्रम आयोजन किए। इस से नेत्र विभाग के लिए सुविधाओं को संजोने में डॉ. नाहटा को सफलता मिलती चली गई। वे हर वर्ष विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आम जनता के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन करते थे जिससे नेत्र रोगों को रोकने में अंधत्व से लड़ाई लड़ने में सफल हुआ जा सके।

भोपाल में पदस्थ रहने के दौरान ही डॉ. नाहटा ने इर्द–गिर्द के ग्रामीण अंचलों को भी नेत्र विभाग से जोड़ने का प्रयास किया। उन दिनों आवागमन के साधन इतने विकसीत नहीं थे जितने कि वे आज है। इस काल में रायसेन जिले के बेगमगंज में नेत्र शिविर आयोजित कर डॉ. नाहटा ने सबको चौंका दिया। उस इलाके में ये अपने तरह का पहला नेत्र शिविर था जिसमें बहुत ग्रामीणों ने भाग लिया। डॉ. नाहटा को तो नेत्र विशेषज्ञ एवं शल्य चिकित्सक के रूप में ख्याति मिली परन्तु इससे अधिक महत्वपूर्ण उनके लिए वह ऐसा क्षण था जब वे इस अंचल के रोगियों से रूबरू हुए। वैसे तो 1955 से ही डॉ. नाहटा ने नेत्र शिविरों का सिलसिला शुरू कर दिया था, परन्तु ग्रामीण अंचलों में निदान शिविरों की प्रथा की शुरूआत बहुत ही महत्वपूर्ण काम

था, विशेष रूप से ऐसे शिविरों के भोपाल के आस–पास के अंचलों में सफलतापूर्वक आयोजन करना कठिन काम था क्योंकि विभाग के स्त्रोत सीमित थे। इसके बाद तो वे पदोन्नत होकर प्रोफेसर के रूप में महात्मा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, इंदौर में आ गए और यहाँ नेत्र विभाग में पद्भार ग्रहण किया। परन्तु वे भोपाल के नेत्र विभाग से सतत् रूप से संपर्क में रहें।

इस समय तक डॉ. नाहटा वैधानिक एवं प्रशासनिक रूप में कुशल चिकित्सक के नाते स्थापित हो चुके थे। अधिकारी वर्ग उनके कौशल का भरपूर लाभ उठा रहे थे और उनकी कार्यशैली से प्रभावित थे। इससे एक ओर तो डॉ. नाहटा के उत्तरदायित्वों का दायरा बढ़ता गया और दूसरी ओर वे छात्रों और नेत्र रोगियों के बीच अधिक लोकप्रिय होते गए। अब उन्हें पुस्तकालय अधिकारी, मेडिकल होस्टल वार्डन और एम. वाय. अस्पताल के अधिनस्थ जितनी संस्थाएँ थी उनकी देखरेख और सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था भी उन्हें सौंप दी गई। उन्होंने सहर्ष इन उत्तरदायित्वों को वहन किया। इसी काल में वे राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चिकित्सक के रूप में जाने जाने लगे। भारत सरकार का ध्यान भी उनकी चिकित्सीय उपलब्धियों की ओर आकर्षित हुआ और वे कोलंबो योजना के तहत् उच्च प्रशिक्षण हेतु चुने गए। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि डॉ. नाहटा का चयन नेत्र रोगों में दुर्गम समझी जाने वाली दृष्टिपटल शल्य क्रिया में उच्च क्षमता हासिल करने के लिए किया गया था। रेटिनल शल्य क्रिया में प्रारंभ से ही डॉ. नाहटा की रूचि रही थी और उनके प्रयासों के कारण इंदौर व म. प्र. में प्रथम रेटिनल इकाई की स्थापना की गई थी। लंदन के विश्व विख्यात नेत्र चिकित्सालय मूरफील्डस में डॉ. नाहटा ने रेटिना से जुड़ी अन्तर्राष्ट्रीय शोध का एक वर्ष तक गहन अध्ययन किया। इससे उन्हें स्वदेश लौटकर रेटिनल इकाई की स्थापना की प्रेरणा दी थी। जैसा कि पूर्व में उल्लेखित किया जा चुका है। इसमें म. प्र. व आसपास के अंचलों में दृष्टिपटल वियोजन और इससे जुड़े रोगों का उपचार संभव हो सका।

डॉ. नाहटा नेत्र सुविधाओं के बारे में संतुष्ट नहीं हुए। उन्हें लगा कि अभी बहुत कुछ करना हैं। उन्होंने कठिन प्रयासों के जरिए नेत्र रोगों से संबंधित अन्य कौशल व नेत्र रोगों के लिए अन्य उपचार व्यवस्था की स्थापना करने में सफलता अर्जित की। उन्होंने 1983 में पहली लेजर इकाई की स्थापना की जो न सिर्फ म. प्र. में पहली इकाई थी परन्तु म. प्र. के आसपास के सातों राज्यों में अपने किस्म की पहली इकाई थी। इसी के साथ डॉ. नाहटा ने एम. वाय. अस्पताल में पहला लो–विजन केन्द्र स्थापित किया जो आज भी नेत्र रोगियों को उपयोगी सेवा उपलब्ध करा रहा है।

डॉ. नाहटा सदैव ही कुछ नया करने में जुटे रहें। वे चाहते थे कि नेत्र रोगों की जॉच के लिए सभी उपकरण उपलब्ध हो। उनका यही प्रयास रहा कि एम.वाय. अस्पताल का नेत्र रोग विभाग, जिसके वे अध्यक्ष थे, म.प्र. के सभी नेत्र विभागों में

श्रेष्ठतम रहें। विकास के साथ–साथ सैद्धान्तिक और प्रेक्टीकल शिक्षण के क्षेत्रों में भी वे सतत रूप से सक्रिय थे। स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों को वे उच्च कोटि की शिक्षण व्यवस्था उपलब्ध कराना चाहते थे क्योंकि अच्छा छात्र ही अच्छा शिक्षक बनने में सफल हो सकता हैं। डॉ. नाहटा ने विशेष शैक्षणिक कार्यक्रम विकसित किए विशेष रूप से स्नातकोत्तर छात्रों को नवीनतम् वैज्ञानिक उपलब्धियों से अवगत् कराना उनका उद्देश्य था। इसके बाद उनका एक और कार्यक्रम वैचारिक स्तर पर बहुत सराहा गया। वे चाहते थे कि प्रदेश के सभी चिकित्सा महाविद्यालयों में शैक्षणिक एकरूपता दर्शाई जानी चाहिए ताकि सारा प्रदेश अन्तर्राष्ट्रीय विकास की धारा में एकरस हो सकें। इसके लिए उन्होंने म. प्र. के चिकित्सा महाविद्यालय में अकादमिक आदान–प्रदान का कार्यक्रम का विचार भी प्रस्तुत किया।

नेत्र रोगों के उपचार हेतु त्रिपथ गामी कार्यक्रम तैयार करने का श्रेय भी डॉ. नाहटा को जाता है। ये नेत्र रोग निरोधक कार्यक्रम, नेत्र रोगनाशक कार्यक्रम और नेत्र रोगों से जुड़े शोध कार्यक्रम थे। इसके चार आयाम थे। इन कार्यक्रमों को स्थानीय, प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तरों पर तो लागू करना ही था, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी लागू भारतीय शोध का प्रस्तुतीकरण आवश्यक था। नेत्र रोग विशेषज्ञों की गतिविधियों के समुचित समन्वय हेतु डॉ. नाहटा ने संभागीय नेत्र चिकित्सक संघ की स्थापना की तत्पश्चात् म. प्र. नेत्र चिकित्सक संघ का गठन हुआ जिसके वे 1975 और 1982 में अध्यक्ष रहें। म. प्र. नेत्र चिकित्सक संघ के अध्यक्ष और क्रियान्वयन समिति के सदस्य के नाते उन्होंने अपने विचारों को आगे गति दी। वे अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सक संघ की मेनेजिंग कमेटी के छः वर्षों तक (1980–86) सदस्य रहे।



अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सक संघ को संबोधित करते हुए।

अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सक संघ द्वारा भोपाल में जो वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया था, उसके मुख्य सूत्रधार और सहअध्यक्ष के रूप में डॉ. नाहटा ने सराहनीय काम किया था।

अंधत्व निवारण और अंधत्व से पीड़ित नेत्र रोगियों की पुनर्वसन के क्षेत्र में डॉ. नाहटा का अवदान अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में ख्याति अर्जित कर चुका हैं। डॉ. नाहटा राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा संस्थान, इंदौर के तीस वर्षों से अधिक समय से अध्यक्ष है और इसी संस्था के 1986 में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थे।

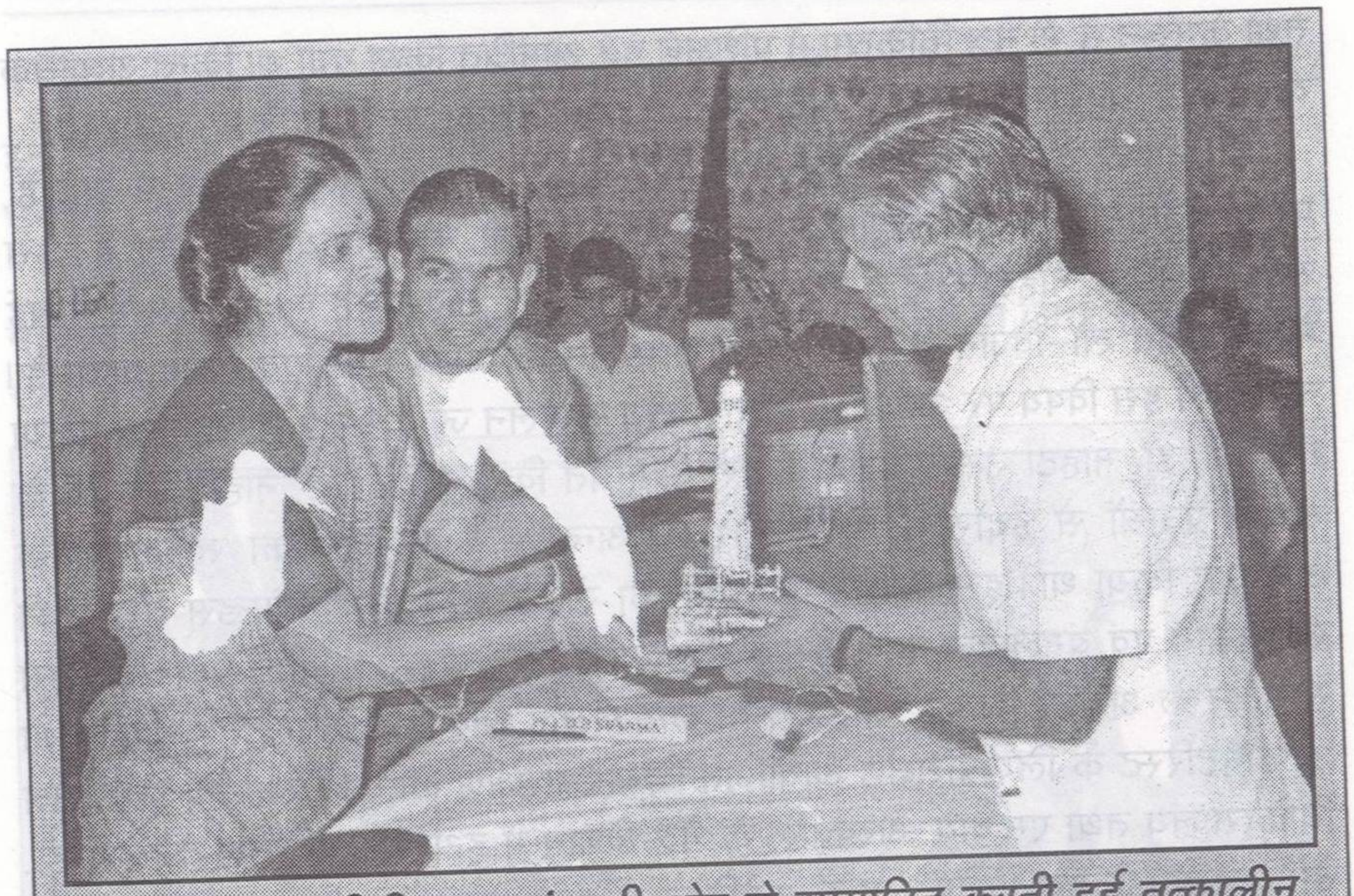


राष्ट्रीय नेत्र चिकित्सक संस्थान द्वारा सम्मान के अवसर पर।

उनके अविरल योगदान को देखते हुए लगातार तीन सत्रों से म. प्र. राष्ट्रीय दृष्टिहीन संघ के वे अध्यक्ष मनोनीत किए गए तथा वर्तमान में वे इसके राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी है। इस संघ के माध्यम से अखिल भारतीय स्तर पर अंधत्व के अभिशाप को मिटाने के लिए वे मुखर रहे हैं। मध्यप्रदेश के पश्चिम के पड़ोसी राज्य राजस्थान में उनके योगदान की सराहना हुई है और वे राजस्थान नेत्र चिकित्सक संघ के आजीवन मानद् सदस्य मनोनीत किए गए है।

अन्तर्राष्ट्रीय संस्था जो अंधत्व निवारण हेतु सक्रिय है उसकी तीसरी महासभा के आयोजन में वे संगठन समिति के 1986 में सदस्य बनाए गए थे। इस संस्थान के तत्वावधान में व्यापक स्तर पर अंधत्व निवारण हेतु कार्ययोजना तैयार की गई थी और उस योजना के प्रारूप को क्रियान्वित करने हेतु डॉ. नाहटा सदैव अग्रणी रहे।

पिछले तीन दशकों में नेत्र रोगों से जुड़े अनेक कार्यक्रम, वर्कशाप, सेमिनार एवं



राजस्थान नेत्र चिकित्सक संघ की ओर से सम्मानित करती हुई तत्कालीन मंत्री सुश्री गिरीजा व्यास।

विस्तार व्याख्यानों के आयोजन में डॉ. नाहटा ने निर्णायक भूमिका निभाई है। ये कार्यक्रम सिर्फ नेत्ररोग विशेषज्ञों एवं नेत्ररोग शल्य चिकित्सकों तक ही सीमित नहीं थे, परन्तु इन आयोजनों में सहायक चिकित्सीय स्टॉफ (पेरा मेडिकल) को भी भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया था। ये कार्यक्रम सतत रूप से 1979 से आज तक जारी है। अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सक संघ डॉ. नाहटा के अनुभव और नेत्र विषयक ज्ञान से लाभान्वित हुआ है और इस संस्था के माध्यम से डॉ. नाहटा की शोध का लाभ जन–जन तक पहुँचा हैं।

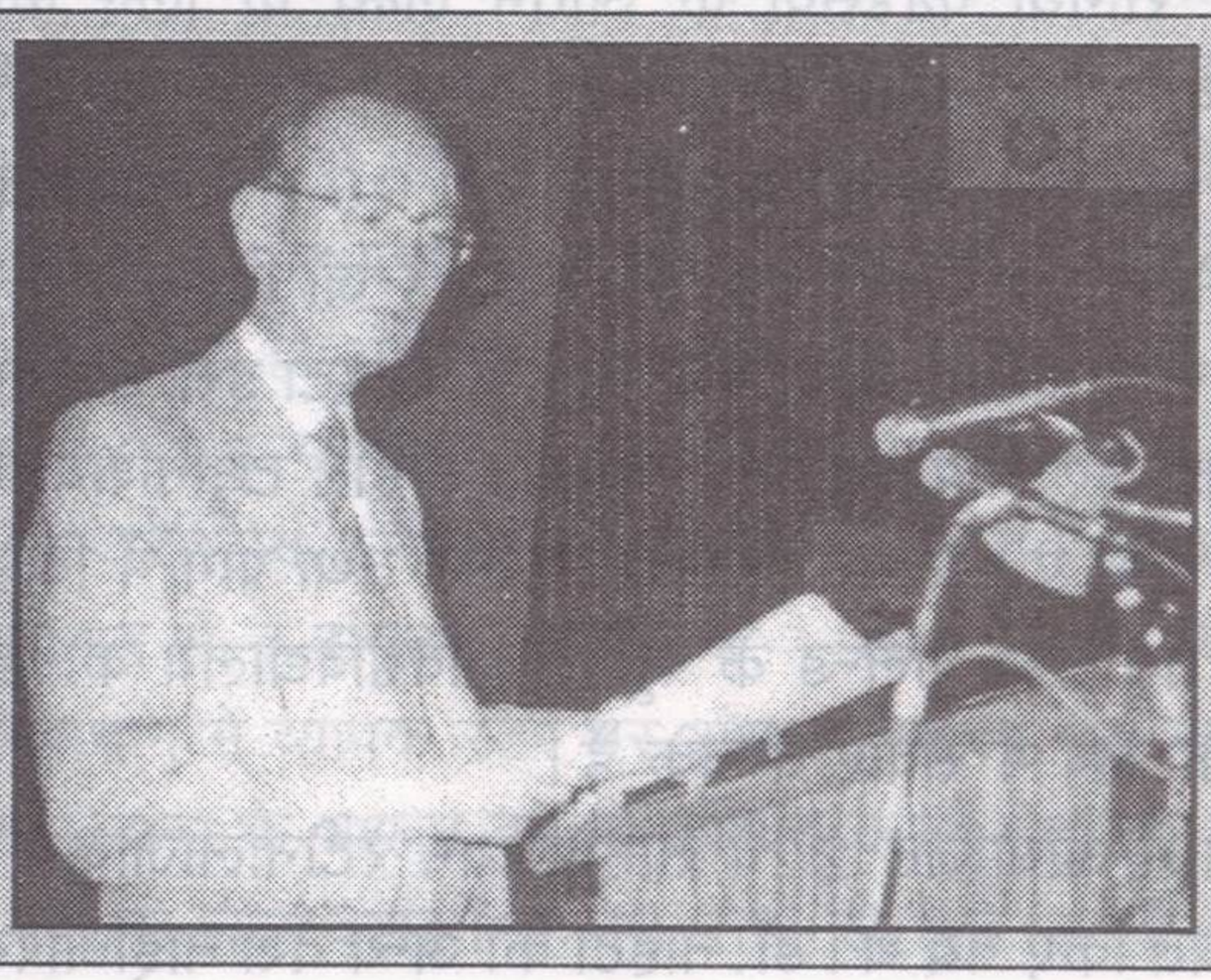
डॉ. नाहटा यह मानते है कि रोगियों की सेवा के अंतिम लक्ष्य के लिए कोई भौगोलिक सीमा नहीं है, इस दृष्टिकोण को सामने रखकर डॉ. नाहटा कार्यरत है और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेते रहे हैं। इस संदर्भ में 1981 में आयोजित मलेशिया के अन्तर्राष्ट्रीय नेत्र सम्मेलन का उल्लेख यहाँ आवश्यक है जो विशेष रूप से लेजर और रेटिना विषयों को लेकर आयोजित किया गया था। डॉ. नाहटा इस सम्मेलन में एक सत्र की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किये गये थे। उन्होंने ट्युनिशिया के ट्यूनिस में और नागोया जापान में शोध पत्र प्रस्तुत किए थे। बर्लिन तथा प्राग में विशेष व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किये गये तथा पौलेन्ड के लूबलिन विश्वविद्यालय को डॉ. नाहटा अपनी विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में सेवाएँ दे चुके हैं।

पोलेंड यात्रा के समय पोजनीन में आयोजित 22वें सीम्पोजियम रेटीनालाजीकम में भी डॉ. नाहटा विशेष रूप से आमंत्रित किए गये थे। डॉ. नाहटा को अन्य देश नाईजिरिया

तथा केमरून में भी नेत्र चिकित्सा में प्रशिक्षण हेतु आमंत्रित किया गया था किन्तु अत्यधिक व्यस्तता के कारण इन देशों में सेवाएँ नहीं दे पाए जिसका उन्हें खेद है।

डॉ. नाहटा वैसे तो समग्र रूप से रोगियों के नेत्र कल्याण हेतु उपचार में जुटे हैं, परन्तु वर्तमान में उनका विशेष ध्यान लो–विजन वाले नेत्र रोगियों की ओर हैं। इस संबंध में भी डॉ. नाहटा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय रहे हैं। 1998 में मुम्बई में आयोजित लो–विजन से जुड़े राष्ट्रीय सम्मेलन को आज तक याद किया जाता हैं। न्यूयार्क में इस विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन जो 1999 में आयोजित किया गया था, डॉ. नाहटा उसमें विशेष रूप से आमंत्रित किए गए थे। डॉ. नाहटा ने स्वयं के अथक प्रयासों से इंदौर में भी 2000 में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया था। इस अवसर पर अमेरिका से डॉ. डेनियल शेनहोल्डस् तथा सुश्री रंजू प्रसाद एवं बंगलादेश के सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ प्रो. मोहम्मद मतिन पधारे थे। इस सम्मेलन के अवसर पर डॉ. नाहटा ने दो कार्यशालाएँ आयोजित कर नेत्र विशेषज्ञ तथा आप्टोमेटरिस्ट के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया। प्रशिक्षण का कार्य स्थानीय इंदौर नेत्र चिकित्सालय तथा एम.वाय. अस्पताल के नेत्र विभाग में हुआ था। प्रशिक्षण देने हेतु डॉ. डेनियल शेनहोल्डस् विशेष रूप से अमेरिका से आये थे।

डॉ. नाहटा की संगठन क्षमता का एक उत्कृष्ठ पहलू मायोपिया पर आयोजित एक परिचर्चा है जो पुणे में 1984 में अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सक संघ के तत्वाधान में आयोजित की गई थी। मायोपिया की गंभीर समस्या नेत्र के क्षेत्र में सर्वविदित् है और इसकी गंभीरता बढ़ती जा रही है। डॉ. नाहटा इस दोष के निवारण हेतु "केरेटोटॉमी" के पक्ष में नहीं है। मायोपिया पर पुणे परिचर्चा जो डॉ. नाहटा के प्रयासों से आयोजित की गई थी, अन्तर्राष्ट्रीय नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में एक एजेंडा बनकर उभरी। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के कई विशेषज्ञों ने भाग लिया था, जिसमें जापान के नेत्र विशेषज्ञों डॉ. टिकासी साटो तथा डॉ. अकरा ममोसे का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।



अखिल भारतीय नेत्र चिकित्सक संघ द्वारा आयोजित परिचर्चा में भागीदारी करते हुए डॉ. नाहटा के मित्र जापान के डॉ. टिकासी साटो।

डॉ. नाहटा ने नेत्र रोग निदान शिविर के आयोजन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया हैं। इन शिविरों के सामुदायिक सेवा एवं सामुदायिक नेत्र परीक्षण के नाते जाना जाता है। उन्होंने 1968 में सबसे पहले ऐसे रोग निदान शिविरों का आयोजन शुरू किया।

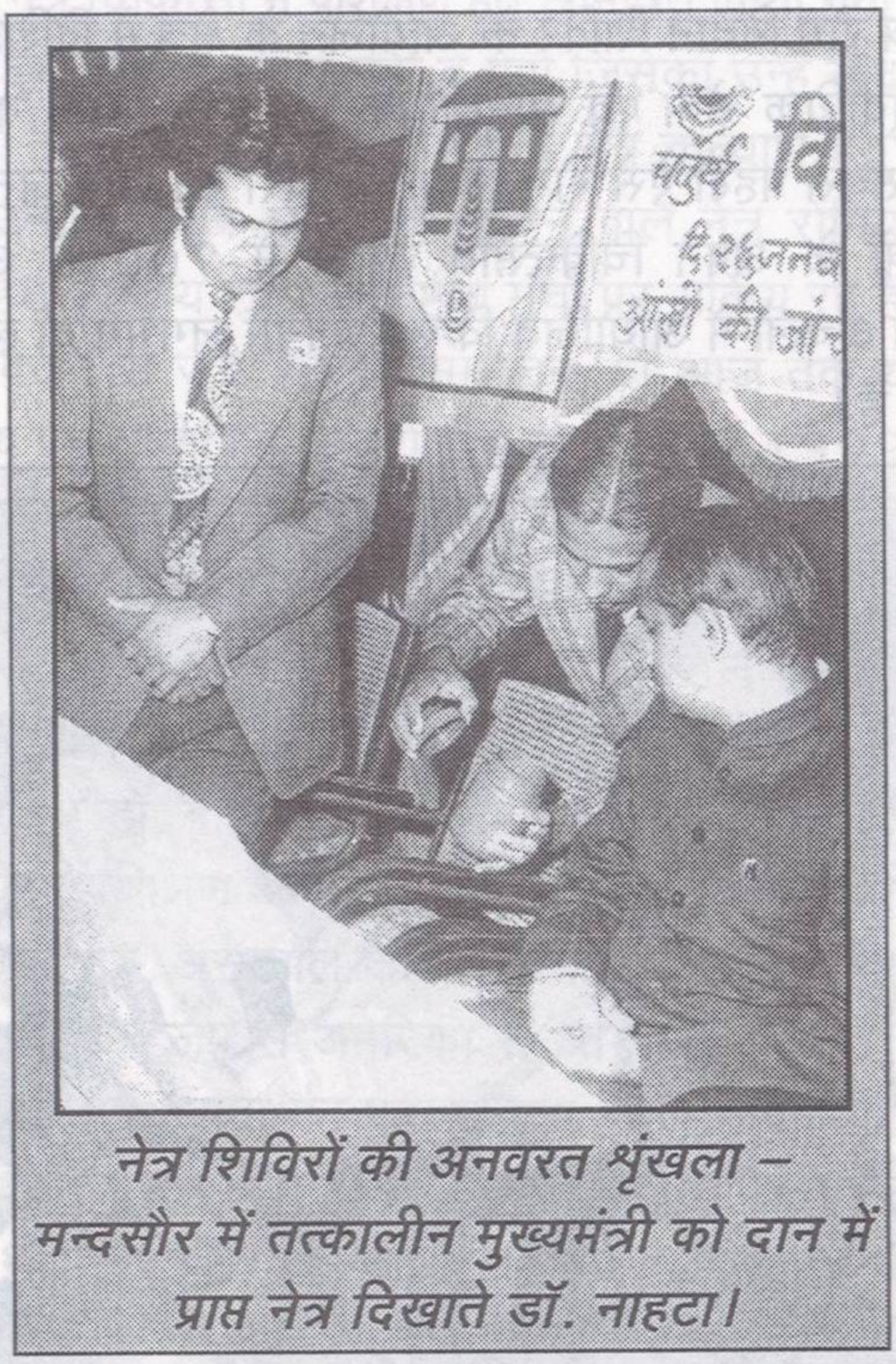
उन्होंने 50 वर्षों के अपने चिकित्सीय जीवन में 700 से अधिक नेत्र शिविर मध्यप्रदेश के ग्रामीण अंचलों में आयोजित किए हैं जिनमें लगभग दो लाख से अधिक नेत्र रोगी लाभान्वित हुए हैं।



डॉ. नाहटा के सांनिध्य में बर्लिन जर्मनी के नेत्र चिकित्सक द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में बालक की जाँच।



ग्रामीण नेत्र शिविर में सेवाओं के लिए अपने ही अग्रज सांसद श्री भँवरलाल नाहटा द्वारा सम्मानित।



नेत्र शिविरों की अनवरत शृंखला –
मन्दसौर में तत्कालीन मुख्यमंत्री को दान में
प्राप्त नेत्र दिखाते डॉ. नाहटा।



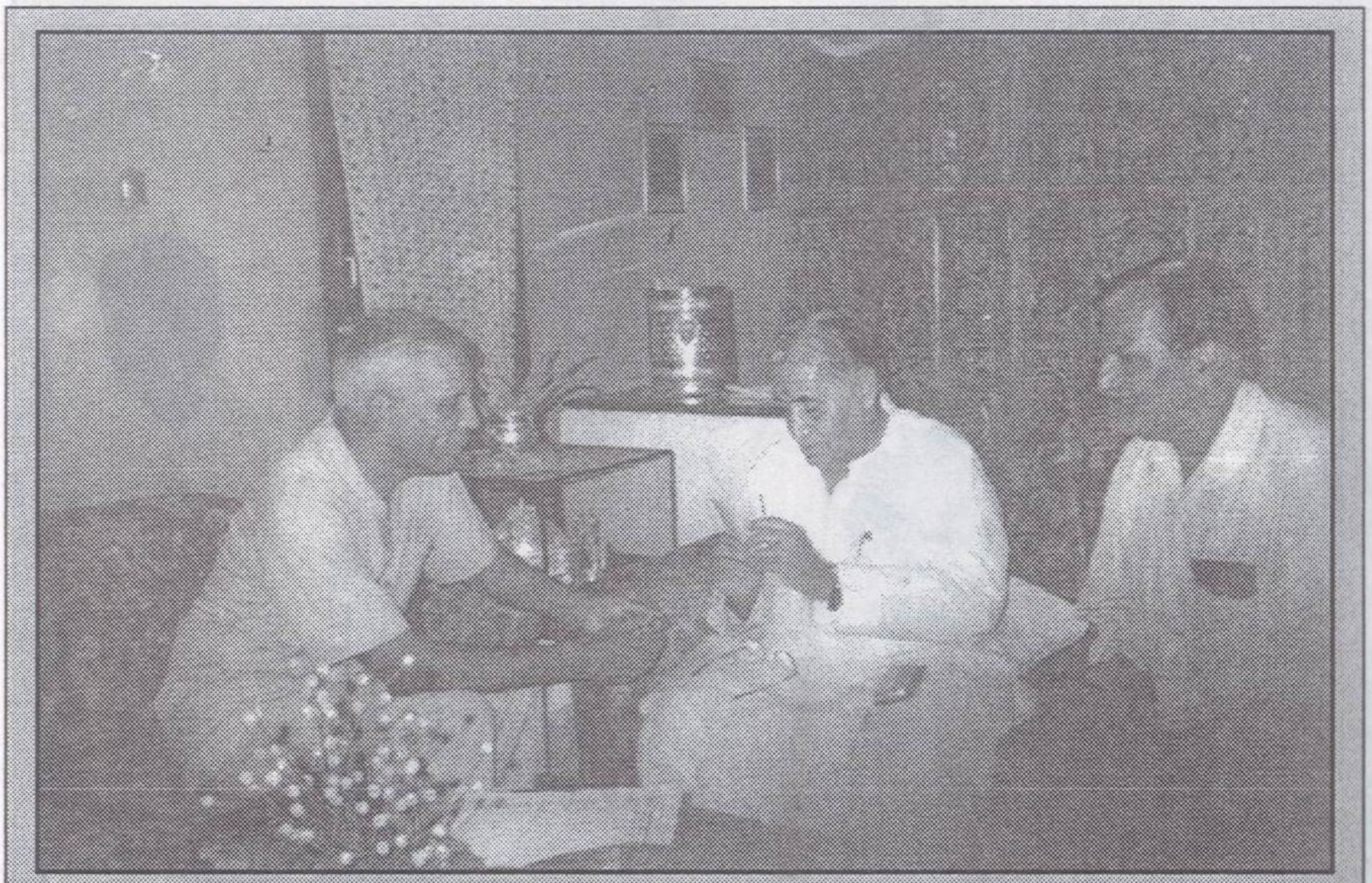
गंजबासौदा ग्राम में स्वास्थ्य मंत्री श्री शीतला सहाय से चर्चारत् डॉ. नाहटा।



नेत्र शिविर में सांसद सुभाष यादव के साथ।



नेत्र शिविर में सिख समाज के प्रमुखों के साथ।



नेत्रदान पखवाड़े के अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री श्री कैलाश जोशी से नेत्रदान घोषणापत्र भरवातें हुए डॉ. नाहटा।



आदिवासी बाहुल्य जिला झाबुआ में आयोजित नेत्र शिविर के अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए डॉ. नाहटा



रोटरी क्लब अशोकनगर द्वारा आयोजित नेत्र शिविर को संबोधित करते हुए डॉ. एम. सी. नाहटा

नेत्र रोगों के प्रबंध कौशल में डॉ. नाहटा का नाम प्रदेश में अग्रणी माना जाता है। जब–जब भी भारत और विशेष रूप से मध्यप्रदेश में नेत्रश्लेष्मला (कन्जन्कटिवाइटिस) की महामारी फैलती है, तब वे इस रोग के सामुदायिक स्तर पर उपचार हेतु अग्रणी रहते हैं। ये रोग विशेष रूप से वर्षा ऋतु में पनपता है और जब अधिक दिनों तक बादलों की वजह से वातावरण में नमी रहती है तब यह महामारी का रूप ग्रहण कर लेता है। इसी तरह जहरीली शराब के कारण जब नेत्र विकार एवं अंधत्व की संभावना बढ़ती है तब वे सक्रिय होकर पूरे जोश के साथ सामने आते हैं। भोपाल की 1984 की प्रसिद्ध गैस त्रासदी के दौरान उन्होंने अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान की है। डॉ. नाहटा ने अनेक सर्वेक्षणों के माध्यम से भिन्न–भिन्न नेत्र रोगों के बारे में शोध की है। नेत्रदान को प्रोत्साहन करने में वे सतत रूप से जागरूक रहे हैं। वे इसे अंधत्व निवारण कार्यक्रम का एक विशिष्ट अंग बना चुके है। जो आज भी जारी हैं।

1990 में पदोन्नति के पश्चात् आपको गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय ग्वालियर में अधिष्ठाता के पद पर पदस्थ किया। अल्प समय में प्रशासकीय क्षमता के प्रदर्शन से तत्कालीन राज्य सरकार अत्यन्त प्रभावित हुई। नई पदस्थापना के तत्काल बाद विपरित परिस्थितियों में जैसे – विद्यार्थियों की हड़ताल, परिचारिकाओं का काम बन्द आन्दोलन तथा राज्य सरकार द्वारा चिकित्सकों के थोकबंद स्थानान्तरों से उपजे असंतोष जैसी स्थितियों में दूरदर्शिता तथा कुशलता से नियंत्रण करने तथा चिकित्सा महाविद्यालय की आवश्यकताओं के आंकलन से सरकार, विद्यार्थी तथा सामान्य जनमानस अत्यधिक प्रभावित हुआ। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा डॉ. नाहटा की ईमानदारी, कार्यक्षमता से अत्यधिक प्रभावित

थे तथा आदर की दृष्टि से देखते थे। इन्ही दिनों मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग में एक सदस्य का पद रिक्त हुआ। लोकसेवा आयोग का यह पद अपनी संवैधानिक गरिमा के लिए विख्यात है। मध्यप्रदेश का नेतृत्व और तत्कालीन राज्यपाल महामहिम कुंवर मेहमूद अली भी डॉ. माणकचंद नाहटा को इस पद पर नियुक्त करने के लिए एक मत थे। डॉ. नाहटा को जब इस पद पर नियुक्त किया गया तब वे दुविधा में थे क्योंकि एक ओर उनके सामने चिकित्सक के रूप में उनका लम्बा जीवन था और दूसरी ओर प्रदेश का व्यापक प्रशासनिक हित। अन्ततः डॉ. नाहटा ने चिकित्सीय कार्यों को कुछ वर्षों के लिए विराम देकर म. प्र. लोकसेवा के सदस्य पद को स्वीकार किया। परन्तु इस काल में अकादमीय और व्यापक शोध के स्तर पर डॉ. नाहटा ने नेत्र रोगों के क्षेत्र में अपना निजी अध्ययन जारी रखा और विश्व स्तर पर नेत्र रोगों से संबंधित नवनीतम जानकारी से वे हमेशा चिरपरिचित रहे। मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के पद पर नियुक्त होने वाले डॉ. नाहटा देश के प्रथम नेत्र रोग विशेषज्ञ थे और मध्यप्रदेश के तीसरे चिकित्सक थे।

डॉ. नाहटा ने मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के सदस्य के रूप में 1990 में पद्भार ग्रहण किया और 23 जुलाई, 1993 तक वे इस पद पर बने रहें। संवैधानिक अर्हताओं के अनुरूप 62 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर वे इस जिम्मेदारी से मुक्त हुए। लगभग तीन वर्षों के कार्यकाल के दौरान डॉ. नाहटा ने लोकसेवा आयोग में कार्यक्षमता और दक्षता के उच्च मानदंड स्थापित किए। प्रत्येक महत्वपूर्ण विषय पर तत्कालीन लोकसेवा आयोग अध्यक्ष (स्वर्गीय) श्री एस. एल. शर्मा डॉ. नाहटा की राय को सर्वाधिक महत्व देते थे। श्री शर्मा के सेवानिवृत्त होने के बाद जब श्री जे. एन. कौल लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष नियुक्त हुए तब विश्वश्यनीयता, दक्षता और गोपनीय स्वभाव से संबंधित कार्य की जिम्मेदारी डॉ. नाहटा को सौंपी जाती थी। डॉ. नाहटा की सदस्यता के दौरान संचालित होने वाली सारी परीक्षाओं का संचालन उनके द्वारा ही किया जाता था। सभी लोगों द्वारा उनकी निष्पक्षता की प्रशंसा की गई। मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग में उनके द्वारा किये गये कार्य सदैव याद किये जायेंगे। लोकसेवा आयोग में रहने के दौरान एक और तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्री कौल की अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति के पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष संघीय लोकसेवा आयोग की अध्यक्षता में आयोजित एक बैठक में अपने साथ डॉ. नाहटा को भी ले गये थे जहॉ उन्होंने समुचित ढंग से मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग का प्रतिनिधित्व किया था। उस समय संघीय लोकसेवा आयोग के सदस्य तथा अन्य सदस्य तत्कालीन केन्द्रिय गृह मंत्री श्री बूटासिंह से मिले थे और उनसे चर्चा के द्वारा डॉ. नाहटा ने लोकसेवा आयोग को अधिक पारदर्शी बनाने हेतु सुझाव भी दिये थे।

म. प्र. लोकसेवा आयोग में डॉ. नाहटा के कार्यकाल तथा किए गए कार्यों को सदियों तक नहीं भुलाया जा सकेगा। ■

चौथा - अध्याय

कर्तव्य परायणता के विविध आयाम

डॉ. माणकचंद नाहटा का मुख्य क्षेत्र चिकित्सा जगत रहा है, परन्तु अन्य क्षेत्रों में भी उन्होंने कर्तव्य परायणता की उच्च मिसाल पेश की है, जो चिकित्सा जगत की नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। चिकित्सा के विविध आयामों के साथ-साथ ही वे सामाजिक स्तर पर अनेक विधावों में सेवा कार्य करते आ रहे हैं। इंदौर में महाराजा यशवंतराव अस्पताल में सेवा करने के बाद भोपाल व ग्वालियर और पुनः इंदौर में अनेक पदों पर रहने के दौरान उनकी क्षमताओं से मध्यप्रदेश शासन और राष्ट्रीय स्वास्थ्य, श्रम तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भली-भांति परिचित हो चुका था और डॉ. नाहटा एक स्थापित शख्सियत के नाते जाने जाने लगे थे।

डॉ. नाहटा के सामाजिक सेवा के व्यापक दायरे रहे हैं। म. प्र. के निर्माण के पूर्व मध्यभारत राज्य के मंत्रियों से भी उनके अंतरंग संबंध थे। वे मध्य भारत राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री (स्व.) श्री मिश्रीलालजी गंगवाल शताब्दी समिति के सदस्य रहे। सामुदायिक सेवा के लिए डॉ. नाहटा मार्च, 2002 में स्टेट बैंक ऑफ इंदौर द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं।



यहाँ- वहाँ सभी जगह सम्मान ग्रहण कर रहे हैं डॉ. नाहटा।

इंदौर के चिकित्सा महाविद्यालय की 125 वीं जयंती पर उन्होंने नैतिक मूल्यों में गिरावट, जो कि चिकित्सा क्षेत्र से संबंधित था, प्रभावशाली व्याख्यान दिया था। इंदौर के वरिष्ठ नागरिक फोरम में भी वे सक्रिय सदस्य के रूप में जुड़े हैं और 'आयु और दृष्टि' विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान देने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किए

गए थे।

चिकित्सक के रूप में विटामीन 'ए' की कमी की वजह से उपजने वाले रोगों हेतु राजस्थान के एक विशिष्ट प्रोजेक्ट हेतु डॉ. नाहटा की राय ली गई थी। यह कार्यकारी संगठन मुंबई में आधारित था और अन्य विकास एजेंसियां व एन.जी.ओ. जो विकलांगता से जुड़ी थी के, तत्वावधान में आयोजित किया गया था। प्रजापति ईश्वरीय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था में भी डॉ. नाहटा सक्रिय सदस्य के बतौर शिरकत कर चुके हैं। माउंट आबू के उनके विशेष सत्रों में उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता रहा है।



प्रजापति अन्तर्राष्ट्रीय ईश्वरीय विश्व विद्यालय माउंट आबू में आयोजित सम्मेलन में भागीदारी।

'धर्म भारती' जो आजकल विश्व संगठन आंदोलन के नाम से जाना जाता है में वे सक्रिय सदस्य रहे हैं। उनकी राष्ट्रीय बैठकों में वे सदैव आमंत्रित किए जाते रहे हैं। इस संस्था द्वारा स्थापित 'सिटी लाईफ सेंटर' का उद्घाटन भी डॉ. नाहटा के करकमलों से हुआ था।

डॉ. नाहटा ने दिसंबर, 2003 में म. प्र. विधानसभा चुनाव के अवसर पर एक दस्तावेज तैयार किया था जो स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा के विषय पर चुनाव घोषणा पत्र की तरह मूल्यवान समझा गया। डॉ. नाहटा जनवरी, 2004 में भारतीय लेखकों की सोसायटी द्वारा उनकी राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए।

डॉ. नाहटा की क्षमताएँ चिकित्सा जगत एवं विकलांगता के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रही। अनेक सामाजिक संगठनों ने भी उनकी कार्यक्षमताओं का पूरा लाभ उठाया। 1968 से जैसे ही डॉ. नाहटा भोपाल से स्थानांतर होकर इंदौर आये तब जैन समाज

की वर्षों से अक्रियाशील संस्था जैन युवक संघ ने डॉ. नाहटा से आग्रह किया कि वे इस संस्था के अध्यक्ष का पद्भार ग्रहण करें और इस निष्क्रीय संस्था को पुर्नजीवित करें। नतीजा यह हुआ कि कुछ ही दिनों में संस्था सामाजिक और चिकित्सीय क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य करने लगी और प्रसिद्ध होकर समाजसेवी संस्थाओं में शुमार हो गई। इस संस्था के माध्यम से चिकित्सा के क्षेत्र में शिविर लगाए, शैक्षणिक कार्य किए, युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया और वृद्धों की अनेक समस्याओं को हल किया। डॉ. नाहटा के योगदान की वजह से आज भी यह संस्था अच्छे सामाजिक कार्य कर रही है।

डॉ. नाहटा की अत्यन्त उल्लेखनीय सेवा रोटरी इंटरनेशनल जैसी ख्यात संस्था के माध्यम से भी हुई जिसके वे सदस्य बने, अनेक समितियों की अध्यक्षता भी की और उन संस्थाओं के तत्वावधान में अनेक गतिविधियों का संचालन किया और कार्यशालाओं का आयोजन भी किया। डॉ. नाहटा संचालक मंडल के सदस्य बने तथा 1975 में इंदौर के प्रमुख और सबसे पुराने क्लब के सर्वानुमति से अध्यक्ष चुने गए। 27 वर्षों के लम्बे अंतराल के बाद रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय के शताब्दी वर्ष 2004–2005 के लिए डॉ. नाहटा पुनः रोटरी क्लब के सर्वानुमति से अध्यक्ष चुने गए। इस संगठन के माध्यम से व्यापक स्तर पर महाविद्यालयों में रोटरेक्ट तथा इंटरेक्ट क्लब की स्थापना की जिसके जरिए रोटरी संदेश फैलाया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में भी डॉ. नाहटा सक्रिय रहे और रोटरी के माध्यम से अनेक सेवाकार्य संचालित किए जिसमें टीकाकरण, नेत्र शिविर, नेत्रदान, खेलकूद आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।



तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा के साथ विकलांगों को ट्रायसिकल देते हुए।

डॉ. नाहटा ने रोटरी के तत्वावधान में मंद बुद्धि वाले बालकों के लिए विशेष कार्य योजना तैयार की और उसके क्रियान्वयन में जुटे रहे। रोटरी क्लब इंदौर द्वारा संचालित पॉल हैरिस स्कूल को भी उन्होंने गतिशील किया। इस स्कूल की महत्ती भूमिका स्थापित करने में डॉ. नाहटा का सर्वाधिक योगदान रहा।

डॉ. नाहटा ने शिक्षा के क्षेत्र का विस्तार करने में भी अपनी ऊर्जा लगायी। उन्हें इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ, सोशल जस्टिस और डेवलपमेंट स्टेडीज में संचालक संस्थापक सदस्य के बतौर मनोनीत किया गया। इस संस्था के माध्यम से इंदौर के साथ–साथ समुचित प्रदेश में विधी, सामाजिक न्याय तथा विकास के अध्ययन हेतु इस संस्था को अग्रिम पंक्ति में लाने का श्रेय डॉ. नाहटा को दिया जाता है। डॉ. नाहटा ने शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक सहभागिता के सिद्धांत को मूर्त रूप देने के लिए इंदौर शैक्षणिक संस्थान को इस तरह गठित कर दिया कि यह व्यापक अकादमीक हितों की रक्षा कर सके। वे इस संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष बने और आपके कार्यकाल के दौरान ही इस संस्था द्वारा शैक्षणिक जगत में जो विचार प्रस्तुत किए वे न सिर्फ स्वीकार किए गए परन्तु सराहे गए।

चिकित्सा सेवा को जन–जन तक पहुँचाने में डॉ. नाहटा हमेशा अग्रणी रहे। उनका मत है कि चिकित्सा सेवा का विस्तार होना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग शोध से लाभान्वित हो सके। इसी संदर्भ में चिकित्सा सेवा के विस्तार हेतु उज्जैन में निजी क्षेत्र में चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना हेतु गठित ट्रस्ट के भी सदस्य के नाते उन्होंने अभूतपूर्व योगदान दिया।

डॉ. नाहटा ने समय – समय पर अपने शोध लेखों में सामाजिक, विकलांगता, शैक्षणिक एवं चिकित्सीय क्षेत्रों में विकास के लिए अपने मूल्यवान विचार व्यक्त किये है जो अखिल भारतीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तरों पर प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं। डॉ. नाहटा ने आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से भी विचार व्यक्त किये है। स्वदेश ही नहीं विदेश यात्रा के दौरान भी लंदन में बी.बी.सी. के ''गेस्ट ऑफ द वीक'' के विशेष कार्यक्रम के तहत् डॉ. नाहटा के सामाजिक विचारों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया। रक्तदान हो या अन्य कोई कार्यक्रम डॉ. नाहटा का यह दृढ़ विश्वास रहा है कि जिस कार्य कि अपेक्षा आप दूसरों से करते हैं उसे स्वयं ही करके उदाहरण पेश करना बहुत ही स्वस्थ परम्परा रहती है।

डॉ. नाहटा के जीवन के विविध आयाम रहे हैं। एक अग्रणी नेत्र चिकित्सक के नाते उनकी क्षमताएँ नेत्र चिकित्सक तक सीमित नहीं रही। समाज से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण विषयों जैसे संवैधानिक व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था, नेत्र चिकित्सा, विकलांगता तथा वृद्धावस्था जैसे विषयों पर डॉ. नाहटा ने एक पुस्तक लिखी है ''परिवर्तन की राहें'' जिसका प्राक्कथन भारत सरकार के मानव तत्कालीन संशाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली

मनोहर जोशी ने लिखा है और पुस्तक पर विशेष टीप पूर्व सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता मंत्री डॉ. सत्यनारायण जटिया ने लिखी है। इस पुस्तक का लोकार्पण मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. भाई महावीर ने किया था।



मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. भाई महावीर द्वारा डॉ. नाहटा की पुस्तक का विमोचन।

डॉ. नाहटा की साहित्य के क्षेत्र में भी रूचि सर्वविदित है। वे इंडियन सोसायटी ऑफ आथर्स के अध्यक्ष है। उनके परिश्रम एवं प्रयासों से इंदौर में पहली बार इस संस्था का राष्ट्रीय सेमीनार सफलतापूर्वक किया गया जिसमें देश के प्रत्येक क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने अपना योगदान दिया।

भारत सरकार के श्रम मंत्रालय द्वारा बीमा अस्पतालों में सुधार हेतु गठित त्रिपक्षीय समिति में उन्हें मनोनीत कर उनके योग्य अनुभव से लाभ उठाया है। डॉ. नाहटा की क्षमताओं का सदुपयोग तभा लाभ पाने हेतु क्षेत्रीय पर्यावरण के संरक्षण के लिए गठित समूह तथा राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा आयोजित विधि जागरूकता शिविर में डॉ. नाहटा को महिलाओं से संबंधित विषय प्रजनन स्वास्थ्य अधिकार, भ्रूण हत्या, शिशु हत्या, जन्म पूर्व निदान तकनीक दुरूपयोग (विनियम एवं निवारण) अधिनियम जैसे महत्वपूर्ण विषय पर संबोधन हेतु आमंत्रित किया गया था। डॉ. नाहटा के विद्वतापूर्ण उपयोगी विचारों को सुनने के लिए महिलाएं बड़ी संख्या में इस आयोजन में सम्मिलित हुई थी। अपने धाराप्रवाह उद्‌बोधन में डॉ. नाहटा ने अत्यधिक उपयोगी जानकारी प्रदत्त कर उपस्थित जन समुदाय को लाभान्वित किया तथा महिलाओं पर हो रहे अमानवीय कृत्यों के विरूद्ध आंदोलन करने हेतु प्रेरणा दी थी। वर्तमान स्वशासी होलकर विज्ञान महाविद्यालय ने भी



''गूफ्तगू'' भारतीय लेखक संघ के सेमिनार के अवसर पर माननीय सत्यनारायण जटियाजी के साथ।



भारतीय लेखक संघ के पदाधिकारियों एवं केन्द्रीय मंत्री श्रीमती सुमित्रा महाजन के साथ – अवसर है सेमिनार के समापन का।

अपने पूर्व यशस्वी छात्र डॉ. नाहटा को 'जन के लिए विज्ञान' विषय पर आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर अपना कर्तव्य निभाया तथा डॉ. नाहटा के विचारों को सुनने का अवसर प्रदान कराया।

एक अन्य अवसर पर इंदौर के वर्तमान महापौर के विदेश से लौटकर आयोजित अनौपचारिक चर्चा हेतु आमंत्रित किया था। वर्तमान में महत्वपूर्ण विषय ध्वनि प्रदूषण से बचाव तथा रोकथाम के अनेक उपाय डॉ. नाहटा ने चर्चा में सराहे जिसकी सराहना महापौर के अतिरिक्त समस्त बुद्धजीवियों ने की तथा इन उपायों को कार्यान्वित करने का निर्णय भी लिया इसे भी डॉ. नाहटा की एक उपलब्धि तथा जन उपयोगी कार्य माना गया है।

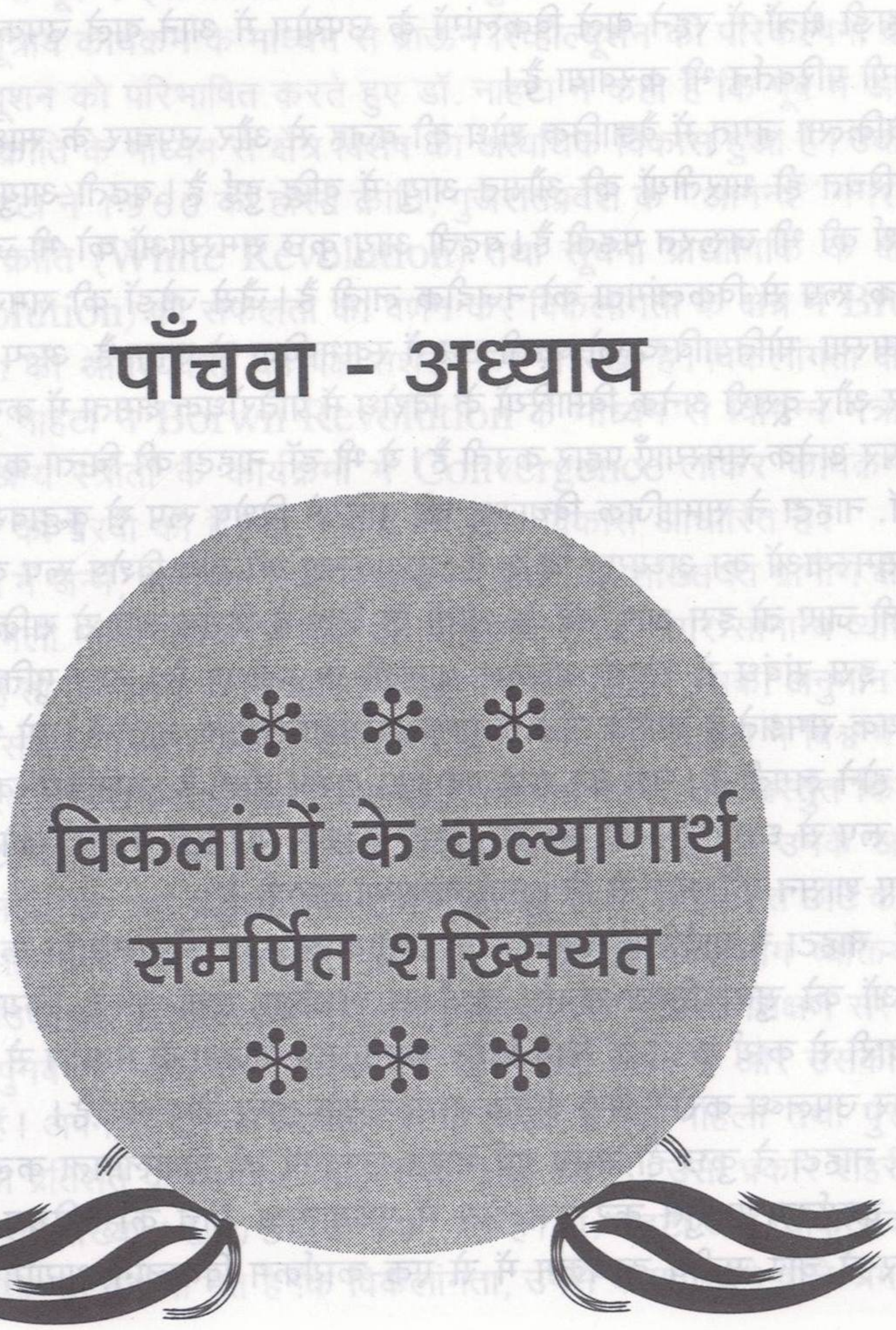
उपरोक्त वर्णित तथा अवर्णित बिन्दुओं से स्पष्ट है कि डॉ. नाहटा एक ऐसी शख्सियत है जिसे सार्वजनिक हित, विकलांगता के कल्याण, चिकित्सा या अन्य किसी विषय पर विचार तथा मार्गदर्शन हेतु आमंत्रित किया जाता रहा है।

अतः मेरे लिये यह कहना अत्यधिक कठिन है कि डॉ. नाहटा जैसे नेत्र चिकित्सक के श्रेष्ठतम् कार्य का क्षेत्र कौन–सा है – विकलांगता, चिकित्सा, साहित्यिक, सामाजिक या प्रशासनिक सुधार। इस विलक्षण व्यक्ति को देखने, सुनने तथा उनके साथ कार्य करने पर मैं निश्चित रूप से कहता हूं कि यह एक सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है जिसने देश में समाज के सामने अनेकों अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर विकलांग वर्ग तथा देश की सेवा की है।

इंदौर के प्रसिद्ध गीताभवन नेत्र चिकित्सालय तथा मिशन हॉस्पिटल को भी डॉ. नाहटा मानद् विजिटिंग नेत्र शल्य चिकित्सक के रूप में अपनी सेवाएं दे चूके हैं। गीता भवन के संस्थापक संत बाबा बाल मुकुन्दजी के समय वे गीताभवन नेत्र चिकित्सालय से जुड़े थे।

एक विचारक के रूप में डॉ. नाहटा ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। जब मध्यप्रदेश में शासन ने विकेन्द्रीकरण कर जिला समितियों का गठन किया तब डॉ. नाहटा को जिला योजना समिति झाबुआ के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया। डॉ. नाहटा ने चार सूत्रीय योजना समिति के समक्ष प्रस्तुत की थी जिसे सर्वानुमति से समिति ने स्वीकार किया था। ■

पाँचवा - अध्याय



डॉ. माणकचंद नाहटा का विकलांगों के लिए की गई समर्पित सेवा उनके चिकित्सीय व प्रशासनिक उपलब्धियों के मध्य महत्वपूर्ण उपलब्धि की एक दास्तान है। विकलांगों को जहाँ तक हो स्वावलंबी बनाने में भी डॉ. नाहटा ने अविस्मरणीय भूमिका अदा की है। उन्होंने विकलांगों को नैतिक रूप से सशक्त बनने की भी सतत प्रेरणा प्रदान की है। विकलांगों के लिए किये गए डॉ. नाहटा के कार्य बहुआयामी है जो कि विकलांगता की रोकथाम, उनके शिक्षण, उनके रोजगार, प्रशिक्षण और उनके कल्याण के लिए विकसित उपकरणों से संबंधित हैं। डॉ. नाहटा ने विकलांगों के मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक पक्षों का भी बारीकी से अध्ययन किया है। विकलांगों से जुड़े उपकरणों के उत्पादन और उनमें गुणात्मक सुधार की ओर उन्होंने विशेष ध्यान दिया है। विशेष रूप से पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले विकलांगों के उपयोग में आने वाले उपकरणों में उन्होंने उपयोगी परिवर्तन भी करवाया है।

चिकित्सा जगत् में वैज्ञानिक शोध की वजह से और उपचार के साधनों के विकास से निश्चित ही भारतीयों की औसत आयु में वृद्धि हुई है। बढ़ती आयु में चिकित्सीय परामर्श की भी जरूरत पड़ती है। बढ़ती आयु कुछ समस्याओं को भी जन्म देती है जो आंशिक रूप से विकलांगता को नजदीक लाती है। जैसे जोड़ों की समस्या, हड्डी टूटने की समस्या, मोतियाबिन्द जो बढ़ती उम्र में स्वाभाविक हो जाता है, अल्प दृष्टि अन्य नेत्र विकार और दूसरी अनेक बिमारियों के विरोध में प्रतिरोधक क्षमता में कमी की वजह से वृद्धों पर अनेक समस्याएँ प्रहार करती है। ये भी डॉ. नाहटा की चिन्ता का विषय रहा है।

डॉ. नाहटा ने सामाजिक विचारक की दृष्टि से विशेष रूप से वृद्धावस्था की स्थिति तथा समस्याओं का अध्ययन किया है। वृद्धावस्था को यदि विशेष रूप की विकलांगता मान ली जाए तो इस आयु वर्ग के लोगों के लिए वे विशेष रूप से सक्रिय रहे हैं। डॉ. नाहटा इस संबंध में संयुक्त परिवार प्रणाली के पक्षधर है। नशा मुक्ति वे समाज में आवश्यक समझते है क्योंकि नशे से मानसिक विकलांगता आती है। जो भौतिक रूप से प्रकट होने लगती है। नशे का नेत्रों पर बुरा असर होता है। नशेड़ियों के परिवारों पर विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत पड़ती है। ऐसे परिवारों में बच्चों को शिक्षित करने के लिए शासन की ओर से निःशुल्क व्यवस्था जरुरी है।

डॉ. नाहटा ने प्रादेशिक स्थानीय व राष्ट्रीय स्तर पर विकलांगता के क्षेत्र से जुड़ी संस्थाओं को सुव्यवस्थित करने, कार्यक्रम निर्धारण तथा उनके क्रियान्वयन करने, ईमानदारी से कार्य करने के लिये प्रेरित करने, नई योजना के माध्यम से विकलांगों को रोजगार उपलब्ध कराने जैसे अनेक कार्य उनके द्वारा किए गए है।

डॉ. नाहटा ने कुछ ही समय पूर्व भारत सरकार को विकलांगता कल्याण हेतु चार सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत कर इस क्षेत्र में रचनात्मक सोच का परिचय दिया। भारत सरकार ने चार सूत्रीय कार्यक्रम में से एक कार्यक्रम विकलांग आयोग के गठन को

विचारार्थ स्वीकार किया गया। तद्नुसार भारत के प्रधानमंत्री ने इसकी घोषणा भी की और बाद में इस संबंध में इसकी अधिसूचना भी जारी हुई। विकलांगता के क्षेत्र में इस तरह के रचनात्मक कार्यों के लिए आधारशिला रखने वाले डॉ. नाहटा इस क्षेत्र में जनक के रूप में जाने जाते हैं।

चार सूत्रीय कार्यक्रम के माध्यम से विकलांगता के क्षेत्र में अकादमिक और अनुसंधान का वातावरण निर्माण करने वाले डॉ. एम. सी. नाहटा पहले व्यक्ति है। प्रस्ताविक चार सूत्रीय कार्यक्रम के माध्यम से विकलांगता के क्षेत्र में क्रांति लाने का प्रयास इसी चिकित्सक तथा समाजसेवी ने प्रारंभ किया है। आश्चर्य है कि क्षेत्र के स्थापित व्यक्तियों में से किसी ने भी पूर्व में इस प्रकार का विचार प्रस्तुत नहीं किया गया था। डॉ. नाहटा ने अपने चार सूत्रीय कार्यक्रम के माध्यम से ब्राऊन रिव्होल्यूशन की परिकल्पना की है। ब्राऊन रिव्होल्यूशन को परिभाषित करते हुए डॉ. नाहटा ने कहा है कि पूर्व में अलग–अलग क्षेत्रों में क्रांति के माध्यम से क्षेत्र विशेष का अत्यधिक विकास हुआ है। उदाहरण देते हुए डॉ. नाहटा ने 1960 की हरित क्रांति, गुजरातप्रदेश के ''आनन्द'' नगर द्वारा प्रस्तुत व्हाइट क्रांति (White Revolution) तथा सूचना प्रोद्यौगिकि के क्षेत्र में (Blue Revolution) की सफलता का वर्णन कर विकलांगता के क्षेत्र में Brown Revolution की आवश्यकता का पक्ष सशक्त रूप से रखा है। विकलांगता क्षेत्र के शीर्ष पुरुष डॉ. नाहटा ने Borwn Revolution के माध्यम से विभिन्न मंत्रालयों, विभागों तथा अन्य स्त्रोतों के कार्यक्रमों में Convergence लाकर कार्यक्रमों को संचालन करने की पैरवी की है। डॉ. नाहटा की सोच विकास आधारित है।

ग्रामीण क्षेत्र में जन्में, प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली यह शख्सियत ग्रामीण क्षेत्र की कठिनाइयों से भली भांति परिचित है तथा यह भी सोचते है कि अगर सामान्य व्यक्ति का जीवन कठिन है तो विकलांग व्यक्ति की कठिनाइयां कितनी होगी। इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। इस स्थिति से निजात दिलाने हेतु डॉ. नाहटा ने विश्व में प्रथम समाज आधारित पुनर्वसन शैक्षणिक संस्थान की स्थापना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। यहाँ डॉ. नाहटा के इस कथन का उल्लेख करना सामयिक होगा कि उनके अनुसार विकलांग जनसंख्या का 75 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्र में तथा 15 प्रतिशत छोटे कस्बों में रहता है। वर्तमान व्यवस्था के अन्तर्गत लगभग 95 प्रतिशत विकलांग व्यक्तियों को पुनर्वसन सेवा उपलब्ध नहीं है। अतः सामुदायिक आधार पर पुनर्वास शिक्षण संस्था की स्थापना तथा पुनर्वसन सेवा का पुनः निर्धारण डॉ. नाहटा चाहते है और उसकी पैरवी भी कर रहे हैं। अपने विचार के समर्थन में वो कहते है कि महिला तथा पुरुषों में विकलांगता का प्रतिशत क्रमशः 16, 95 तथा 22, 77 है। उसी प्रकार शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में यह संख्या 16, 75 तथा 19, 75 है। डॉ. नाहटा जैसे चिकित्सक तथा सामाजिक व्यक्ति का यह भी मत है कि विकलांगता, उनसे कराए जाने वाले श्रम से भी

हो सकती है। अत: वे बच्चों को विकलांगता से बचाव हेतु उनसे श्रमिक कार्य कराने के प्रबल विरोधी है और इस प्रकार का मत सार्वजनिक रूप से अनेक स्तरों पर वे व्यक्त कर चुके हैं।

डॉ. नाहटा को उच्च श्रेणी चिकित्सक के अतिरिक्त एक कुशल प्रशासक तथा योजनाकार के रूप में भी हमने देखा है। अपार अनुभव के आधार पर वो कहते है कि विकलांगों की वर्तमान स्थिति दयनीय है। उन्होंने कई बार दृढ़तापूर्वक कहा है कि विकलांग पुनर्वसन व्यवस्था को त्रिस्तरीय बनाया जावें। विकलांग व्यक्तियों के कल्याण हेतु समर्पित यह चिन्तक एक अनुपम कार्य प्रणाली के माध्यम से प्रत्येक विकलांग व्यक्ति के पुनर्वसन तथा कल्याण की व्यवस्था करना चाहता है।

चार सूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत ही विकलांगता आयोग के विचार को प्रस्तुत किया है। प्रसन्नता है कि भारत सरकार के दो शीर्षस्थ महानुभावों माननीय प्रधानमंत्री तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने डॉ. नाहटा के विचार से सहमत होकर न केवल स्वीकारा है वरन् आयोग की सब औपचारिकताओं को पूरा भी कर दिया है। इसका श्रेय केवल डॉ. नाहटा को दिया जावेगा और उनका नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जावेगा। ऐसे महान व्यक्ति को शत् शत् प्रणाम।

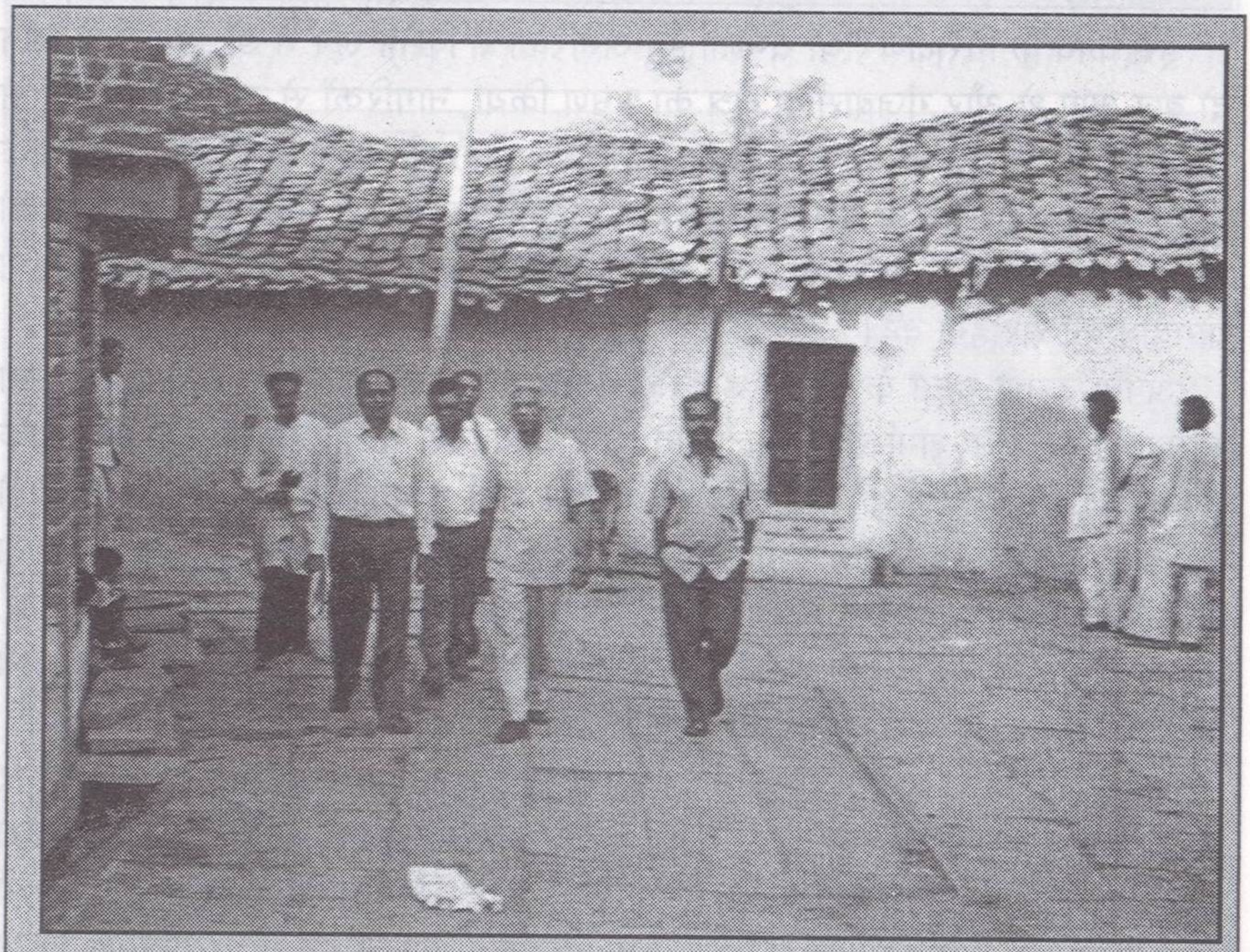
चार सूत्रीय विकलांग कल्याण कार्यक्रम प्रस्तुत करने की पृष्ठभूमि तथा सोच महत्वपूर्ण है। डॉ. नाहटा का मानना है कि भारतीय पुनर्वसन परिषद, नि:शक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण एवं पूर्ण भागीदार) अधिनियम 1995 तथा मानसिक विकलांगों हेतु नेशनल ट्रस्ट के गठन के बाद भी अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए। अत: एक नई दिशा की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति प्रस्तुत चार सूत्रीय कार्यक्रम के अर्न्तगत हो सकती है।

डॉ. नाहटा का मानना है कि विकलांगता तथा चिकित्सा एक दूसरे से अत्यधिक निकटता से जुड़े है। जिस तरह से चिकित्सक मानव के रोगों का उपचार करता है उसी तरह विकलांगता का भी उपचार किया जाता है। इसके लिए अनेक स्तरों पर कार्य करना होगा और सब क्षेत्रों का समन्वित प्रयास ही विकलांगता से लड़ने में कामयाब हो सकता है। भारत जैसे विशाल देश, विशाल आबादी के रहते विकलांगता की समस्या भी गंभीर है। नेत्र विकलांगता को दूर करने के लिए कार्निया प्रत्यारोपण जैसी तकनीकें आज मौजूद है जिनका सूत्रपात डॉ. नाहटा ने दशकों पूर्व किया था। दृष्टिबाधा को भी वे एक तरह की विकलांगता ही मानते हैं। वर्षों पूर्व कार्नियल अंधत्व विकलांगता को दूर करने के लिए डॉ. नाहटा ने संकल्प लिया और कार्निया प्रत्यारोपण कार्य को गति देकर, दृष्टिबाधित व्यक्तियों की संख्या में कमी करने का साहसिक कार्य किया जो आज भी जारी है।

इस क्षेत्र में डॉ. नाहटा की पहचान अखिल भारतीय स्तर पर स्थापित हो चुकी है।

वे विकलांग अधिनियम 1995 के अन्तर्गत गठित मध्यप्रदेश राज्य समन्वय समिति के सदस्य भी मनोनीत किए गए थे। समन्वय समिति द्वारा गठित उप–समिति में भी क्रियान्वय हेतु डॉ. नाहटा ही सदस्य मनोनीत किए गए थे। वर्तमान में भी विकलांगता के क्षेत्र में सर्वाधिक सक्रियता की वजह से डॉ. नाहटा ने नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड के अध्यक्षीय कार्यकाल में दृष्टिहीनों के लिये तीन बार राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें वर्ष 2000 में आदिवासी क्षेत्र झाबुआ में आयोजित पहली खेलकूद प्रतियोगिता की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई।

दृष्टिहीनों के हितों के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य डॉ. नाहटा करते आए हैं उसमें ब्रेलप्रेस की स्थापना मील का पत्थर है। इस क्षेत्र में उनकी कार्यशीलता सर्वत्र सराही गई। डॉ. नाहटा की लगनशीलता, ईमानदारी से प्रभावित अमेरिका की प्रसिद्ध स्वयंसेवी संस्था ''व्हालेंटरी आय सर्जन इन्टरनेशनल''ने उन्हें डायरेक्टर फॉर इंडियन प्रोग्राम के रूप में मानद संचालक के पद पर नियुक्ति प्रदान की। इस संस्था और जिला अंधत्व निवारण समिति विदिशा के सहयोग से विदिशा के गंजबासौदा ब्लाक में एक अत्यधिक उपयोगी उपकरण ''फोकोमीटर'' के माध्यम से ग्रामीण लोगों का नेत्र परीक्षण कर निःशुल्क चश्में वितरण का कार्य पिछले कई वर्षों से डॉ. नाहटा करते रहे हैं।



चिकित्सक मरीजों के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में ''फोकोमीटर'' द्वारा जाँच अभियान।



नेत्र परीक्षण फोकोमीटर द्वारा गंजबासौदा में।

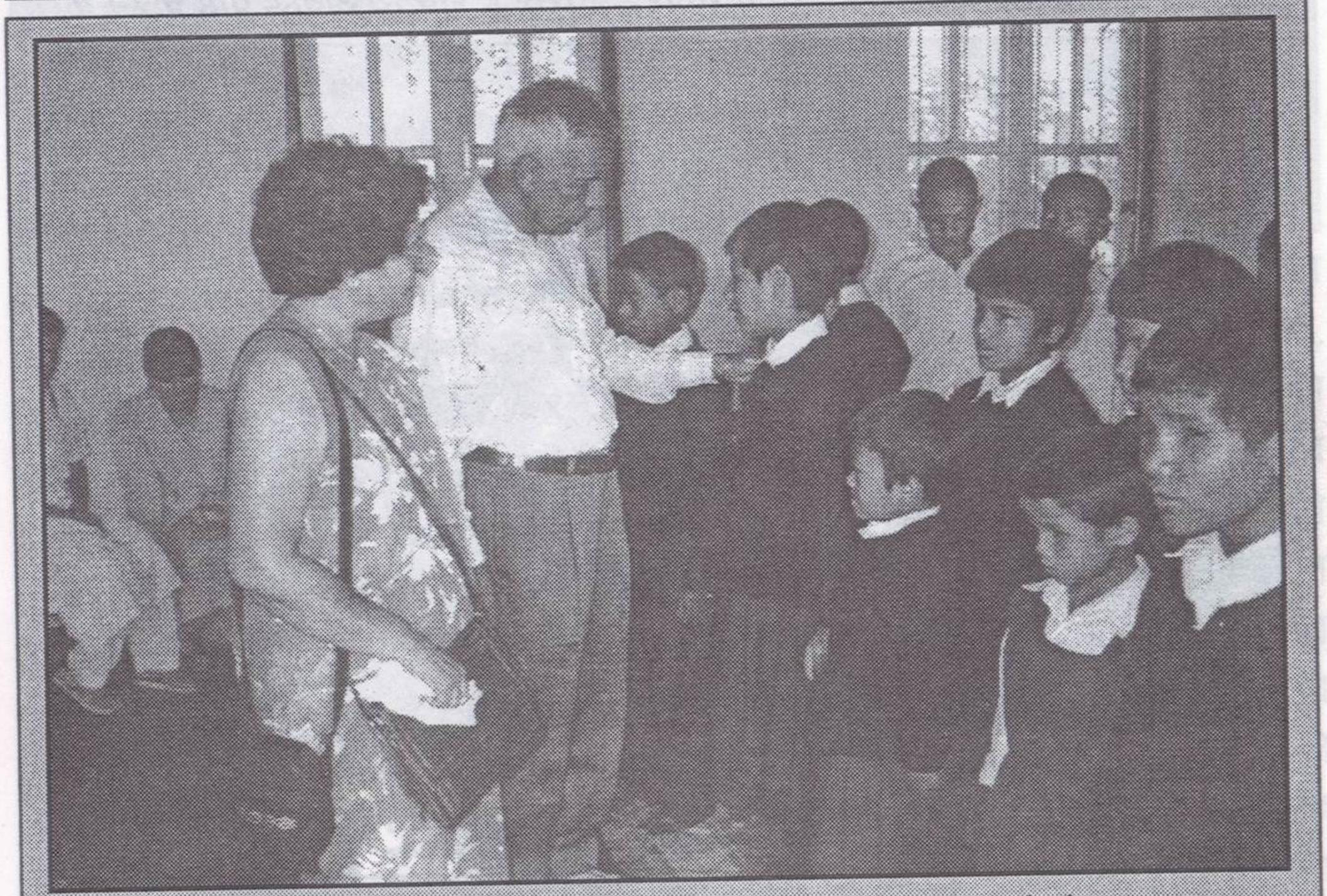
इस कार्य के निरीक्षण तथा समीक्षा हेतु अमेरिका से विशेष रूप से डॉ. रोजर्स पीयर्सन दो बार आए थे और गंजबासौदा क्षेत्र का भ्रमण किया, नागरिकों से तथा हितग्राहियों से भी मिले। डॉ. नाहटा के कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी। उसी समय भोपाल के एक महत्वपूर्ण समाचार पत्र के प्रधान सम्पादक श्री प्रफुल्ल माहेश्वरी से भी आपने मुलाकात की तथा इस कार्यक्रम के महत्व तथा डॉ. नाहटा द्वारा दी जा रही अनुकरणीय सेवाओं तथा योगदान की सराहना की।

अपनी दूसरी यात्रा के दौरान डॉ. रोजर्स पीयर्सन ने मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्य सचिव श्री के. एस. शर्मा से भी मुलाकात कर मध्यप्रदेश में दृष्टिहीनता तथा आवश्यक उपायों के बारे में चर्चा की। डॉ. पीयर्सन को श्री शर्मा ने कहा कि डॉ. नाहटा प्रदेश ही नहीं वरन् देश के महान नेत्र चिकित्सकों में अग्रणी है और दृष्टिहीनता की रोकथाम तथा अन्य विषमताओं के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है। मुख्य सचिव महोदय द्वारा डॉ. नाहटा के प्रति व्यक्त विचारों से डॉ. पीयर्सन ने कहा हमें प्रसन्नता है कि हमने इस कार्य के लिये डॉ. नाहटा जैसे व्यक्ति को ही चुना है।

अमेरिका के दो अन्य स्वयंसेवी संगठनों ने भी आपको चिकित्सीय सलाहकार मंडल पर सदस्य के रूप में मनोनीत किया। पिछले दिनों भारत सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय संस्थान मुम्बई तथा कोलकाता ने सिक्किम प्रान्त में इन संस्थाओं द्वारा संचालित कार्यक्रमों के परीक्षण हेतु आमंत्रित कर, गहन विचार विमर्श किया एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया।

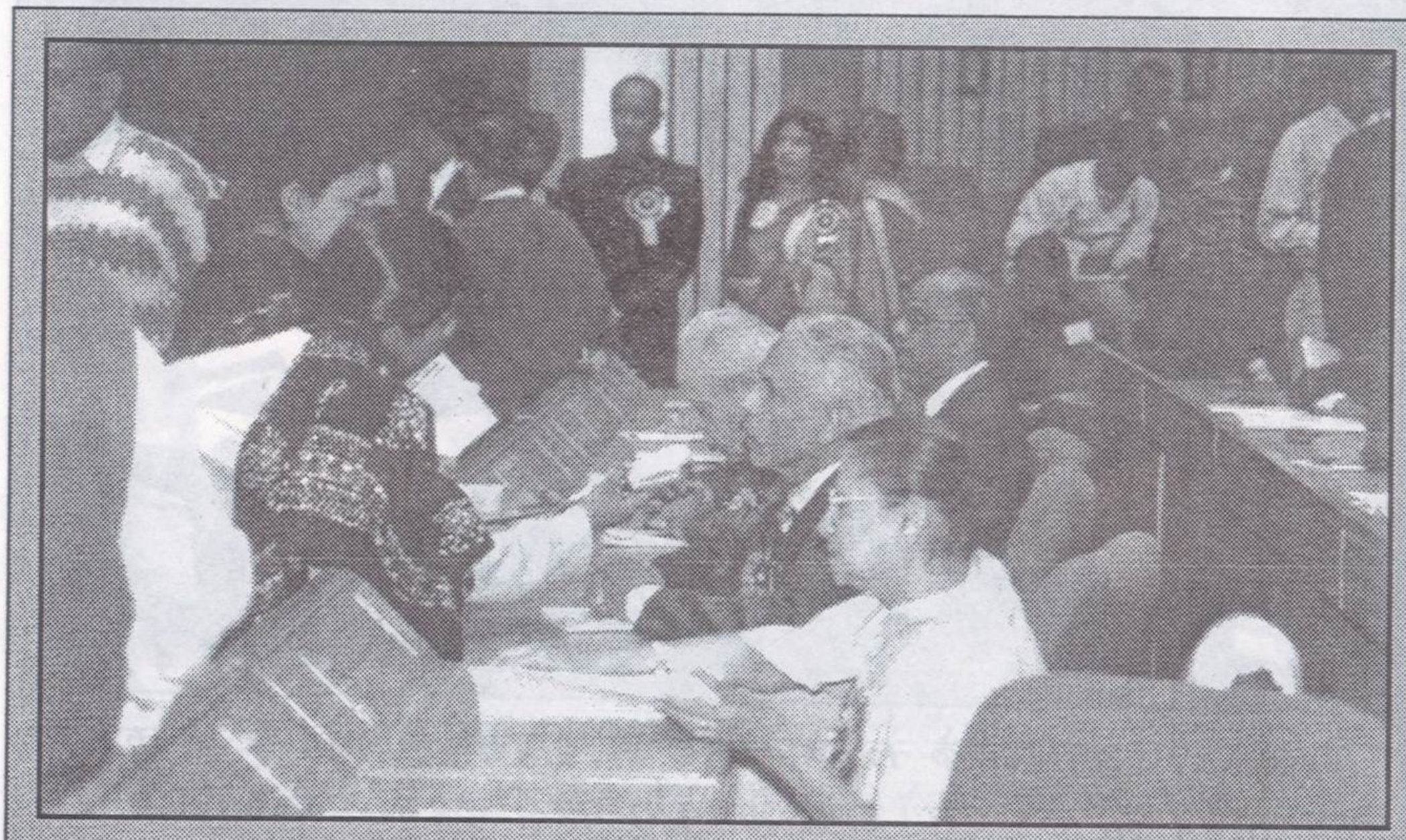


"विशेष चर्चा" अमेरिका के नेत्र चिकित्सक डॉ. पीयर्सन एवं म. प्र. के तत्कालीन मुख्य सचिव श्री के. एस. शर्मा के मध्य पहल करने वाले डॉ. नाहटा।



पहाड़ी प्रदेश सिक्किम के ग्रामीण क्षेत्र में नेत्रहीन बालकों के साथ।

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा विकलांगों के लिये उत्कृष्ट कार्य के लिये डॉ. नाहटा को अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस के अवसर पर 3 दिसम्बर, 1998 को प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



डॉ. नाहटा का साक्षात्कार लेते हुए पत्रकार, अवसर है राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त करने का।



डॉ. नाहटा प्रधानमंत्री से अवार्ड लेते हुए।

दृष्टि विकलांगता के कल्याण हेतु सन् 2001 में राज्य स्तरीय सम्मेलन का भोपाल में भव्य आयोजन डॉ. नाहटा के प्रयासों से सफल हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंहजी ने किया। इस अवसर पर डॉ. नाहटा ने दृष्टिहीन विकलांगों के कल्याण के लिये विशेषज्ञों की भागीदारी को लेकर एक दस्तावेज तैयार किया जिसमें समस्या और सुझाव सुझायें गये और प्रतिवेदन राज्य शासन को प्रस्तुत किया गया।



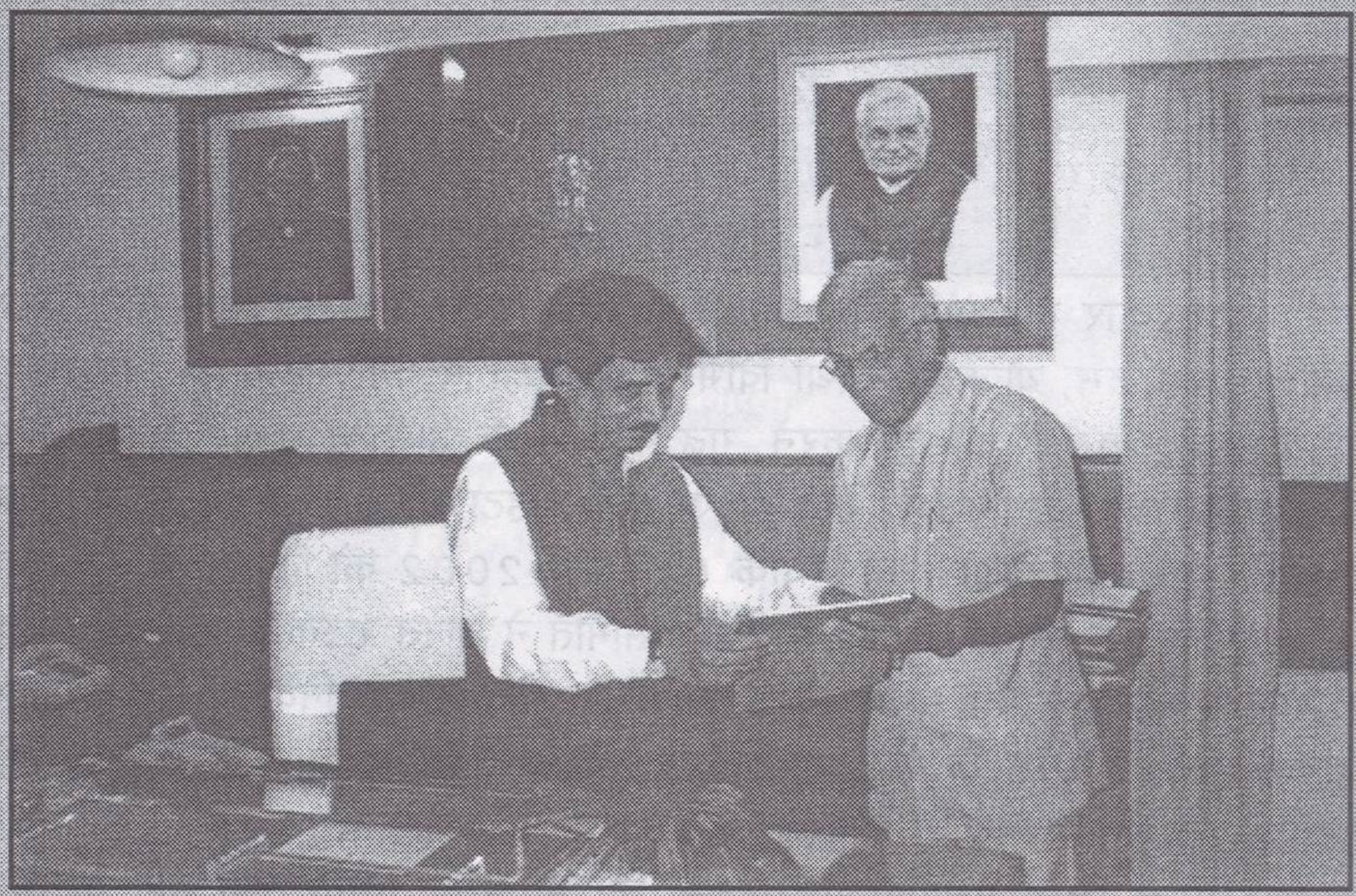
भोपाल में एन.ए.बी. म. प्र. द्वारा आयोजित सेमिनार में तत्कालीन मुख्यमंत्री से चर्चारत डॉ. नाहटा।

भारत सरकार के सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता मंत्रालय ने सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम, योजनाओं तथा विभिन्न संस्थाओं में कठिनाइयों के निराकरण, कमियों तथा अवरोधों को दूर करने, गूढ़ परीक्षण के उपरान्त सुधार, सुझाव तथा परिवर्तन हेतु दिशा निर्धारण के लिये डॉ. एम. सी. नाहटा की अध्यक्षता में छः सदस्यीय उच्चशक्ति प्राप्त समिति का गठन दिनांक 01–03–2002 को किया। डॉ. नाहटा ने इस कार्य को एक चुनौती के रूप में लिया। समिति ने भारत सरकार द्वारा संचालित छः राष्ट्रीय संस्थानों का भ्रमण किया, मानसिक विकलांगता निवारण हेतु स्थापित नेशनल ट्रस्ट, 1995 के पी.डब्ल्यू.डी. एक्ट के अन्तर्गत गठित मुख्य आयुक्त तथा भारतीय पुनर्वसन परिषद के शीर्षस्थ अधिकारियों से विचार विमर्श किया। समिति ने 'आर्टीफिशियल लिम्ब मेन्युफेक्चरींग निगम' का भी भ्रमण किया तथा देश के कुछ स्वयंसेवी संगठनों को भी भेंट दी। डॉ. नाहटा की अध्यक्षता में समिति ने विकलांग व्यक्तियों को ऋण देने वाली राष्ट्रीय विकलांग वित्त विकास निगम का भी सूक्ष्म परीक्षण

किया। सुधार के उपाय सुझाते हुए एक अंतरिम रपट भारत सरकार को दी है इस अपेक्षा के साथ कि सुझाए गए विचारों पर कार्यवाही की जावें।



उच्च शक्ति प्राप्त समिति द्वारा ''एलिम्को'' कानपुर में विचार विनिमय।



उच्च शक्ति प्राप्त समिति के अध्यक्ष डॉ. नाहटा अपनी कमेटी की अन्तरिम रिपोर्ट डॉ. जटियाजी को सौंपते हुए।

विकलांग व्यक्तियों को डॉ. नाहटा प्रारंभ से ही क्षमतावान मानते रहे हैं और उनका विश्वास है कि ये व्यक्ति प्रतिभावान होते हैं उनमें छिपी प्रतिभा को उभारने के लिए हर स्तर पर सदैव तैयार रहते हैं इसी तारतम्य में नेशनल एबलिम्पीक एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित प्रतिस्पर्धा के लिये वो सलाहकार मंडल के सदस्य बनाए गए वहां भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किए तथा मार्गदर्शन किया। आयोजन के अवसर पर उपस्थिति से विकलांग व्यक्ति, क्षेत्र के संगठन तथा आयोजकों का उत्साह वर्धन किया। डॉ. नाहटा के विलक्षण व्यक्तित्व तथा आयोजन क्षमता के परिणाम स्वरूप वर्ष 2003 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लिये भी डॉ. नाहटा को पुनः सलाहकार मंडल में सम्मिलित किया। इस आयोजन में एक सत्र की अध्यक्षता भी डॉ. नाहटा ने की और उस सत्र की संचालन प्रणाली ने उपस्थित समुदाय को आश्चर्यचकित कर दिया। परिणाम स्वरूप अन्य सत्रों में भी उसी प्रणाली का अनुसरण किया गया। जिससे पूरे आयोजन का ग्राफ अत्यधिक ऊपर चला गया। पूरे



एबलिम्पीक एसोसिएशन में पुरस्कार वितरण के समय केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री मुकर्जी के साथ डॉ. नाहटा।

आयोजन पर डॉ. नाहटा जैसे यशस्वी व्यक्ति की छाया दिखती रही। ऐसे समर्पित व्यक्ति के साथ काम करने का अवसर प्राप्त होने से मैं अपने आपको भाग्यशाली मानता हूँ। उन्होंने राष्ट्रीय दृष्टिबाधितार्थ संस्थान देहरादून के सहयोग से नेत्र विशेषज्ञों हेतु नेशनल माड्युल का आयोजन किया जिसमें देश के अनेक नेत्र विशेषज्ञों को आमंत्रित किया। डॉ. नाहटा का पुनर्वास विज्ञान कॉलेज की स्थापना हेतु गठित समिति के सदस्य के रूप में भारत सरकार द्वारा मनोनयन किया गया। इस समिति ने अनेक सुझाव पेश किये।

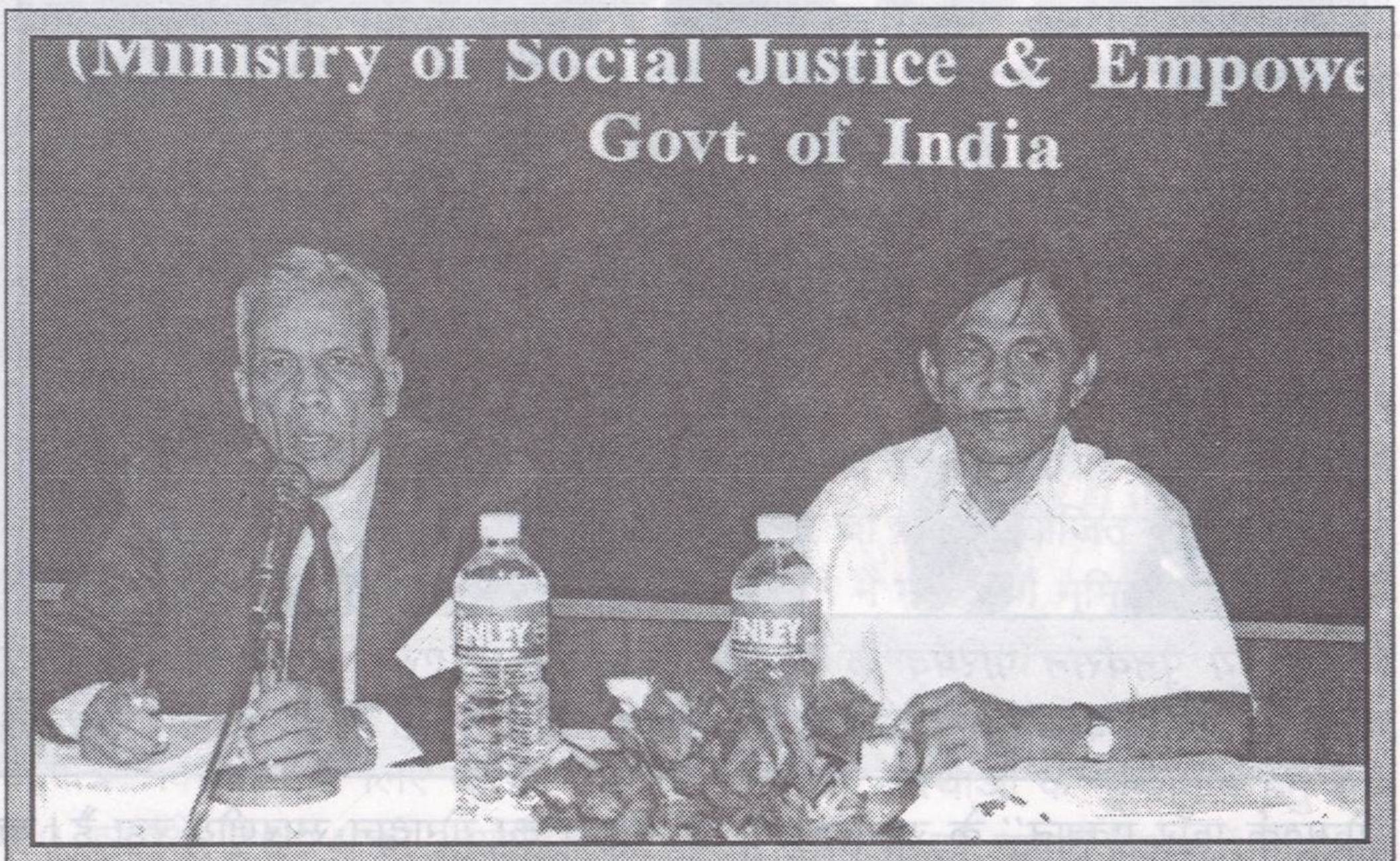
राष्ट्रीय स्तर पर डॉ. नाहटा का योगदान सतत रूप से सराहा जाता है। उनकी क्षमता से लाभ प्राप्त करने हेतु भारत सरकार के सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय पुनर्वसन परिषद का सदस्य मनोनित किया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय पुनर्वसन परिषद के कार्यकारिणी के सदस्य बनाए गए। राष्ट्रीय पुनर्वसन परिषद द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सकों के विकलांगता के क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण आयोजित करने तथा संचालन हेतु गठित अपेक्स को–आर्डिनेशन कमिटी का अध्यक्ष मनोनीत किया। राष्ट्रीय पुनर्वसन परिषद द्वारा दृष्टिबाधितों के शिक्षण–प्रशिक्षण हेतु गठित समिति के अध्यक्ष भी डॉ. नाहटा ही मनोनीत है। तात्पर्य है कि भारतीय पुनर्वसन परिषद प्रत्येक अवसर पर डॉ. नाहटा के सोच, अनुभव, योग्यता तथा अन्य श्रेष्ठताओं का पूरा दोहन कर रही है। शीर्षस्थ समन्वय समिति ने उन्हें अध्यक्ष का महत्वपूर्ण भार सौंपा है। यह समिति प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर तैनात चिकित्सा अधिकारियों के प्रशिक्षण से जुड़े कार्यकलापों को गतिशील बनाए रखने में उल्लेखनीय योगदान देती है। दृष्टिदोष से संबंधित विशेषज्ञ सलाहकार समिति के अध्यक्ष के नाते भी डॉ. नाहटा सक्रिय रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्राधिकृत एवं मूल्यांकरण समिति के सदस्य और पुनर्वसन परिषद की क्रियान्वयन समिति के सदस्य के बतौर भी उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर बहुत अमूल्य योगदान दिया हैं।

डॉ. नाहटा का कार्यक्षेत्र दृष्टि विकलांगता और भौतिक विकलांगता तक ही सीमित नहीं रहा है वे मानसिक विकलांगता के बारे में भी सचेत है। राष्ट्रीय स्तर पर मानसिक विकलांगता को शासन ने भी गंभीरता से लिया है क्योंकि मानसिक विकलांगता सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। इस कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिये राष्ट्रीय ट्रस्ट ने एक वित्त समिति का गठन किया है। इस वित्त समिति में भी डॉ. नाहटा को सदस्य के रूप में आमंत्रित किया है। उन्होंने मानसिक विकलांगता को दूर करने के लिये महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। इसके साथ–साथ भारतीय पुनर्वसन परिषद द्वारा जो राष्ट्रीय कार्यशालाएं समय–समय पर आयोजित होती है उनमें डॉ. नाहटा आमंत्रित किये जाते है और उस कार्यशाला में प्रमुख सत्रों की अध्यक्षता हेतु उनका चयन किया जाता है। नागालैंड की राजधानी कोहिमा में विकलांगों से अधिनियम के तहत् चीफ कमिश्नर द्वारा शिक्षण को प्रोत्साहन हेतु जो कार्यशाला आयोजित की गई थी उसमें डॉ. नाहटा को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

भारत सरकार की एडिप योजना हेतु गठित अस्थायी समन्वय समिति के अध्यक्ष पद को भी डॉ. नाहटा सुशोभित कर रहे हैं। भारत सरकार की सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता मंत्रालय द्वारा जो कार्यक्रम आयोजित किए गए थे उनमें असम के गुहाटी सम्मेलन में डॉ. नाहटा की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही है। विकलांगता के क्षेत्र में राष्ट्रीय अवार्ड देने के लिये जो चयन समिति गठित की गई है उस समिति में भी डॉ. नाहटा सदस्य बतौर अपना महती योगदान दे रहे है। राष्ट्रीय पुनर्वसन परिषद द्वारा आयोजित

कार्यशाला समिट ऑफ माईन्ड में भी डॉ. नाहटा को विशेष रूप से आमंत्रित किया। उस सम्मेलन में भी डॉ. नाहटा को एक सत्र की अध्यक्षता करने का अवसर मिला। सम्मेलन को संबोधित भी किया तथा राष्ट्रीय पुनर्वसन परिषद में सुधार तथा परिवर्तन के सुझाव प्रस्तुत किए।

नई दिल्ली में 9 और 10 अक्टूबर, 2003 को आयोजित "विवाको मिलेनियम



भारतीय पुनर्वसन परिषद द्वारा आयोजित परिचर्चा में डॉ. नाहटा अध्यक्षता करते हुए।



भारतीय पुनर्वसन परिषद में सहयोगियों के साथ डॉ. नाहटा।



भारतीय पुनर्वसन परिषद के अध्यक्ष मेजर एच.पी.एस. अहुवालिया के साथ विचार विमर्श करते हुए डॉ. एम. सी. नाहटा। बीच में बैठे है डॉ. ए. के. मुखर्जी.

फ्रेमवर्क फॉर एक्शन'' के सम्मेलन में डॉ. नाहटा का योगदान स्मरणीय रहा है। यह सम्मेलन भारत सरकार के सामाजिक न्याय मंत्रालय द्वारा आयोजित किया गया था। वे एक सत्र में सह–अध्यक्ष बनाए गए थे जिसमें विकलांगता की रोकथाम और विकलांगता के पूर्वाभास से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई थी।

इस सम्मेलन में अलग–अलग विषयों पर नौ सत्रों का आयोजन किया गया था। इन विषयों में महिलाओं की विकलांगता, तकनीकी और वोकेशनल प्रशिक्षण की जानकारी उपलब्ध कराना, सहायता के तंत्र के बारे में जानकारी देना और जनता को संगठित करना शरीक था। इस सम्मेलन में शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक स्वायत्तता, रोजगार, बंधनमुक्त पर्यावरण आदि मसलों पर विस्तृत चर्चा हुई थी। सम्मेलन के इस सत्र का मुख्य विषय बंधनमुक्त और अधिकार संपन्न समाज का निर्माण था, विशेष रूप से एशिया और प्रशांत क्षेत्र में विकलांगों की पुनर्स्थापना के लिए रूपरेखा तैयार की गई थी। यह संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक परिषद के तत्वाधान में तैयार किया गया था। डॉ. नाहटा ने इस संबंध में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए थे।

डॉ. नाहटा एक समिति के सदस्य बनाए गए थे जिसमें पुनर्वास संस्थान के निर्देशक की नियुक्ति के लिए नियमों को अंतिम रूप देना था, यह संस्थान उड़ीसा के कटक क्षेत्र

में ''निरतार'' में स्थित है, और भारत सरकार का प्रतिष्ठान है।

विशेष रूप से विकलांगों पर आयोजित राज्य के कमिश्नरों (विकलांग) की प्रांतीय बैठक जो बंगलौर में हुई थी जिसमें 11 राज्यों के प्रतिनिधि शुमार हुए थे इसमें विशेष रूप से डॉ. नाहटा आमंत्रित किए गए थे। यह बैठक भारत सरकार के चीफ कमिश्नर द्वारा आहूत की गई थी। इस तरह पी.डब्ल्यू.डी. एक्ट के तहत् राज्य के कमिश्नरों के तीसरे वार्षिक सम्मेलन में जो 3 फरवरी, 2004 को दिल्ली में आयोजित हुआ था, डॉ. नाहटा को पहले और प्रातः कालीन सत्र की अध्यक्षता हेतु विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था।

भारत की पुनर्वास परिषद् द्वारा आयोजित 'समिट ऑफ द माइंड' 7 से 9 मार्च, 2003 के नई दिल्ली के विकलांग सम्मेलन में डॉ. नाहटा आदरणीय अतिथि के रूप में आमंत्रित किए गए। इस सम्मेलन में सारे देश के सभी स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

भारत की पुनर्वास परिषद द्वारा पुनर्वास प्रोफेशनल हेतु जो आचार संहिता है उसके विकास हेतु नई दिल्ली में 29 जनवरी, 2004 को जो चर्चा आयोजित की गई थी, डॉ. नाहटा ने आचार संहिता को अंतिम रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। नई दिल्ली में 24, 25 फरवरी, 2003 को पुनर्वास वैज्ञानिकों के राष्ट्रीय वर्कशॉप में भी डॉ. नाहटा आमंत्रित थे। भारतीय पुनर्वास परिषद द्वारा आयोजित वर्कशॉप जो कि आमंत्रित विशेषज्ञों के लिए थी और जो कि विकलांग संस्थाओं के मूल्यांकन हेतु 9–10 फरवरी, 2004 को आयोजित की गई थी उसमें भी डॉ. नाहटा विशेषज्ञों में शुमार किए गए थे। इस तरह नेशनल ट्रस्ट एक्ट 1999 के तहत गठित नेशनल ट्रस्ट के अध्यक्ष की नियुक्ति के लिए पैनल तैयार करने वाली समिति में भी डॉ. नाहटा सदस्य नियुक्त किए गए हैं। यह बहुत ही प्रतिष्ठित संस्था है।

डॉ. नाहटा द्वारा दिए गए सुझावों को सम्मेलन की रपट में सम्मिलित किया गया, डॉ. नाहटा के विचार सुनने के बाद वे चर्चा के केन्द्र बिन्दु तथा क्षेत्र के लोगों का मत बना की डॉ. नाहटा ने विश्वस्तरीय एतिहासिक पहल कर दी है। डॉ. नाहटा का मत है कि भारत सरकार द्वारा संचालित एडिप योजना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस योजना की कार्यप्रणाली में परिवर्तन से प्रत्येक विकलांग व्यक्ति को आवश्यक उपकरण दिए जाने चाहिए जो कि बगैर कठिनाई से विकलांग व्यक्ति को प्राप्त हो सके। इस दिशा में डॉ. नाहटा अत्यधिक सक्रियता के साथ परिवर्तन तथा सुधार के प्रयास कर रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अमेरिकी अलाभकारी संगठन, ''वालेन्टरी आई सर्जन्स इन्टरनेशनल'' के नाम से प्रख्यात है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करता है, उसके भारत में चलाए जाने वाले कार्यक्रमों हेतु अवैतनिक कार्यक्रम अधिकारी के रूप में डॉ. नाहटा कार्यरत है। अमेरिका के ही दो अन्य स्वयंसेवी संगठनों

दृष्टि विकलांग राष्ट्रीय संगठन तथा इनफोकस के चिकित्सीय सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में भी वो सक्रिय रहे हैं।

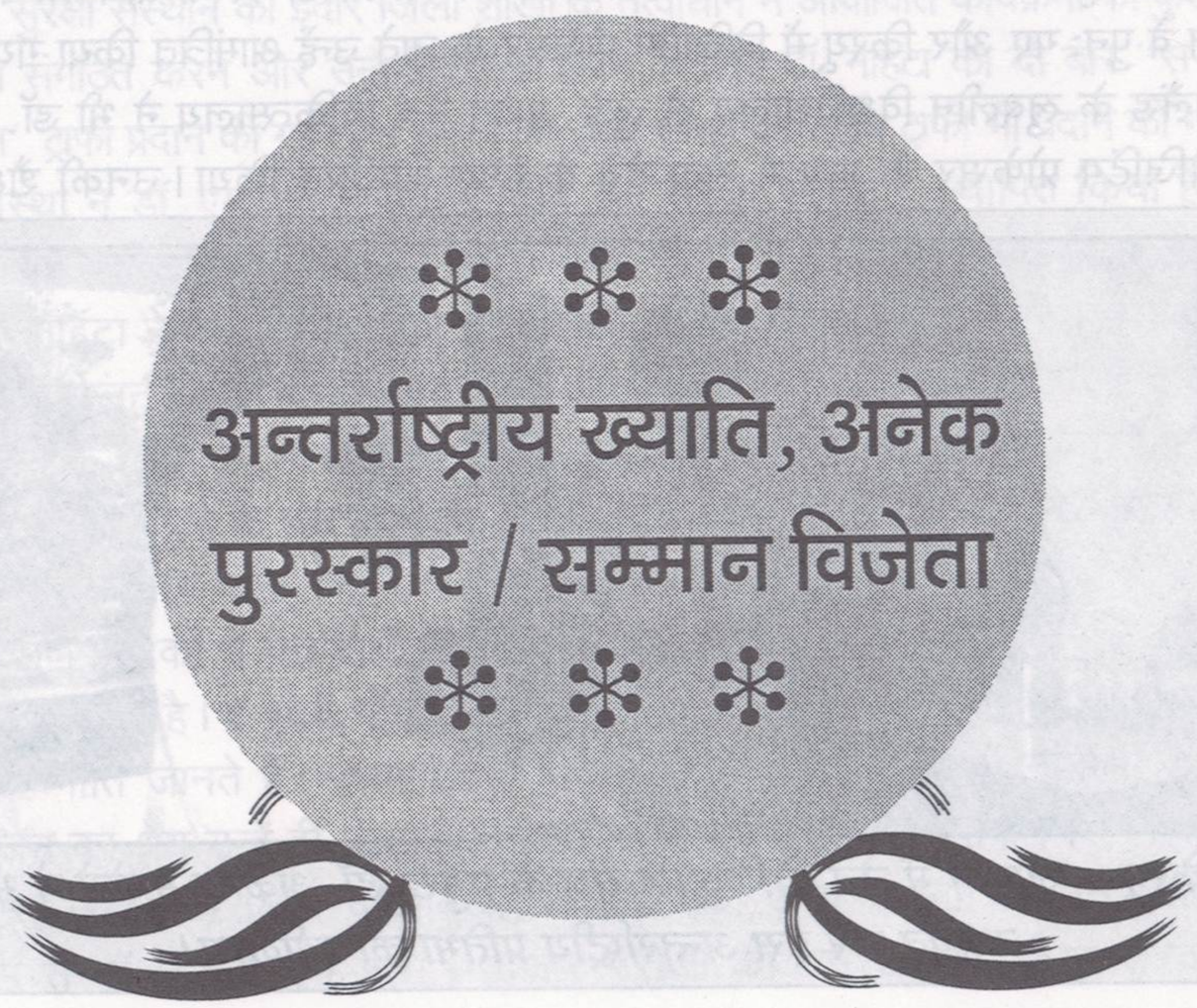
जब मध्यप्रदेश सरकार द्वारा विकेन्द्रीयकरण के तहत् जिला सरकारों का गठन किया गया तब डॉ. नाहटा को जिला योजना समिति झाबुआ में सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया। जहॉ उन्होंने बैठक में भाग लेते हुए बहुउद्देश्यीय समन्वित विकास योजना के तहत् चार सूत्रीय योजना प्रस्तुत की जिसमें चलित स्कूल, नेत्रहीनों की घर पहुँच सेवा, खादी ग्रामोद्योग के तहत् कुटीर उद्योगों की स्थापना और अंधत्व निवारण कार्यक्रम शरीक थे।

डॉ. नाहटा ''नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड'' के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी पिछले दिनों सर्वानुमति से चुने गए। इस राष्ट्रीय स्वयंसेवी संगठन ने दिए जाने वाले महत्वपूर्ण रूस्तम अल्पाई वाला अवार्ड की चयन समिति में उन्हें सदस्य मनोनीत किया तथा दृष्टिहीनों के कल्याण हेतु कार्य करने के लिए मध्यप्रदेश सहित सात राज्यों का प्रभारी बनाया है। डॉ. नाहटा ने विकलांगता के क्षेत्र में समस्याओं के निराकरण तथा जानकारी उपलब्ध कराने हेतु पूरे देश के लिए हेल्पलाईन बनाने की आवश्यकता प्रतिपादित की है। डॉ. नाहटा जैसे चिन्तक मैंने आज तक नहीं देखे, जिस किसी भी वस्तु से विकलांगता होने का संदेह भी हो उसके निवारण हेतु डॉ. नाहटा आगे आ जाते है। डॉ. नाहटा का मत है कि पर्याप्त पीने के पानी की अनउपलब्धता तथा दूषित होने से भी अनेक बीमारियाँ हो सकती है जो विकलांगता का कारण बनने में सहायक हो जाती है। अत: पानी की समस्या के निराकरण हेतु डॉ. नाहटा ने जिहाद छेड़ रखा है।

विकलांगता तथा विकलांग व्यक्ति की समस्या के निवारण हेतु डॉ. नाहटा एक ऐसे व्यक्ति का नाम है जो प्रत्येक अवसर का उपयोग करते है। पिछले चुनाव के समय राजनीतिक दलों द्वारा जारी किए गए घोषणा पत्र में भी विकलांग वर्ग की उपेक्षा पर डॉ. नाहटा ने तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त कर राजनेताओं को संवेदनशील बनाने का एतिहासिक प्रयास किया था। उसी प्रकार विकलांगता के क्षेत्र में कार्यरत् संस्थाओं को दिए जाने वाले अनुदान की कम मात्रा तथा वितरण में अनावश्यक देरी से दुखी होकर डॉ. नाहटा ने समस्या के निराकरण हेतु एक कठोर पत्र मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्य सचिव को लिखने का साहस किया था ऐसे उदाहरण ढूंढने से भी शायद ही देखने को मिले।

डॉ. नाहटा अपना शेष जीवन विकलांगता की समस्या के निराकरण हेतु लगाना चाहते है और सतत् प्रयत्नशील भी है। जीवन के इस मोड़ पर 74 वर्षीय इस नौजवान पर न तो आयु का प्रभाव हावी हुआ है न ही कोई अन्य बात वो आज भी उतने ही स्फूर्तिवान है जितने की 40 वर्ष पूर्व थे। ■

छटा - अध्याय



अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति, अनेक पुरस्कार / सम्मान विजेता

डॉ. माणकचंद नाहटा ने चार दशकों के चिकित्सीय सेवाकाल और उसके पश्चात् भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक यात्राएँ की है जिसका प्रारंभ 1970 से हो गया था। जब वे इंग्लैंड में विशेष प्रशिक्षण हेतु गए थे। विदेश यात्राओं का सिलसिला 1970 से आज तक भी जारी है। उन्होंने ट्युनिशिया, हॉगकॉग, सिंगापुर, मलेशिया, इंग्लैंड, बैंकाक, हालैन्ड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, जापान, पोलैंड, जेकोस्लावाकिया सहित अनेक यूरोपीय देशों की यात्रा कई बार की और अपने शोधपत्रों का वाचन किया। लेजर, रेटिना, कृत्रिम लेंस प्रत्यारोपण व इनसे जुड़े अनेक विषय डॉ. नाहटा के प्रिय विषय रहे हैं, जिन पर काम करने के लिए उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली हैं, और देश–विदेश में सम्मानित भी किया गया है।

डॉ. नाहटा को 1970–71 में ही रेटिना शल्य क्रिया के उच्च प्रशिक्षण हेतु कोलम्बो प्लान के तहत् चयन किया गया था। इसके बाद तो एक सिलसिला सा शुरू हुआ और उनका शोध पत्र जो इंटराआक्यूलर लेंस प्रत्यारोपण से संबंधित था, यह नेत्रों के क्षेत्र में विश्व समुदाय द्वारा बेहद सराहा गया। यह शोध पत्र उन्होंने, एफ्रों–एशियन कांग्रेस, जो 1980 में ट्युनिशिया में आयोजित की गई थी, में वाचन किया था। उसके बाद तो भारत में लेंस प्रत्यारोपण की प्रथा चल पड़ी और अनेक नेत्र विशेषज्ञों ने उनसे प्रेरणा लेकर प्रत्यारोपण करना शुरू कर दिया। एक वर्ष बाद ही 1981 में मलेशिया के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक सत्र की अध्यक्षता हेतु उन्हें आमंत्रित किया गया जहाँ उन्होंने लेजर और रेटिना को लेकर अपने विचार व्यक्त किए। जापान के नगोया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. नाहटा ने मोतियाबिन्द की शल्य क्रिया और कृत्रिम लेन्स प्रत्यारोपण और रिफ्ररेक्टिव केरेटोप्लास्टी पर भी शोध पत्र पढ़ा था। जापान वे पुनः गए और किरयू में विजिटिंग प्रोफेसर के नाते उन्हें आमंत्रित किया गया।

पोलैंड के लुबलीन विश्वविद्यालय से जुड़े प्रथम नेत्र चिकित्सालय ने भी डॉ. नाहटा को विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में सेवा देने के लिए आमंत्रित किया। उनकी शैक्षणिक



किरपू – जापान में नेत्र चिकित्सक संघ के प्रमुख डॉ. अकीरा ममोसे ने भी स्वागत कर इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिभा को स्वीकारा।

कार्यशैली से चिकित्सा के छात्र अत्यधिक प्रभावित थे। प्राग, बर्लिन आदि अनेक विश्व स्तरीय संस्थानों में डॉ. नाहटा की दक्षता स्वयंसिद्ध हुई। पोलैंड यात्रा के समय पोजनीन – पोलैंड में आयोजित 22वें रेटीनालाजीकम सीम्पोजियम में विशेष रूप से आमंत्रित किए गए तथा मई 1995 में 21वीं यूरोपीयन कार्निया पर आयोजित सम्मेलन में भी आपको विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

अल्पदृष्टि (लो–विजन) पर 1999 में न्यूयार्क, अमेरिका में जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ था, उसमें डॉ. नाहटा आमंत्रित किए गए थे। इसी तर्ज पर उनके प्रयासों की वजह से अल्पदृष्टि पर इंदौर में 2000 में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया, जिसमें विश्व प्रसिद्ध हस्तियों ने भाग लिया था। डॉ. नाहटा ने म. प्र. के विदिशा जिले के गंजबासौदा ब्लाक में एक विशेष उपकरण ''फोकोमीटर'' द्वारा चश्में का नम्बर निकालने का कार्य किया। उस ब्लाक की लगभग 3 लाख जनसंख्या को उससे लाभ मिला तथा निःशुल्क चश्में भी उपलब्ध कराए गए।

डॉ. नाहटा को उनकी अनुकरणीय कर्तव्य परायणता, निष्ठा एवं प्रशासनिक दक्षता के लिए अनेक संस्थाओं और शासन द्वारा राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कारों / सम्मानों से नवाजा गया। रेटिना के डिटेचमेन्ट पर श्रेष्ठतम क्लिनिकल कार्य करने के लिए मध्यप्रदेश नेत्र चिकित्सक संघ द्वारा 1976 में डॉ. नाहटा, डॉ. जी. एस. वागले स्वर्ण पदक से नवाजे गए।

राष्ट्रीय परिदृश्य पर नेत्र रोगों के उन्मूलन हेतु डॉ. नाहटा प्रारंभ से ही सक्रिय रहे हैं। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा संस्थान को इंदौर जिला शाखा के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रमों को कुशलतम रूप से संगठित करने और उन्हें विकसित करने के लिए डॉ. नाहटा को दो बार ''सर जॉन विल्सन'' ट्रापी प्रदान की गई। इस संस्था की इंदौर शाखा को राष्ट्रीय ट्रापी भी प्रदान की गई थी। इस संस्था ने डॉ. एम. सी. नाहटा राष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा पुरस्कार स्थापित किया है। क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को प्रतिवर्ष 51000–00 की राशि तथा सम्मानपत्र दिया जायेगा।

डॉ. नाहटा ने अखिल भारतीय नेत्र संस्थान के तत्वावधान में पुणे में 1984 में जो वार्षिक सम्मेलन (मायोपिया) अल्पदृष्टि पर आयोजित किया था उसके लिए उन्हें कुशलतम आयोजन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भूरि–भूरि प्रशंसा मिली थी जो कि किसी पुरस्कार से कम नहीं है। पुणे के इस सम्मेलन में देश विदेश के अनेक विशेषज्ञों ने भाग लिया था और अपने विचार व्यक्त किए थे।

ग्रामीण इलाकों में नेत्र रोगों के निदान संबंधी शोध का लाभ पहुँचाना डॉ. नाहटा का प्रिय विषय रहा है। वे स्वयं गाँव के है, और गाँव में नेत्र इलाज की आवश्यकताओं को भली – भाँति जानते हैं। मध्यप्रदेश व राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में ग्रामीण शिविर के आयोजन का श्रेय उन्हें ही जाता है। मध्यप्रदेश में गंजबासौदा, अशोकनगर, भीकनगाँव, मंदसौर, जावरा, रतलाम व झाबुआ, थांदला तथा अन्य स्थानों पर नेत्र शिविरों के माध्यम से डॉ. नाहटा ने हजारों – हजार मरीजों को नेत्र उपचार मुहैया करवाया है।

ग्रामीण इलाकों में शिविरों में असाधारण कार्य के लिए डॉ. नाहटा ने लोकप्रियता के नए मापदंड स्थापित किए है। इसके उपलक्ष्य में जनता ने भावविभोर होकर तत्कालीन समय में डॉ. नाहटा का 22 स्थानों पर नागरिक अभिनन्दन किया गया था जो चिकित्सा जगत में एक रिकार्ड है, गंजबासौदा के नेत्र शिविरों की रजत जयंती के अवसर पर डॉ.



सेवा के लगातार 25 वर्ष पूर्ण होने पर गजंबासौदा नागरिक समिति की ओर से सम्मान म. प्र. के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. भाई महावीर से प्राप्त करते हुए डॉ. नाहटा।



नेत्र शिविर नागरिक समिति गजंबासौदा के कार्यक्रम में डॉ. नाहटा प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल के साथ।

नाहटा का सार्वजनिक अभिनंदन अविस्मरणीय है, जिसके साक्षी थे म. प्र. के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. भाई महावीर।

दृष्टिदोष के लिए डॉ. नाहटा सतत रूप से प्रारंभ से ही कार्यरत हैं। इसी तरह विकलांगता को मानव जीवन में बाधक न बनने देने के लिए भी वे समर्पित हैं। इसी क्षेत्र में उनके प्रयासों को राष्ट्रीय सम्मान दिया गया। डॉ. नाहटा के जीवन में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने का गौरवान्वित क्षण तब आया जब उन्हें भारत सरकार के सामाजिक न्याय मंत्रालय द्वारा विकलांगता के क्षेत्र में उनका चयन किया गया। तद्नुसार 3 दिसम्बर, 1998 को भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने डॉ. नाहटा को इस राष्ट्रीय अवार्ड से अलंकृत किया। इस अवार्ड को प्राप्त करने वाले संभवतः डॉ. नाहटा भारत के पहले नेत्र चिकित्सक हैं। ■

सातवां - अध्याय

उपसंहार : एक अनमोल

माणिक डॉ. नाहटा

डॉ. माणकचंद नाहटा के व्यक्तिगत एवं कृतित्व के संदर्भ में प्रसिद्ध ऑग्लकवि टेनिसन की एक कविता ''यूलेसिस'' की वो पंक्तियाँ स्वाभाविक तौर पर मन क्षितिज पर उभरती है। यूलेसिस यूनान के प्रसिद्ध यौद्धा थे और आजीवन यात्रा करते रहे। सफलता ने उन्हें कभी बाँधे नहीं रखा। डॉ. नाहटा के जीवन में भी सफलता ठहराव नहीं है। सकारात्मक आशावाद उनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। एक कार्य की पूर्णता के पश्चात् वे दूसरे काम में उसी तन्मयता से जुट जाते हैं। इसे ही दर्शन में ईमानदारी, पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा की संज्ञा दी गई है।

कर्तव्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, ईमानदारी, लगनशीलता ये वो गुण हैं जो डॉ. नाहटा को विरासत में मिले हैं। महत्वपूर्ण यह है कि वे इन गुणों को संजोकर रखना चाहते हैं। ये ही गुण उनकी सफलता के मूलमंत्र रहे हैं, जो वे युवा पीढ़ी को देना चाहते हैं। जब उनका जन्म हुआ था तब बरबस ही उनकी माता ने कहा था, कि 'मैं ऐसा पुत्र चाहती हूँ जो रत्नों में और मनुष्यों में माणक के सदृश्य चमकीला हो' इसीलिए उनके नामकरण के पश्चात् सभी ने माणक ही उनके नाम के लिए चुना। समाज इस बात का साक्षी है कि उन्होंने इस नाम के अनुरूप ही आजीवन काम किया है।

रामपुरा जैसे गाँव से अपने जीवन की यात्रा प्रारंभ करने वाले डॉ. माणकचंद नाहटा ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक चिकित्सा, विकलांगता और अन्य क्षेत्रों में काम कर यह दर्शाया है कि परिश्रम निरर्थक नहीं जाता। इस नाते ही डॉ. नाहटा कर्मयोगी है, और आज भी वे अनेक स्तरों पर कार्यरत हैं।

चिकित्सा जगत में डॉ. नाहटा के युग में और अब भारी बदलाव आ रहा है। इस बदलाव से वे भली–भांति परिचित हैं। आज मरीज और चिकित्सक के बीच विश्वास की एक बहुत बड़ी खाई हो चुकी है जो पहले नहीं थी। जिस युग के डॉ. नाहटा साक्षी रहे हैं उस युग में चिकित्सा में वे ही लोग जाते थे जिनका मिशन सेवा था। आज ये मूल्य पूरी तरह बदल रहे हैं। आज चिकित्सा, सेवा नहीं रह गया है, एक पेशेवर व्यवसाय बन चुका है, जिसमें धनोर्पाजन मूल लक्ष्य रहा गया है। आज जब एक मरीज चिकित्सक के पास जाता है तो इस अहसास के साथ जाता है कि वो ठगा जाने वाला हैं। जो मरीज चिकित्सा का परामर्श शुल्क नहीं दे सकते, वे चिकित्सा से लगभग वंचित ही हैं। यह चिकित्सकों के लिए गंभीर चुनौती है कि वे मरीज के विश्वास को किस तरह बहाल कर सकते हैं। इसके लिए एक और सामाजिक आंदोलन की जरूरत है और ऐसे आंदोलन में विश्वास है डॉ. नाहटा जैसे पुरूष अग्रणी रहकर अपना योगदान दे सकते हैं। वे निजी स्तर पर और सीमित स्त्रोतों के साथ ये काम बखूबी कर रहे हैं, परन्तु सामाजिक स्तर पर इस जागृति की आज जरूरत है कि मरीज जिस चिकित्सक के हाथ में अपने आप को सौंप रहा है वों अन्तर मन से उसे सम्मान कि दृष्टि से नहीं देखता है।

डॉ. नाहटा बहुत ही सन्तुलित चिकित्सक हैं और दवाओं के माध्यम से तुरन्त

चमत्कार दिखाने के लिए वे कभी रोगी का उपचार नहीं करते। आज चिकित्सकों में एक होड़ सी लगी है मरीज को ''स्टीराइड्स'' देकर तुरन्त ठीक किया जाए। वे औषधियों के दुरूपयोग के खिलाफ हैं। वे कभी भी ''फेन्सी ड्रग्स'' देकर मरीज को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करते।

जिस तरह चिकित्सीय जीवन में संयमी हैं, उसी तरह वे नीजि जीवन में भी संयमी हैं उनके लिए धर्म का अर्थ ही मानव जीवन में संयमी रहना हैं। अपने पारिवारिक जीवन में, सामाजिक जीवन में, राष्ट्रीय चिंतन में वे संयम से ही रहने का आदर करते हैं। स्वयं भी यही करते हैं और चाहते हैं। मानवीय संवेदनाएँ है इसीलिए अच्छे चिकित्सक हैं और अच्छा चिकित्सक ही समाज को कुछ दे सकता है। उनका परिवार है, बच्चे हैं नाती पोते हैं, सामाजिक जिम्मेदारीयाँ है और उनके बीच उनका अपना व्यक्तित्व है और किया गया ढेर सारा काम जो अपनी कहानी खुद कहता है। वाचा तपस्या एक ऐसा गुण है जो डॉ. नाहटा से सीखा जा सकता है। डॉ. नाहटा वर्तमान में विकलांगता जैसे मानवीय क्षेत्र में स्वयंसेवी संगठनों तथा भारत सरकार द्वारा गठित विभिन्न संस्थाओं के कार्यों तथा कार्यप्रणाली से संतुष्ट नहीं है और समय–समय पर उच्च स्तर पर विराजित व्यक्तियों, प्रमुखों को अपने विचारों से अवगत कराते रहते हैं। संवेदनशीलता का अभाव तथा व्यवसायीकरण का वातावरण भी उन्हें विचलित करता रहता है। वो उस रास्ते को ढूँढ रहे हैं जिस पर चलने से विकलांगता के प्रतिशत में कमी हो, विकलांगों की शिक्षा तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था हो, पुनर्वसन तथा कल्याण हो ताकि विकलांग व्यक्ति आत्मनिर्भर होकर, ससम्मान अपना जीवन यापन कर सकें।

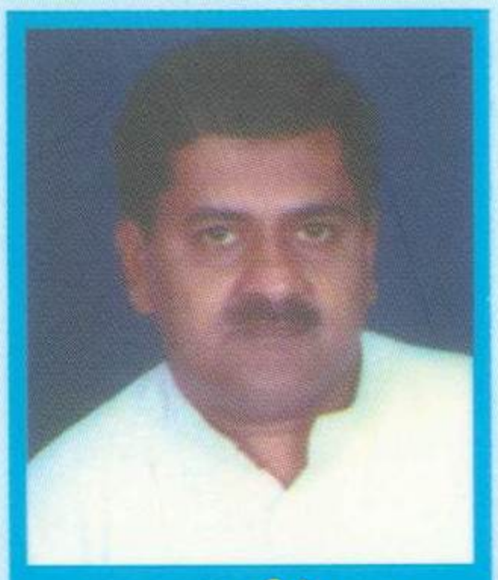
इन मूल्यों को प्राप्त करने हेतु डॉ. नाहटा अथक परिश्रम कर रहे हैं – हम उनकी सफलता की कामना करते हुए उनके जन्मदिन 24 जुलाई पर उन्हें ढेर सारी बधाइयाँ और शतायु होने की कामना करते हैं। ■



अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण मंदिर के प. पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज श्रीमान कनुभाई टेलर का बहुमान करते हुए द्रश्यमान है।



प्रसिद्ध कथाकार प. पूज्य मोरारीबापु श्रीमान कनुभाई टेलर का सन्मान करते हुए संस्था को एक लाख रूपयो का भेट करते हुए द्रश्यमान है।



कनुभाई टेलर

लेखक परिचय

इस पुस्तक के लेखक श्री कनुभाई टेलर का जन्म १७ मई १९५६ को हुआ। असाधारण व्यक्तित्व के धनी इस व्यक्ति का जन्म सूरत के निकट मगदल्ला गाँव के एक अति साधारण परिवार में हुआ। जन्म से ही पोलियो ने उनके दोनों पांवों की बलि लेकर उन्हें विकलांगों की श्रेणी में बैठा दिया। किंतु विकलांगता का जहर स्वंय पीकर इस व्यक्ति ने दूसरे विकलांगों को अमृत दान करने के भरपूर प्रयत्न किये और अपने प्रयत्नों में अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति व लगन से सफलता प्राप्त की।

उच्च शिक्षा पूर्ण करने के पहले ही संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आपका चयन भारतीय प्रतिनिधि के रूप में होकर आपको 'जीनेवा' जाने का अवसर मिला जहाँ उनकी प्रभावशाली सहभागिता के परिणाम स्वररूप उन्हें 12 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल में सम्मिलित किया गया जो कि विदेशों में विकलांगों की समस्याओं के अध्ययन हेतु गयाथा। समस्याओं और समाधान खोजने के लिये भेजा गया था।

श्री कनुभाई ने दोनों हाथों से विकलांग किन्तु मधुरभाषी और मधुर स्मित बिखेरने वाली हंसाबेन से विवाह कर विकलांगों के आपसी सहयोग का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया तथा आज दो स्वस्थ व सुन्दर बच्चों के साथ सुखी परिवारिक जीवन जी रहे हैं।

युं तो कनुभाई करीब बीस पच्चीस संस्थाओं से जुड़े है तथा उन्हें मार्गदर्शन व नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। किन्तु एक आदर्श संस्था को अस्तित्व में लाने तथा एक आदर्श बनाने का संपूर्ण श्रेय इन्हें जाता हैं। आज वहां लगभग पांच सौ विकलांग बच्चे पहली से दसवीं तक अध्ययन करते है तथा विशेष व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्राप्त करते है तथा भविष्य में जीविका अर्जन कर सकें।

युं तो कनुभाई के विचारों, कार्यों तथा प्रयत्नो को अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए हैं किन्तु कुछ विशेष पुरस्कार का उल्लेख आवश्यक है। कनुभाई को १९७९ में महारानी एलिजाबेथ विकलांग फाउण्डेशन इंग्लैंड द्वारा सम्मानित किया गया। आपको सन् १९९२ में अन्तर्राष्ट्रीय जुनियर चेम्बर इन्टरनेशनल (J.C.I.) ने मियामी में आयोजित ९२ देशों के पांच हजार प्रतिनिधियों के बीच विश्व युवा सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार विश्वभर में सिर्फ १० व्यक्तियों को चुनकर दिया जाता है। कनुभाई भारत के एकमात्र व्यक्ति थे जिन्हें पुरस्कार दिया गया। गुजरात सरकार द्वारा १९९० में रोजगार तथा प्रशिक्षण देने हेतु बेस्ट एंम्पालयमेंट पुरस्कार से नवाजा गया। १९९० में ही "दी आउटस्टेन्डींग अचीवमेन्ट इन्टरनेशनल अवार्ड" वाशिंग्टन डी.सी. में वर्ल्ड हेंडीकैप आर्गनाईजेशन के अध्यक्ष द्वारा प्रदत्त। इसी समय व्हाईट हाउस में श्री अब्राह्म लिंकन की कुर्सी पर बैठा कर आपको सम्मानित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन लायन्स, रोटरी, जायन्टस व जुनियर चेम्बर द्वारा अनेकों पुरस्कारों से आपको सम्मानित किया गया। श्रीमती सोनीया गांधी द्वारा भी श्री कनुभाई १९९४ में सम्मानित किये गये। विश्व विकलांग दिवस ३ सितम्बर १९९७ को आपको राष्ट्रीय पुरस्कार से अलंकृत किया गया जो दिल्ली के विज्ञान भवन में भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायण द्वारा प्रधानमंत्री श्री आय. के. गुजराल की गरिमामय उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अन्तर्गत भारतीय पुनर्वसन परिषद तथा नेशनल ट्रस्ट एवं अनेक समितियों के आप महत्वपूर्ण सदस्य बनाये गये।

विकलांगता के क्षेत्र में अनेक प्रशंसनीय गतिविधियों का संचालन १९७६ से आप श्रेष्ठतापूर्वक कर रहे हैं जो आज भी सतत है। इनकी अपनी संस्था डिसेबल वेलफेयर ट्रस्ट इस क्षेत्र में भील का पत्थर सिद्ध हुई है तथा आज सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

इस प्रकार कनुभाई ने जहां चाह वहां राह वाली उक्ति को चरितार्थ ही नहीं किया किंतु कांटो भरी राह पर स्वयं पहले चल कर कांटों व बाधाओं को दूर किया ताकि अन्य विकलांगों की राह आसान हो सके।

Printed at PROGRESSIVE, Ph.: +91-261-2631700